RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 March, 2021

अंक – 09 (मासिक) वर्ष – 16 मार्च, 2021 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

महिला विशेषांक

महिमा, मान और मर्यादा की महिला शक्ति

श्री माहेश्वरी मेलापक
वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2021
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us
@ www.srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-09 मार्च 2021 वर्ष-16

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
गिरिजा चितलांगिया (सारड़ा), नेपाल

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

(8 मार्च)

जगत् की समस्त नारी शक्ति
को हार्दिक मंगलकामनाऐं
एवं नमन...

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

पार्वती जी के श्रीमुख से 'स्त्री धर्म'

विचार क्रान्ति

भगवान शिव और पार्वती के दाम्पत्य के चिर आनन्दमय होने का रहस्य पति-पत्नी के निरन्तर परस्पर संवाद में छुपा है। दोनों के पास जगत के असंख्य काम हैं और गृहस्थी के नियमित दायित्व भी मगर जब कभी अवकाश मिलता है, महादेव और महादेवी आपसी वार्तालाप में लीन हो जाते हैं। हमारे धर्मशास्त्र दोनों की चर्चाओं से जगमग हैं, जिनमें जीव, जगत और जगदीश से लेकर मनुष्य जीवन की सफलता, सार्थकता के लिए प्रश्नोत्तर के माध्यम से कभी शिवजी तो पार्वतीजी सुंदर मार्गदर्शन करते हैं।

महाभारत के अनुशासन पर्व में दोनों का ऐसा ही एक सुंदर संवाद है जिसके कुल 23 अध्यायों में 22 में शिवजी के उपदेश हैं और अंतिम में पार्वती का। अद्भुत है कि पत्नी के अनेक प्रश्नों का उत्तर देने के बाद शिव की इच्छा हुई कि वे पार्वती के मुख से भी कुछ सुने। संकेत है जहाँ 'पत्नी की भी सुनी जाती है' वह दाम्पत्य सुखमय रहता है।

शिव ने कहा, 'देवी! स्त्रियाँ ही स्त्रियों की परम गति है। स्त्री की कही बात को स्त्रियाँ अधिक महत्व देती है, अतः स्त्री धर्म क्या है, इस बारे में तुम मुझे बताओ। निश्चित ही तुम्हारे द्वारा कहा गया स्त्री धर्म विशेष गुणवान होगा और लोक में प्रमाण माना जाएगा।'

और तब भगवान के आग्रह पर भगवती ने अपने श्रीमुख से स्त्री धर्म बताया। कुल 26 श्लोकों में व्यक्त यह स्त्री धर्म प्रायः पति की सेवा और पति को ही सर्वस्व मानने पर केंद्रित है लेकिन इसके जिन दो श्लोकों में 'सबकी सेवा' से पातिव्रतधर्म के पालन का फल बताया गया है, वे सबसे कीमती है।

इनका भावार्थ है, 'जो स्त्री उत्तम गुणों से युक्त होकर सदा सास-ससुर की सेवा में संलग्न रहती है, जो अपने माता-पिता के प्रति सदा उत्तम भक्तिभाव रखती है वह साक्षात तपस्यारूपी धन से संपन्न मानी गई है। जो स्त्री ब्राह्मणों, दुर्बलों, अनाथों, दीनों और निर्धनों को अन्न दान करती है, वह पातिव्रतधर्म के पालन का फल पाती है।'

साधो! पार्वती जी के कथन का सार यह है कि संसार में स्त्री सदैव सेवा की पर्याय है। उसका सारा जीवन सेवा में समर्पित हो जाता है और सबके लिए जीकर ही वह ऊर्जा पाती रहती है। वह अनथक परिश्रम करती है फिर भी मुस्कुराती रहती है। सबकी चिंता, सबकी सेवा, सब पर दया, सबका सहयोग, सबको दान यही स्त्री का मूल स्वभाव है। यही उसका धर्म। मार्च महिलाओं को समर्पित मास है। इसी में महिला दिवस भी है और महाशिवरात्रि भी। तब इस प्रसङ्ग के प्रतीकों से पुरुषों को समझ लेना चाहिए कि 'स्त्रियों की भी सुने' और स्त्रियों को अपने उसी धर्म का अनुसरण करना चाहिए जो साक्षात भगवती ने कहा है। इससे महिला सशक्तिकरण तो फलेगा ही घर, गृहस्थी और समाज सब मङ्गलमय हो जाएंगे।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

आद्य शक्ति, पूरी दुनिया

''विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः।''

अर्थात्- सभी विद्याएं देवी का ही स्वरूप हैं।... देवी भागवत का यह कथन महिलाओं को लेकर भारतीय मनीषा का द्योतक है। भारतीय संस्कृति ने कभी महिलाओं को कम नहीं आंका, अपितु महिलाओं को पुरुष की बराबरी का दर्जा ही दिया। शास्त्रों में कहा गया है कि सृष्टि के निर्माण के लिए परमात्मा ने अपने आप को दो भागों में बांटा। नारी की अस्मिता और मान की रक्षा के लिए पुरूष को पाबंद भी किया गया। यदि हम भारतीय शास्त्रों का अध्ययन करें तो पता चलेगा, हर कहीं महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा और समानता का हक दिया गया है। जब समाज का निर्माण हुआ तो कहा गया- ''जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता रमण करते हैं।'' यह कथन केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है और न ही उपदेश का आधार अपितु व्यावहारिक जगत में भी आप इसकी प्रामाणिकता देख सकते हैं। जब भी महिलाओं को कोई दायित्व मिला है, उसे उन्होंने पूरी शिद्दत और कुशलता के साथ पूरा किया है। कई बार तो उन्हें इसके लिए प्रेरित करने की भी जरूरत नहीं रही। वे स्वतः परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेकर रणक्षेत्र में कूद पड़ीं। महिलाओं के बारे में केवल शास्त्रीय मान्यताएं ही नहीं अपितु आधुनिक विज्ञान भी उनकी ताकत का बखान करने से नहीं बच पाया।

यदि समाज में महिलाओं की ताकत का उपयोग सही दिशा में होता है तो वहां आश्चर्यजनक नतीजे सामने आते हैं। व्यापार-उद्योग जगत हो या सामाजिक क्षेत्र अथवा रचनात्मकता, हर कहीं महिलाओं ने अपनी अलग पहचान स्थापित की है। यह अंक महिलाओं को समर्पित करते वक्त मन में व्याप्त पुरुष जब अपने आप को तोल रहा था, तब देवी भागवत की इस पंक्ति ने सहज ही उसके अभिमान को तिरोहित कर डाला और जब इस अंक में संग्रहित महिला व्यक्तित्वों की कहानियां पढ़ी तो स्वतः मन के पुरुष भाव का शमन भी हो गया। यह अंक ऐसी ही महिला विभूतियों से आपका परिचय कराएगा, जिन्होंने अपने बलबूते पर अपनी दुनियां रची। आज वे किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। समाज को उन्होंने वह दिया जिसकी अपेक्षा भी समाज ने उनसे नहीं की थी। लेकिन अब समाज उनके कृतित्व का ऋणी है। इन कहानियों में महिलाओं की कलात्मकता, रचनात्मकता, अदम्य जीजीविषा, बौद्धिक समृद्धता और उद्यमिता का परिचय हमें मिलता है।

संस्कारों के साथ शिक्षा का अत्यंत मनोवैज्ञानिक तरीके से अभियान चला रही, हेमा फाउंडेशन की चेयरमेन अनिता माहेश्वरी संस्कृति सरंक्षण में भी योगदान दे रही है। जयपुर निवासी माँ-बेटी शारदा डागा व पिंकी माहेश्वरी अपने स्टार्टअप ''सरप्राइज समवन'' द्वारा पर्यावरण संरक्षण का अलख भी जगा रही हैं। भीलवाड़ा की रीना डाड भागवत और अन्य आख्यानों के माध्यम से समाज को नई दिशा देने को उद्दत हुई और उन्होंने इसमें अत्याधुनिक सूचना तकनीकी का प्रयोग करके भी सफलता हासिल की। वाराणसी की मोहिनी झंवर कमजोर वर्ग की महिलाओं को स्वरोजगार के माध्यम से समाज में बराबरी पर लाने के लिए जिस कर्मठता से जुटी हैं, उसका नतीजा है कि 70 हजार महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हो गई हैं। यह आंकड़ा चौंकाने वाला है, क्या एक महिला ऐसा कर सकती है, पर उन्होंने कर दिखाया। यशोदा माहेश्वरी जिस तरह गरीब बच्चों की शिक्षा और परवरिश में मददगार बनी हैं, यह उनका समाज के प्रति ऐसा समर्पण है जो भावी पीढ़ी गढने में अप्रतिम योगदान बन गया। कोटा की अर्चना मूंदड़ा 52 की उम्र में अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवा कर नारी की अदम्य इच्छाशक्ति की द्योतक बन गई हैं। रामेश्वरी मूंदड़ा की रचनात्मक सोच ने बच्चों को नैतिक शिक्षा का नया माध्यम दिया। मनोवैज्ञानिक तरीके से बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के लिए छोटी फिल्मों का प्रयोग काफी लोकप्रिय हुआ है। वलसाड की पूनम धूत ने एक विचार को कैसे पुष्पित-पल्लवित कर सफलता का बागान खड़ा किया जा सकता है, यह साबित किया। सुनिता रांदड़ की गोपालन की छोटी सी शुरुआत उद्यम की सफलता के शिखर पर उनकी जीजीविषा को प्रतिबिंबित करती है।

निश्चित ही यह समाज की ऐसी नायिकाएं हैं, जिनका व्यक्तित्व समाज की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणीय और अनुकरणीय है। यह अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे खुशी इस बात की है कि उन सबके समाज को मिले योगदान को आप तक पहुंचाने का माध्यम श्री माहेश्वरी टाईम्स बन सकी। इस अंक में आप महिला व्यक्तित्वों के परिचय के साथ सभी स्थायी स्तंभ, रुचिकर आलेख, मर्मस्पर्शी कविताएं और भी बहुत कुछ पाएंगे। यह अंक आपको कैसा लगा, अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराना न भूलें।

जय महेश!

पुष्कर बाहेती

सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

विराटनगर (नेपाल) में निवासरत श्री सुनील सारडा की धर्मपत्नी श्रीमती गिरिजा चितलांगिया सारडा का जन्म 18 सितंबर 1975 को पाकिस्तान सीमा से लगे श्रीगंगानगर (राजस्थान) में स्वर्गीय श्री रामदेव व श्रीमती गायत्री देवी चितलांगिया के यहां हुआ था आपकी पहचान प्रमुख रूप से एक उद्यमी के रूप में तो है ही, साथ ही एक प्रखर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी है।

आप वर्तमान में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की पूर्वांचल संयुक्त मंत्री के रूप के साथ-साथ महिला अधिकार , उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति की प्रभारी प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं।

पूर्व में नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा के रूप में महिलाओं के सर्वांगीण विकास के क्षेत्र में कार्य कर चुकी हैं आपका जन्म कला एवं रचनात्मकता से भरे परिवार में हुआ बीकॉम एलएलबी तथा पोस्ट ग्रेजुएशन इन कंप्यूटर साइंस तक शिक्षा प्राप्त श्रीमती सारडा विवाह के पूर्व हैंडी क्राफ्ट मटेरियल का निर्यात करती थीं।

वर्तमान में पायनियर इलेक्ट्रो केबल्स की डायरेक्टर एवं पायनियर रबर फैक्ट्री में पार्टनर की हैसियत से काम कर रही हैं।

इंटरनेशनल माहेश्वरी कपल क्लब द्वारा माहेश्वरी वुमन ऑफ बर्थ अवार्ड से सम्मानित श्रीमती सारडा, नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी महिला संगठन की संगठन सचिव, रोटरी क्लब ऑफ बिराटनगर डाउनटाउन की सचिव, उद्योग संगठन मोरंग की महिला समिति की कोषाध्यक्ष के साथ-साथ नेपाल की 'मारवाड़ी नारी शक्ति' की संपादक भी हैं।

कला के क्षेत्र में रुझान रखने वाली श्रीमती सारडा ने परंपरागत शिक्षा के साथ ज्वैलरी मेकिंग फैशन डिजाइनिंग टैक्सटाइल डिजाइनिंग कत्थक इत्यादि की फॉर्मल शिक्षा भी पाई है।

नारी सर्वत्र पूज्यते...

महिलाओं को समर्पित एक पूरा अंक "The voice is clear and loud" क्यों ठीक कहा ना, मैंने? ''नारी सर्वत्र पूज्यते।'' मुझसे इस बात में विभेद करने वाली बहुत सी बहनें होंगी। आजकल अक्सर यह चर्चा होती है कि महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया जाए, या क्यों हमारे समाज में महिलाओं को एक सेकंड क्लास सिटीजन का दर्जा दिया जाता है? पर कभी किसी ने गौर किया है कि जगत जननी नारी को सनातन धर्म में शुरू से पूजा जाता रहा है। आप कहेंगे, नहीं यह सही नहीं है। पर मैं चाहूंगी कि आप एक बार ध्यान से सोचें। किसी भी देवता का नाम लें तो देवी का नाम पहले आता है, चाहे वह सीताराम हो या राधा कृष्ण। उसी तरह किसी भी देवी के चित्र को देखिए सभी देवियों को शक्ति स्वरूपा मानते हुए उनके हाथों में तरह-तरह के शस्त्र भी सजे हुए हैं और धन भी सजा हुआ है तथा देवियों को देने वाला यानी दाता के रूप में दर्शाया जाता है। एक बार फिर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी देवियों की पोशाक यानी वेशभूषा पर। किसी भी चित्र में कभी आपने किसी देवी का मुंह ढका हुआ देखा है? या उनके पहनावे में कहीं सिर ढकना, घूंघट करना या इस तरह की रिवाज दिखाई पड़ता है?

तो फिर हमारे समाज में इस तरह का परिवर्तन कैसे आया? क्यों कुछ चीजें बदलीं और फिर बदल कर ही रह गई? जब हम भारतवर्ष की बात करें तो इसमें भारतवर्ष में जुड़े ऐसे कुछ स्थान भी शामिल होगें जो आज अलग-अलग राष्ट्रों की संकल्पना ले चुके हैं, सनातन धर्म की भावना से ओतप्रोत थे। यही नहीं भारत सदा ही एक समृद्ध देश रहा है और समृद्ध देश पर ही आक्रमण होता है और, जो हुआ भी। तरह-तरह के आक्रांताओं ने समय-समय पर आक्रमण किए और अपना प्रभाव छोड़ते चले गये। खास करके मुगलों के आक्रमण ने बहुत गहरी छाप छोड़ी। चाहे वह महिलाओं का पहनावा बदलना हो या हमारा खान-पान हो या फिर विवाह शादियों के समय में परिवर्तन हो। एक तरफ 1000 वर्षों से अधिक समय तक आक्रांताओ द्वारा नारी जाति का जो तिरस्कार, बलात्कार, अपहरण, हरम, हत्या, पर्दा, सौतन, जबरन धर्मांतरण आदि के रूप में किया गया था वह अत्यंत शोचनीय था। दूसरी तरफ हिन्दू समाज भी समय के साथ कुछ कुरीतियां ग्रहण कर चुका था, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, अशिक्षा, समाज में नारी का नीचा स्थान, विधवा का अभिशाप,नवजात कन्या की हत्या आदि।

जब नारी की अस्मिता पर प्रश्न उठते थे तो उसके बचाव में उस समय के लोगों ने पति की मृत्यु के पश्चात सुरक्षा के अभाव में पत्नी के साथ दुर्व्यवहार ना हो इसलिए सती प्रथा चालू कर दी। छोटी उम्र में ही विवाह करके भी एक तरह से सुरक्षा का उपाय खोजने का ही प्रयास किया गया था यहां तक की रात में विवाह करने की परंपरा भी इसी वजह से चालू हुई कि दिन में दुल्हन का अपहरण तक कर लिया जाता था। पैदा होते ही नवजात कन्या को मार दिया जाने लगा ताकि बाद में उसकी अस्मिता को खतरे में पड़ता हुआ ना देखना पड़े। देश आजाद हुआ, समय बदला, जरूरत थी हमें बदलने की, कुछ हद तक हम बदले भी, पर आज भी सनातन धर्म के नियमों वाले पुराने भारत तक पहुंचना बाकी है।

बाकी है, महिलाओं को वही स्थान दे पाना जो पहले था। जरूरी नहीं कि आप यह कहें कि महिला और पुरुष बराबर हैं। जरूरी यह है कि आप कहें कि शरीर की बनावट चाहे अलग अलग हो परन्तु दोनों जो काम करते हैं, वह बराबर है। यानी यदि पुरुष जीविका अर्जन करने या कमाने जा रहे हैं उस कार्य को महिलाओं के गृहस्थी संभालने से उच्चतर माना जाए और महिलाओं के कार्य को कमतर माना जाए तभी शुरू होती है लड़ाई छोटे या बड़े की या महिला और पुरुष के भेद को पाटने की। आज हमें यह चाहिए कि हम फिर से एक बार वही पुराने भारत की ओर चलें जहां किसी काम को छोटा या बड़ा मानने, किसी भी कार्य को ज्यादा महत्वपूर्ण या कम महत्वपूर्ण में बांटने की बजाय हर कार्य की अलग महत्ता पर जोर दिया जाऐ। तो चलिए हर किसी को उसी की काबिलियत के हिसाब से आंका जाए ना कि स्त्री या पुरुष की हैसियत से, क्योंकि

'बराबरी की होड़ में नहीं हैं, किसी भी दौड़ में नहीं हैं
किस को दिखाना है ऊंचा या नीचा, किसी भी ज़माने में नारी का कोई तोड़ भी नहीं है,'

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

गिरिजा चितलांगिया सारड़ा
अतिथि सम्पादक

श्री सच्चियाय माताजी

■ टीम SMT

***सच्चियाय माताजी* - बिहानी, अटल, कांसट, करवा, चांडक, डागा, तापड़िया, परतानी, बांगड़, बिड़ला, मालू, मंत्री, भंसाली, रांधड़, राड्डी, लखोटिया, लढ़ा, सारड़ा एवं सिकची खांप की कुल देवी है।**

माताजी का मन्दिर राजस्थान में जोधपुर जिले के छोटे से कस्बे ओसियां में स्थित है। ओसियां जोधपुर से लगभग 65 किमी दूर हैं। मंदिर भूमितल से लगभग 125 फीट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। मंदिर तक पहुँचाने वाली सीढ़ियों पर नौ तोरण द्वार बने हैं जिन्हें नवदुर्गा के नामों से अलंकृत किया गया है। मंदिर की छत बड़ी ही आकर्षक एवं मनमोहक है। ऐसी मान्यता है कि प्रतिमा पहाड़ी से प्रकट हुई थी। मुख्य शिखर पर ध्वजादण्ड के पास सोने का कलश स्थापित है जिसमें घृत भरा हुआ है। मंदिर के सामने महामंडप में हवन-कुंड बना हुआ है, ऊपर सोलह पुतलियों की छवि दिखाई पड़ रही है। मन्दिर प्रांगण में भगवान शिव का मंदिर भी बना हुआ है।माता का मंदिर पश्चिमाभिमुख है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व अतिथिगृह बने हुए है।

संवत् 2026 वैशाखसुदी 11 को ग्रामवासियों के सहयोग से माताजी मंदिर के पुजारियों के साथ पुजारी (स्व.) जुगराजजी पुत्र श्री. सदासुखजी सेवक की देखरेख व निर्देशन में मुख्य मंदिर सहित सूर्य मंदिर, विष्णु मंदिर, गजानन्द मंदिर, महादेव मंदिर पर ध्वजादण्ड चढ़ाये गये। इस शुभ कार्य के बाद इस मंदिर में निर्माण का कार्य आज तक बन्द नहीं हुआ।

यहाँ वर्ष में दो बार नवरात्रि उत्सव मनाया जाता है। जिसमें चैत्र आसोज में कलश स्थापना के साथ ज्वारे उगाये जाते हैं। माताजी की केशर पूजा होती है। महापूजा अभिषेक होता है जिसमें दंपत्ति भक्तों को स्वयं बैठने का अवसर मिलता है।

नवरात्रि में माताजी को लगने वाले भोग

एकम	-	लापसी
दूज	-	खाजा, मगज-खीर,रसगुल्ला, केला
तीज	-	मीठा चावल (बीणज), अनानास
चौथ	-	बेसन चक्की, पपीता, खुरमाणी
पाँचम	-	गुड़ का हलवा,सेवक, गुलाब जामुन
छठ	-	लापसी, सेव
सातम	-	दाल की चक्की, अंगूर
आठम	-	नौ प्रकार की मिठाई-खीर पूड़ी,

लापसी, खाजा, मगद हलवा, नव प्रकार के फल, नव प्रकार की नमकीन का भोग लगता है

होम अष्टमी का हवन अष्टमी को आसोज व चैत्र नवरात्रि में परंपरानुसार रात्रि 9 बजे से डेड़ बजे के मध्य होता है। मंदिर पर लाल रेशमी ध्वजा भी चढ़ाई जाती है।

आरती - चैत्र सुदी 1 से आसोज बदी अमावस्था तक सुबह 8:30 बजे, आसोज सुदी 1 से चैत्र बदी अमावस्था तक सुबह 9 बजे व शाम को सूर्यास्त के 20 मिनिट बाद होती है। रात्रि में पटमंगल के बाद मंदिर रात्रि में नहीं खुलता, नवरात्रि में 10 बजे तक मंदिर खुला रहता है।

वर्तमान में ओसियां सच्चियाय माता मंदिर परिसर में पुराने मंदिरों के साथ सन् 1976 में ट्रस्ट स्थापना के बाद मुख्य श्री सच्चियाय माता मंदिर के चारों तरफ परकोटे में नवदुर्गा के नौ भव्य मंदिर पुरानी कलात्मक कलाकारी के साथ दानदाताओं द्वारा ट्रस्ट की देखरेख में बनवाए है।

कैसे पहुँचे - ओसियां जोधपुर - जैसलमेर रेल मार्ग पर तथा जोधपुर - ओसियां - फलौदी - रामदेवरा - जैसलमेर सड़क मार्ग पर स्थित है। दिल्ली, मुम्बई तथा जयपुर से जोधपुर तक के लिये सीधे विमान सेवा उपलब्ध है। दिल्ली - जैसलमेर इन्टरसिटी ट्रेन, जोधपुर - जैसलमेर ट्रेन पैलेस ऑन द व्हील्स द्वारा भी यहाँ तक पहुँच सकते है। राईकाबाग रोडवेज स्टैण्ड से हर 30 मिनिट में ओसियां के लिये तथा पावटा चौराहे से हर 30 मिनिट में ओसियां के लिये बसें उपलब्ध है।

वर्चुअल एक्सपो सखी-2021 की भव्य तैयारी

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन का आयोजन ■ 3-D आधुनिक तकनीकों का करेंगे उपयोग

कोटा। कोरोना काल में बहुत से लोगों ने बहुत कुछ खोया वहीं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन ने अपने साथ आबद्ध सदस्याओं के साथ इंटरनेट के माध्यम से एक नई पहल की और अपनी सभी सदस्याओं को कंप्यूटर शिक्षा के लिए प्रेरित करते हुए महिलाओं की तरह-तरह की वर्कशॉप ऑनलाइन की जिससे महिलाएं इंटरनेट फ्रेंडली हो कर सशक्त हो गईं। इसी क्रम में अब पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी एवं महामंत्री मंजू बागड़ के कुशल नेतृत्व में संगठन एक कदम आगे बढ़ाते हुए वर्चुअल एक्सपो सखी 2021 का आयोजन करने जा रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार इसके लिए इस वर्चुअल एक्सपो को, कई कदम आगे बढ़ाते हुए, वेबसाइट या एप्प की तकनीक को पीछे छोड़ कर एक 3D वर्चुअल प्लेटफार्म जो 360 डिग्री इन्वायरमेंट पर बनाया गया है, द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा ताकि आने वाले ग्राहक या विजिटर की रुचि इस एक्सपो में बनी रहे। 3D वर्चुअल प्लेटफॉर्म एनीमेटेड होता है जिसमें हर चीज असल जैसी दिखती है और लोगों की रूचि उसमें बनी रहती है। इससे कि विजिटर बाउंस बैक रेट बहुत कम रहता है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन पूरे भारत और नेपाल जो कि एक चैप्टर के रूप में संगठन से जुड़ा हुआ है, इस एक्सपो को पैन इंडिया 100 से उपर स्टॉल लाकर आयोजित कर रहा है।

ऐतिहासिक आयोजन बनाने की तैयारी

महिला संगठन ग्लोबल रूप से विजिबल इस एक्सपो को और भी रोचक बनाने के लिए महिला संगठन की एक्सपो संयोजक नेपाल निवासी गिरिजा सारडा और एक्सपो टीम पूरे प्रयास कर रही है। एक्सपो में स्थित ऑडिटोरियम में बड़े-बड़े स्पीकर्स द्वारा महिला सशक्तिकरण के विभिन्न मुद्दे हों, या फिर महिलाओं के भारत और नेपाल से आये स्टॉल्स, मेले में स्थित सप्लायर्स लाउंज के रूप में महिलाओं को व्यापार जोड़ने की कोशिश होगी। इससे सीधे मैन्युफैक्चरर्स से महिलाएं जुड़ सकेंगी और साथ-साथ स्पॉन्सर्स के रूप में जुड़कर ब्रांडिंग और एडवरटाइजिंग का मौका भी बहुत ही कम मूल्य में उपलब्ध होगा।

वर्चुअल प्लेटफार्म पर सामान विक्रय का प्रशिक्षण

इस मेले के माध्यम से महिलाओं को आने वाले समय में किसी भी वर्चुअल प्लेटफार्म पर अपने सामान को बेच पाने के लिए ट्रेनिंग देना भी एक उद्देश्य है। इसी उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए महिला संगठन द्वारा एक्सपो में भाग लेने वाली महिलाओं को 2 दिन की ट्रेनिंग भी दी जाएगी जिसके माध्यम से वह सीख पायें कि अपना सामान किस तरह किसी भी वर्चुअल प्लेटफार्म पर रखें। इस वर्चुअल एक्सपो की मदद से महिलाओं की ऑल राउंड ट्रेनिंग होगी जिसमें वर्चुअल वर्ल्ड में अपने आप को एक बिजनेसवुमन की तरह किस तरह स्थापित किया जा सके उसके लिए प्रयोग होने वाले सारे तरीके बताए जाएंगे तथा सीखने के लिए एक मौका भी मिलेगा। किसी भी एक जगह लगने वाले मेले की बजाए इस एक्सपो की खास बात यह रहेगी कि यह एक्सपो ऑनलाइन है इसमें ग्लोबल ऑडियंस मिलेंगे और किसी भी तरह का ट्रैवलिंग खर्च, स्टॉल लगाने का खर्च, सामान ट्रांसपोर्टेशन का खर्च, स्टाफ और उसके रहने खाने का खर्च इत्यादि विभिन्न खर्चों से बचकर कम से कम कीमत पर अपने आपको स्थापित करने का मौका मिलेगा।

प्रथम बार सप्लायर्स लाउंज कॉन्सेप्ट

महिलाओं के लिए इस एक्सपो को और रुचिकर तथा फायदा देने वाला बनाने के लिए सप्लायर्स लाउंज के रूप में एक नया कॉन्सेप्ट्स में जोड़ा गया है। इस कांसेप्ट के माध्यम से विभिन्न चीजों के मैन्युफैक्चरर्स को इस मेले के सप्लायर्स लाउंज में स्टाल दी जाएंगी, जिसकी कीमत 20000 रुपये रहेगी। इसका दोहरा फायदा होगा। इनस्टॉल्स की कीमत महिलाओं को दी गई स्टॉल्स की कीमत के तुलना में काफी ज्यादा है ताकि महिलाएं मैन्युफैक्चरर्स से एक्सपो में तुलनात्मक रूप में दाम मैच कर पाए और साथ ही साथ सीधे मैन्युफैक्चरर्स से जुड़कर आगे अपने व्यवसाय में और अच्छे मूल्यों पर सामान प्राप्त कर सकें। सप्लायर्स को इससे यह फायदा होगा कि डायरेक्ट महिला ऑडियंस उन्हें मेले में प्राप्त होंगी और साथ ही साथ बहुत सी रीसेलर महिलाओं से जुड़ने का मौका भी उन्हें मिलेगा। अतः उनके लिए 20000 रुपये जैसी कीमत बहुत ही मामूली रकम है क्योंकि बड़े बड़े एक्सपोज में इन स्टाल्स की कीमत कहीं ज्यादा होती है। मैन्युफैक्चरर्स के लिए यह अवसर बेचने से भी ज्यादा नई डीलर बनाने और एडवरटाइजिंग करने का एक जरिया होगा।

एकता ने मंगल पर पहुंचाया समाज का नाम

यूएएस से पीएच.डी. कर रही बेटी का अद्भुत कारनामा

आनन्द (गुजरात)। मंगल ग्रह कि पृथ्वी से सबसे दूर है और जहां जीवन की संभावना अभी आने वाले कई दशकों तक नहीं है। ऐसी जगह गुजरात के ख्यात नगर आनंद गांव की बेटी एकता केला ने संपूर्ण माहेश्वरी समाज का नाम अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं कल्पनाशीलता से पहुंचा दिया है।

रोचेस्टर 6-अमेरिका से एस्ट्रोफिजिक्स में पीएच.डी कर रही समाज सदस्य अर्जुन केला की सुपुत्री एकता ने माहेश्वरी समाज का नाम 47 हजार कि.मी. दूर मंगल पर पहुंचाकर समाज को गौरवान्वित किया है। एकता ने गुजराती माध्यम से 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर एम.एस.विश्व विद्यालय (बड़ोदा) से बी.एस.सी. तथा आईआईटी मुंबई से एम.एसएसी फिजिक्स की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में वे वर्ष 2015 से अमेरिका के रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एस्ट्रो फिजिक्स में पीएच.डी. कर रही हैं। इस दौरान नासा द्वारा चलाये गये अभियान ''सेंड यूअर नेम टू मार्स'' में हिस्सा लेकर 2019 में ''ऑल माहेश्वरी समाज'' के नाम से पंजीयन करवाया गया। इस अभियान के माध्यम से

चीप द्वारा माहेश्वरी समाज का नाम मंगल ग्रह पर पहुँचा। इस उपलब्धि के लिये नासा की वेबसाईट द्वारा ''लोगो'' के साथ ''ऑल माहेश्वरी समाज'' के नाम से बोर्डिंग पास जारी किया है।

ऐसे चला था अभियान

नासा ने 31 जुलाई को Perseverance Rover Yan Mars (मंगल ग्रह) पर भेजने के लिये रवाना किया। इसके लिये एकता ने पूरे माहेश्वरी समाज का रजिस्ट्रेशन कराया था। उसे नासा ने एक बेहद महीन चीप (हमारे सिर के बाल के दस हजारवें हिस्से जितनी पतली) में इस नाम को बदल दिया। पृथ्वी से मंगल ग्रह की दूरी 47 करोड़ किमी है, जहाँ यान को पहुंचने में लगे छह महीने। लांचिंग के 6 महीने बाद यह यान 47 करोड़ किलोमीटर की दूरी तय करके सफलतापूर्वक मंगल ग्रह पर पहुंच गया है। एकता को यादगिरी के रूप में अपनी ऑफिसियली वेबसाईट और 'लोगो' के साथ सभी माहेश्वरी समाज के नाम का बोर्डिंग पास इश्यू किया है, जिसकी कापी एकता के परिवार ने अपने माहेश्वरी समाज को अर्पित करने का अनूठा निश्चय किया है।

'माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2020' विशेषांक का उच्च शिक्षा मंत्री ने किया विमोचन

उज्जैन। माहेश्वरी समाज की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पत्रिका 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के विशेषांक 'माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2020' का विमोचन मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर संपादक पुष्कर बाहेती व प्रबंध संपादक मुनि बाहेती द्वारा डॉ. यादव का शॉल-श्रीफल भेंट कर अभिनन्दन किया गया। संपादक पुष्कर बाहेती ने डॉ. यादव को बताया कि श्री माहेश्वरी टाईम्स की शुरुआत लगभग डेढ़ दशक पूर्व समाज के सेतु के रूप में एक छोटे से पौधे के रूप में हुई थी। इस अल्पावधि में अपने उत्कृष्ट सम्पादन व कलेवर के साथ ही इसे मिले पाठकों के स्नेह से वर्तमान में यह 3.5 लाख से अधिक पाठकों की चहेती होकर देश की शीर्ष सामाजिक पत्रिकाओं में शामिल है। कार्यक्रम में डॉ. शिव चौरसिया, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. विवेक चौरसिया व शिरीष राजपुरोहित आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

विमला सोनी की पुस्तक विमोचित

कोलकाता। समाजसेवी व साहित्य प्रेमी विमला सोनी द्वारा लिखित उनके प्रथम कविता संग्रह ''प्रथम भावों की अभिव्यक्ति'' का विमोचन गत 15 फरवरी को स्थानीय डागा बेनकट हाल में हुआ। इसी अवसर पर उनकी 50वीं शादी की सालगिरह का भी आयोजन किया गया। इसका विमोचन सामाजिक कार्यकर्ता और समाज चिंतक जयकिशन झंवर ने किया।

नाथद्वारा में लोकार्पित नवनिर्मित सेवासदन भवन

नवनिर्मित ''श्रीनाथ भवन''की 24 अप्रैल से होगी बुकिंग प्रारम्भ

नाथद्वारा। अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन देशभर के प्रमुख तीर्थ स्थलों पर अपने अपनों के द्वारा श्रेष्ठ आवासीय सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। इस श्रृंखला में अब नाथद्वारा भी शामिल हो गया है। यहाँ सेवा सदन के 'श्रीनाथ भवन' का लोकार्पण गत 27 जनवरी को गरिमामय समारोह के साथ लोकसभा अध्यक्ष ओम कृष्ण बिड़ला के कर कमलों से हुआ।

सेवा सदन के अध्यक्ष जुगल किशोर बिड़ला ने जानकारी देते हुए बताया कि इस समारोह के प्रमुख अतिथि जयपुर माहेश्वरी समाज के पूर्व अध्यक्ष एस.एन. काबरा। विशिष्ट अतिथि उद्योगपति ओमप्रकाश तोषनीवाल किशनगढ़ एवं समारोह के स्वागताध्यक्ष रामकुमार मानधना मुंबई थे। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष सी.पी. जोशी, राजसमन्द सांसद दिया कुमारी एवं भीलवाड़ा सांसद सुभाष बहेड़िया ने भी अपनी उपस्थिति से इस समारोह को गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओमकृष्ण बिरला की धर्मपत्नी अमिता बिरला, पुत्री अंजली बिरला, सेवा सदन के पूर्व अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा, महामंत्री रमेशचंद्र छारवाल आदि उपस्थित थे।

संकट में मदद में माहेश्वरी आगे- श्री बिरला

इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री बिरला ने अपने उदबोधन में कहा कि माहेश्वरी समाज शिव की संतान है। हमारे पूर्वजों ने हमें त्याग सेवा और समर्पण का पाठ सिखाया है। देश में कोई भी प्राकृतिक आपदा हो, संकट हो तो मदद के लिये माहेश्वरी समाज सबसे आगे रहा है। यह हमारी संस्कृति भी है और यही संस्कार हमें मिले हैं। हम शिव की तरह समाज का कल्याण करें जैसे समुद्र मंथन के समय शिव ने विष पीकर देवी देवताओं को संकट से उबारा उसी तरह समाजजन परहित का कार्य करते रहें। उन्होंने कहा कि माहेश्वरी समाज ने केवल समाजसेवा ही नहीं की वरन आजादी की लड़ाई में भी बहुमूल्य योगदान दिया। उसके बाद कल कारखाने लगाकर देश में रोजगार के अवसर प्रदान किये। सेवा कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहने वाले माहेश्वरी समाज ने देश के सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों पर भवनों का निर्माण कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। अब इसी श्रृंखला में देश के प्रमुख अस्पतालों में आरोग्य भवन भी बनाने जा रहा है।

कैसा है नवनिर्मित भवन

भविष्य की युवा पीढ़ी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाये गये इस अत्याधुनिक संपूर्ण एसी भवन में कुल 82 सुव्यवस्थित कमरे, 7200 वर्गफीट का हॉल, अन्य तीन प्रोग्राम हॉल, एक कान्फ्रेंस हॉल, बेडरूम, बेंकवेट हॉल, डायनिंग हॉल, स्वागत कक्ष, चार लिफ्ट आदि बनवाये गये हैं। भवन लगभग तैयार हो चुका है। फर्नीचर व अन्य सुविधाओं का कार्य चल रहा है। 24 अप्रैल से बुकिंग के लिये प्रारम्भ होने वाला यह पूरा भवन दानदाताओं के सहयोग से बना है।

नशामुक्त भारत अभियान की प्रदर्शनी सम्पन्न

इन्दौर। मानस भवन श्री शुध्दि नशामुक्ति केन्द्र द्वारा 29 जनवरी से दो दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि गोविन्द मालू, पूर्व उपाध्यक्ष, मध्यप्रदेश खनिज विकास निगम ने कहा कि जनता को संदेश देने का यह एक बहुत सशक्त और सफल प्रयास है। उन्होंने बताया कि आज की युवा पीढ़ी जिसमें युवतियां भी शामिल है, अपने मन को उन्मुक्त करने के लिए अनजाने में शौकिया विभिन्न प्रकार की नशे की चपेट में आ जाते है और फिर इसके आदी हो जाते हैं, जो जीवन को बरबादी की ओर अग्रसर करता है। इससे बचने के लिए हमें नशे से सदैव दूर रहने की नितांत आवश्यकता है। श्री मालू ने इस अवसर पर लगाई गई फोटो प्रदर्शनी में नशे पर आधारित संदेशात्मक चित्रों का अवलोकन करते हुए सामाजिक न्याय विभाग के फोटोग्राफर शरद श्रीवास्तव की सराहना की। साथ ही मानव सेवा के रुप में इसे निरंतर जारी रखने का सुझाव भी दिया। इस अवसर पर बडी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

ठाकुरजी को चढ़ाई स्वर्ण पोशाक

कोटड़ी (भीलवाड़ा)। समाजसेवी मुरलीधर काबरा द्वारा भगवान श्री चारभुजानाथ कोटड़ी को लगभग 10 तोले सोने से बना हुआ भगवान का वस्त्र यानी बागा अपने परिजनों व स्नेहीजनों के साथ विधि विधान व मंत्रोच्चार के साथ चढ़ाया गया। इस अवसर पर भगवान को भोग भी लगाया गया।

कुछ तकलीफें हमारा इम्तेहान लेने नहीं बल्कि...
हमारे साथ जुड़े लोगों की पहचान करवाने आती हैं...!!

पौधारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

उज्जैन। श्री माहेश्वरी महिला मंडल नरसिंह मंदिर उज्जैन द्वारा 26 जनवरी 2021 को पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षीरसागर बालोद्यान में विभिन्न प्रकार के फूलों के एवं औषधीय पौधे लगाए गए। इस अवसर पर भारती कोठारी, पुष्पा भलिका, मंगला बांगड़, नर्मदा सारदा, रेखा काबरा, पुष्पा कोठारी, तारा कोठारी आदि महिला मंडल सदस्याऐं उपस्थित थीं। उक्त जानकारी अध्यक्ष रेखा लड्ढा एवं सचिव उषा भट्टड़ ने दी।

जरूरतमंद को दिया सहयोग

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा एक जरूरतमंद महिला रेखा सोनी को सिलाई मशीन देकर सहयोग प्रदान किया गया। गत 10 जनवरी को जिला संगठन के पदाधिकारियों के नववर्ष स्नेह मिलन कार्यक्रम के अवसर पर सिलाई मशीन स्टेण्ड सहित श्रीमती सोनी को उपलब्ध करवाई गई। जिला अध्यक्ष उमा सोमानी ने बताया कि इस मशीन हेतु पूर्व जिला अध्यक्ष पदमा जाजू, वर्तमान कोषाध्यक्ष गायत्री परवाल, संयुक्त मंत्री अनिता मूंदड़ा, मधु मोदानी एवं कुसुम सारड़ा ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। उक्त कार्यक्रम जिला अध्यक्ष उमा सोमानी के निवास पर संपन्न हुआ।

माहेश्वरी सभा के चुनाव 16 मई को

कोलकाता। माहेश्वरी भवन के सभागार में आयेजित माहेश्वरी सभा के साधारण अधिवेशन में आगामी 16 मई को सभा एवं संबंधित शाखा-संस्थाओं चुनाव होना तय हुआ है। उल्लेखनीय है कि शताधिक वर्ष पुरानी माहेश्वरी सभा का कोलकाता में ही नहीं अपितु पूरे देश की प्राचीनतम संस्थाओं में शुमार है तकरीबन 16,000 से भी अधिक सदस्यों वाली इस संस्था का एक गौरवशाली एवं समृद्ध अतीत रहा है।

महाविद्यालय ने मनाया स्थापना दिवस

जायस (उ.प्र.)। पंकज माहेश्वरी स्मृति महाविद्यालय, नन्दग्राम, जायस (उ0प्र0) में बसंत पंचमी एवं महाविद्यालय का पन्द्रहवां स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। घनश्याम माहेश्वरी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कु. शिवानी माहेश्वरी तथा श्रीमती रोली एवं अर्चना माहेश्वरी ने निर्णायक मण्डल सदस्य के रुप में योगदान दिया। प्रबंधक मनोज माहेश्वरी ने छात्र-छात्राओं को चिंतन चरित्र का महत्व बताया। मुख्य अतिथि डा संजय सिंह ने पंकज माहेश्वरी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला एवं संस्थापक स्व. श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के त्याग-तितिक्षा मय जीवन को प्रेरणादायी बताया।

स्वर्ण जयंती समारोह सम्पन्न

रांची। श्री माहेश्वरी सभा श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर का स्वर्ण जयंती महोत्सव बसंत पंचमी के अवसर पर समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राज कुमार लढ़ा ने बताया कि यजमान किशन साबू द्वारा पूजा अर्चना हवन किया गया। माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष शिवशंकर साबू, सचिव नरेंद्र लखोटिया, कोषाध्यक्ष मनोज कल्याणी, सहसचिव बसंत लाखोटिया, प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार मारू सहित शहर के कई गणमान्य लोगों ने हवन में आहुति दी। इस अवसर पर अन्नपूर्णा सेवा द्वारा प्रसाद के रूप में भंडारा का आयोजन किया गया। इसमें माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष सौरभ साबू, उपाध्यक्ष विनय मंत्री एवं पूरे कार्यकारिणी के सदस्यों ने सहयोग किया।

मानो तो मौज है वरना... समस्या तो रोज है
कुदरत ने तो... आनंद ही आनंद दिया है,
दुःख तो हमारी खोज हैं

आर.आर. कॉबेल को अवार्ड

बडोदरा। आयात-निर्यात द्वारा राष्ट्रीय विकास मं. विशिष्ट तथा सतत योगदान के लिये आर.आर.कॉबेल को एक्सिस क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। आर.आर.कॉबेल के प्रमुख त्रिभुवन काबरा ने यह अवार्ड प्राप्त किया।

महिला मंडल ने किया सामूहिक सुन्दरकाण्ड

रतनगढ़। माहेश्वरी महिला मंडल का सामूहिक मासिक सुंदरकांड पाठ रतनगढ़ माहेश्वरी महासभा के मंत्री रामोतार चांडक के आवास पर संपन्न हुआ। इस मौके पर महिला मंडल की अध्यक्ष सरिता चांडक,मंत्री चन्दा सोनी,मंजू पेड़ीवाल,जयश्री जाजू, ज्योति लड्ढा, सीता तापड़िया, कृष्णा जाजू, कमला चांडक, वेदिका चांडक आदि उपस्थित थे।

सभी दवाओं पर 30 प्रतिशत ट्रेड मार्जिन की मांग

नईदिल्ली। अपने मुहिम से कैंसर दवाओं पर ट्रेड मार्जिन कोष लाने में अहम भूमिका निभाने वाले पी.आर. सोमानी ने सभी दवाओं पर 30 प्रतिशत ट्रेड मार्जिन कैंप लागू करने की मांग को लेकर मुहिम तेज कर दी। इसके अंतर्गत वे दिल्ली में उपराष्ट्रपति वैंकैया नायडु सहित कई संबंधित अधिकारी से मिले। श्री सोमानी एवं आंध्रप्रदेश के पूर्व मंत्री डी. सत्यनारायण ने उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडु, राष्ट्रीय दवा मूल्य निर्धारण प्राधिकरण के अध्यक्ष शुभ्रा सिंह, फार्मास्युटिकल सेक्रेटरी एस अपर्णा, ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया वेणु गोपाल सोमानी एवं राजसभा सदस्य डॉक्टर विनय सहस्त्र बुद्धे से भी भेंट कर ज्ञापन दिया व सरकार को जनहित में इस पर तत्काल 30 प्रतिशत ट्रेड मार्जिन कैप एवं दवा नियंत्रण नीति लाने के लिए आग्रह करने का निवेदन किया। श्री सोमानी का कहना है कि दवाईयों पर छपी एमआरपी निर्माता की बिक्री की कीमतों से 5000 प्रतिशत तक अधिक है। दवाओं पर एमआरपी की सीमा के लिए कोई दवा नियंत्रण नीति नहीं है। आम आदमी को लगता है कि एमआरपी सरकार द्वारा नियंत्रित है, लेकिन ऐसा नहीं है। इसके कारण 135 करोड़ नागरिक असामान्य एमआरपी पर दवाएं खरीद रहे हैं और वित्तीय संकट में फंस गए हैं।

मकर संक्रांति पर दान पुण्य

उदयपुर। मकर संक्रांति पर्व पर माहेश्वरी महिला संस्था "गौरव" द्वारा एक माह तक 500 कम्बलों का वितरण किया गया। आशा नरानीवाल ने बताया कि दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं साबुन तेल भोज व खाद् सामग्री भी वितरित की। साथ ही बच्चों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था भी की। जिला अध्यक्ष मंजू गांधी ने बच्चों को गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र का पाठ भी करवाया। कौशल्या गट्टानी व सारिता न्याती ने बच्चों को साफ-सफाई के बारे में बताया। इस अवसर पर नीमा देवपुरा, रेखा काबरा व कविता बल्दवा भी उपस्थित थी। इसी प्रकार बसन्त पंचमी उत्सव पर सभी सदस्याओं ने पीले वस्त्र पहनें व बसंत से संबंधित हाउजी व गेम्स खिलाये गये। आशा नरानीवाल ने सभी का स्वागत किया। कौशल्या गटटानी ने आर्शीवचन व्यक्त किये।

सूचना

श्री माहेश्वरी टाईम्स के सभी पाठको एवं बंधुओं को सूचित किया जाता है कि **श्री जगदीश सुदा** निवासी **अमरावती** मार्च 2020 से **श्री माहेश्वरी टाईम्स** प्रतिनिधि के कर्त्तव्यों से मुक्त किये गये हैं। अतः वे अब श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रतिनिधि नहीं हैं। यदि कोई भी श्री माहेश्वरी टाईम्स के लिये श्री सुदा से कोई लेनदेन करता है, तो उसके लिये श्री माहेश्वरी टाईम्स जिम्मेदार नहीं हैं। यदि मार्च 2020 के पश्चात् श्री सुदा ने किसी प्रकार का श्री माहेश्वरी टाईम्स के नाम से लेन-देन किया है, तो हमें सप्रमाण बताऐं। ताकि वैधानिक कार्यवाही की जा सके।

-सम्पादक श्री माहेश्वरी टाईम्स, उज्जैन

श्रीमद्भगवद् गीता का किया वितरण

इंदौर। माहेश्वरी संस्कृति के तृतीय वर्ष की द्वितीय सभा का आयोजन गत 14 फरवरी को कल्याणम् रिसोर्ट, इंदौर पर संपन्न हुआ। उक्त जानकारी देते हुए संयोजक मुनीश मालानी ने बताया कि शुभारम्भ म्यूजिकल इंटरव्यू के आयोजन से किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला माहेश्वरी समाज इंदौर के प्रचार मंत्री अजय सारडा के आह्वान पर स्वागत एवं प्रतीक चिन्ह के रूप में श्रीमद्भगवद्गीता का वितरण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महेश-सुषमा पलोड़ ने की। कार्यक्रम प्रभारी दिनेश साधना मंडोवरा, मनमोहन-संगीता पलोड़, यतीन्द्र-सीमा रणधर, सुभाष-वीणा राठी थे। कार्यक्रम का सफल संचालन मुकेश सारडा ने किया व आभार शरद साबू ने प्रकट किया।

गोशाला में गोकाष्ट मशीन भेंट

हैदराबाद। संस्कार-धारा सुल्तान बाजार एवं एकल हरि सत्संग महिला समिति हैदराबाद द्वारा कामधेनु गोशाला जियागुडा में गोकाष्ट मशीन भेंट की गई। इसका उदघाटन 21 जनवरी को किया गया। संस्कार धारा की संस्थापिका, एकल श्री हरि सत्संग महिला समिति की प्रांतीय अध्यक्षा एवं सकल श्री हरि सत्संग महिला समिति दक्षिण की प्रभारी कलावती जाजू ने बताया कि इस गोकाष्ट मशीन द्वारा गोबर से लकड़ी बनायी जायेगी, जिसका उपयोग हवन, शुभ कार्यों एवं अंतिम संस्कार में होगा। संस्था की अध्यक्ष श्यामा नावंदर व मंत्री अंजना अटल ने बताया कि इस मशीन को लगाने में संस्था के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा। एकल श्री हरि सत्संग समिति के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश नारायण भांगडिया, गोभक्त जसमत भाई पटेल, बिज्जू शर्मा सहित संस्था कोषाध्यक्ष प्रेमलता काकाणी, कविता अट्टल, पुष्पा दम्मानी, संतोष लाहोटी, पदमा बजाज, शांता दरक, शोभा अट्टल आदि उपस्थित थे।

अपने, अगर चुभे भी, तो सहन कर लेना क्योंकि कांटो से बिछड़कर, गुलाब, गुलाब नही रहता..!

तीन वर्षीय नितांशी ने बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

चैन्नई। नितांशी बागड़ी उम्र 3 वर्ष ने सबसे छोटी उम्र और सबसे कम समय में चेस बोर्ड पर दोनों तरफ मोहरो को उनके सही स्थान पर जमा कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। इसके लिये उनका नाम इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड में दाखिल किया गया। नितांशी समाज सदस्य वृंदा व आदित्य बागड़ी की सुपुत्री हैं।

नारी शक्ति को समर्पित स्वस्तिक

बेटी रक्षा कर्म से, हों प्रसन्न नक्षत्र। दोष दशा के मेटती, बेटी बनती छत्र।।		बेटी औ' नक्षत्र को, मानव सम ही जान। सेवा से मेवा मिले, और मिले सम्मान।।	बेटी है गरिमामयी, हस्ती विघ्न विकार। वक्र अगर नक्षत्र हो, बेटी देत उबार।।	बिगड़े हों नक्षत्र जब, करते नित्य अनिष्ट। बेटी की रक्षा करें, होंगे काम अभिष्ट।।
बेटी की सेवा करें, यह जग में सिरमौर। धरती का नक्षत्र फिर, कौन यहाँ पर और।।		नक्षत्रों में है अहम, बेटी भी घर ध्यान। बेटी भी करती सदा, प्रेम भाव का दान।।		
बेटी का आदर करें, नभ-नक्षत्र समान। हैं समर्थ दोनों यहाँ, रचते भाग्य विधान।।	बेटी की रक्षा सदा, हिय में रखो बसाय। नक्षत्रों को साध यह, जग को रही बचाय।।		बिसरायें बेटी नहीं, करें नित्य सम्मान। यही सिद्ध नक्षत्र है, तेजस्वी प्रतिमान।।	बेटी रक्षा भाव से, बनता भाग्य प्रगाढ़। रुष्ट बनें नक्षत्र भी, करते नहीं बिगाड।।
		बेटी नभ नक्षत्र है, कर ले मानव ज्ञान। नभ में बेटी से बड़ा, देखा नहीं निशान।।		सताईस नक्षत्र पर, करते नित्य विचार। बीस-आठ बेटी सहित, यह भव की पतवार।।
सात-बीस नक्षत्र हैं, कहते हैं विद्वान। बिटिया भी नक्षत्र है, अपने घर में जान।।	बेटी पावन पावनी, ज्यों गंगा जल-नीर। बिगड़े हों नक्षत्र भी, देना सकते पीर।।	एक सिद्ध नक्षत्र है, बेटी ललित ललाम। बेटी से ही वंश की, सधती आस तमाम।।		बनें रुष्ट नक्षत्र जो, देते काम बिगाड। बेटी उनके कोप की, बन जाती है आड़।।

ख्यात पर्यावरण प्रेमी जयपुर निवासी नवल डागा ने विश्व महिला दिवस के अवसर पर समर्पित किया बेटियों को समर्पित संदेश देता यह स्वस्तिक....

झुक जाते हैं जो लोग आपके लिए किसी भी हद तक..
वह सिर्फ आपकी इज़्ज़त ही नहीं करते आपसे प्रेम भी करते हैं..

काल्या बने अध्यक्ष

गुलाबपुरा। स्थानीय निकाय चुनाव में इस बार कांग्रेस प्रत्याशी सुमित काल्या कड़ी टक्कर में भाजपा के धनराज गुर्जर को दो मत से हराकर अध्यक्ष की कुसी पर काबिज हुए। इसमें काल्या को 18 व धनराज गुर्जर को 16 मत मिले। यहां कांग्रेस व भाजपा दोनों को ही बहुमत नहीं था। सारा दारोमदार तीन निर्दलीयों पर था, जिसमें काल्या ने बाजी मारी। इसी प्रकार अजमेर व भीलवाड़ा जिले के विभिन्न नगर निकायों में मनोहर कोगटा, मधु जाजू, अमित मोदी केकड़ी, महावीर राठी, सुनीता राठी, ओम नरानीवाल, विजय लढ़ा, ओम गगरानी, कैलाश मुंदड़ा, शांति लाल डाड, महावीर लढा व चंचल बेली आदि पार्षद चुने गये।

इंडिया बुक मे कामाख्या राठी

जालौर। सांचोर निवासी समाज सदस्य सुनील कुमार राठी की पुत्री कामाख्या राठी ने एक अनूठा रिकॉर्ड बनाकर इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस मे अपना नाम दर्ज कराया है। उन्होने मात्र 17 सेकंड मे भारत के सभी राज्यो की राजधानी व राज्यो के नाम बताकर एक रिकॉर्ड बनाया जिसमे 12 सेकंड मे पाई की दशमलव के बाद की 100 संख्या बताने का कौशल भी शामिल है। वह 2 मिनट मे 170 से ज्यादा देश व उनकी राजधानी बता देती है, 100 से भी ज्यादा कविताएं उन्हे कंठस्थ है। मात्र ढाई साल की उम्र से गुजरात व देश के कई अखबारो सहित टीवी चैनलो पर आ चुका हैं। कामाख्या वर्तमान में चौथी कथा में पढ़ती हैं। उनके पिता सुनील कुमार राठी वायुसेना में पदस्थापित है तथा माता श्रीमती पूजा राठी गांधीनगर मे एक स्कूल संचालित करती हैं।

ठाणा माहेश्वरी मंडल सम्मानित

ठाणा। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगतसिंह कोश्यारी के कर कमलो द्वारा कोरोना आपदा काल में महाराष्ट्र के जिन संस्थाओं ने जरुरतमंदों की सहायता के सेवाभावी एवं मानवतावादी कार्य किये थे, उन्हें सम्मानित किया गया। 'ठाणा माहेश्वरी मंडल' को इस श्रेणी में उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिये सम्मानित किया गया। आज राजभवन, मुंबई में आयोजित इस समारोह में ठाणा माहेश्वरी मंडल के अध्यक्ष सुनिल जाजु, सचिव पराग बाहेती तथा कार्यकारीणी सदस्य ओमप्रकाश सोमानी ने इस सम्मान को स्वीकार किया। महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य राजेन्द्र तापड़िया भी इस सेवा कार्य में अग्रसर थे। उक्त जानकारी मधुसूदन गांधी ने दी।

मधु भूतड़ा को साहित्य सम्मान

जयपुर। ग्लोबल वीमन साहित्य सम्मेलन दिल्ली की ओर से गणतंत्र दिवस पर आयोजित वीडियो प्रतियोगिता में मधु भूतड़ा को ग्लोबल साहित्य गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया है। इस वीडियो प्रतियोगिता में देश भर से 47 कवि कवित्रियों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि उत्कृष्ट लेखनी एवं काव्य पाठ के लिए उन्हें परम वीर चक्र सम्मान, महात्मा गांधी गौरव सम्मान, साहित्य सारथी गौरव सम्मान, हरिशंकर परसाई सम्मान, अन्तरराष्ट्रीय साहित्य शक्ति सम्मान, झलक संस्कृति, राष्ट्र भाषा सहित्य सम्मान, अहिंसा परमो धर्मः सम्मान, स्वामी विवेकानंद साहित्य स्मृति सम्मान जैसे 300 से अधिक सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

जिला संस्थान की बैठक संपन्न

राजसमन्द। जिला माहेश्वरी संस्थान के कार्यकारी मण्डल की बैठक बामनिया कला तहसील रेलमगरा जिला राजसमन्द में गत 31 जनवरी को संस्थान अध्यक्ष अर्जुनलाल चेचाणी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। यह बैठक राजसमन्द जिला महिला संगठन एवं राजसमन्द जिला माहेश्वरी संस्थान द्वारा आयोजित की गई। बैठक के पूर्व दिवंगत राजसमन्द जिला सभा के संस्थापक अध्यक्ष इन्दरमल छापरवाल, विधायक किरण माहेश्वरी, राष्ट्रीय कवि माधवलाल दरक व जिले के माहेश्वरी समाजजनों को सामूहिक मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा में मदनलाल मालानी नाथद्वारा ने समाज को दिये गये ऋण के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। अध्यक्ष अर्जुनलाल चेचाणी ने कोरोना काल में समाज के जरूरतमंद लोगों को सभी समाजबंधुओं द्वारा दिये गये सहयोग की जानकारी प्रदान की। बैंक की कार्यवाही में बाधा होने से राजसमन्द जिला माहेश्वरी सभा का नाम बदल कर राजसमन्द जिला माहेश्वरी कर दिया गया तथा इसका रजिस्ट्रेशन भी करवा दिया गया। जिला सभा में कोषाध्यक्ष का पद खाली होने से ओम प्रकाश सोमानी नाथद्वारा को सर्वसम्मति से कोषाध्यक्ष चुना गया एवं पद की शपथ दिलाई गई।

झारखंड-बिहार युवा संगठन की बैठक संपन्न

गुलाबबाग (बिहार)। झारखंड बिहार प्रदेश युवा संगठन की प्रथम कार्यकारिणी बैठक गुलाबबाग में सम्पन्न हुई। इसमें अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के संस्कृति मंत्री राजेश, बिहार सभा के अध्यक्ष छीतरमल धुत, सचिव महेश लखोटिया, महावीर चांडक, पूर्वांचल युवा संगठन मंत्री अध्यक्ष सुमित लोहिया, सचिव मनीषा चितलांगिया, प्रदेश संस्कृति मंत्री आनंद राठी, गुलाबबाग संगठन के गोविंद लोहिया, पूर्णिया सभा के अध्यक्ष प्रदीप सारडा, लक्ष्मण बजाज आदि कई सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में संगठन को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। अध्यक्ष लोहिया ने प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा को बताया कि माहेश्वरी युवा संगठन ने देश भर में आईआईटी क्षेत्र में माहेश्वरी समाज के युवक युवतियां आगे बढ़ रही हैं। इसी को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि धनबाद आईटी सेंटर के आसपास में माहेश्वरी भवन का निर्माण किया जाएगा। इससे समाज के कमजोर परिवार के विद्यार्थियों को सुविधा मिल सकेगी। गुलाबबाग माहेश्वरी सभा सदस्य सुशील राठी एवं फारबिसगंज माहेश्वरी सभा अध्यक्ष प्रदीप राठी ने झारखंड बिहार युवा संगठन को एक-एक डेथ बॉडी फ्रीजर भी भेंट दिया गया।

रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

भीलवाड़ा। विजयसिंह पथिक नगर माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा पांचवी बार विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन महेश हॉस्पिटल के पास स्थित क्षेत्रिय समाज संस्थान में किया गया। अध्यक्ष कृष्णगोपाल मालू ने बताया कि शिविर का शुभारम्भ सांसद सुभाष बहेड़िया, विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी, नगर परिषद सभापति राकेश पाठक, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा दामोदर अग्रवाल, सुभाष मंडल अध्यक्ष रमेश राठी एवं पार्षद मधु शर्मा ने सामूहिक रूप से किया। मंत्री पुरूषोत्तम बसेर ने बताया कि शिविर में 8 जोड़ो को रक्तदान करने पर जिला मिडिया प्रभारी शिव मून्दड़ा की ओर से शील्ड प्रदान की गई। शिविर में कुल 102 रक्तदाताओ ने रक्तदान किया। रक्तदान करने वाले सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शिविर में युवा संगठन जिलाध्यक्ष प्रदीप पलोड़, नगर युवा अध्यक्ष हरीश पोरवाल, रक्त दान प्रभारी महेश जाजु, तरुण सोमानी ने रक्तदाताओ की हौसला अफजाई की।

कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

भीलवाड़ा। गुलाबबाग माहेश्वरी सभा एवं युवा संगठन द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पहले दिन माहेश्वरी सभा एवं माहेश्वरी युवा संगठन कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। अध्यक्ष सुमित लोहिया व पूर्णिया अंचल मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा ने बताया कि इन तय कार्यक्रमों के बाद शाम राजस्थानी लोक गीत और संस्कृति का कार्यक्रम आयोजन किया गया जिसके लिए बीकानेर की मानसी सिंह पनवार को बुलाया गया था। कार्यक्रम में सभा के राष्ट्रीय पूर्वांचल बिहार झारखंड के पदाधिकारी सहित समाज के अन्य समाज संगठन प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ महेश वंदना से हुआ। मंच संचालन गोविंद लोहिया व गुलाबबाग सभा के अध्यक्ष प्रदीप सारडा तथा झारखंड बिहार प्रदेश युवा संगठन अध्यक्ष सुमित लोहिया कर रहे थे। भोजन की पूरी व्यवस्था गुलाबबाग माहेश्वरी महिला मंडल ने सम्भाल रखी थी। गुलाब बाग़ युवा संगठन के अध्यक्ष गोविंद लोहिया, सचिव अरविंद बजाज, प्रदेश सांस्कृतिक मंत्री आनंद राठी, महासभा कार्यकारणी मंडल सदस्य लक्ष्मण बजाज सहित समस्त कार्यकर्ताओं का योगदान रहा।

महिला विभाग द्वारा सिलाई मशीन वितरित

हैदराबाद। माहेश्वरी समाज (महिला विभाग) हैदराबाद-सिकन्दराबाद द्वारा बेगमबाजार स्थित माहेश्वरी भवन में जरूरतमंद महिलाओं को दो सिलाई मशीनें भेंट की गई। अध्यक्षा शकुन्तला नावन्दर एवं मंत्री संतोष भंडारी ने बताया कि महिला विभाग द्वारा प्रतिमाह जरूरतमंद महिलाओं में सक्षम, सशक्त, स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सिलाई मशीनों का वितरण किया जाता है। एक मशीन लाहोटी परिवार द्वारा सौरभ लाहोटी की स्मृति में एवं दूसरी मशीन संस्था के सदस्यों द्वारा दी गई। कार्यक्रम में मंजू लाहोटी, पूष्पा बूब, पद्मा बजाज, सुशील नावन्दर, पूष्पा सावित्री दरक, माधुरी-मीना तोषनीवाल, पद्मा-सुनीता झंवर, गीता बूब आदि ने सहयोग प्रदान किया।

मेधावी प्रतिभाओं का किया सम्मान

रायपुर (छग)। छत्तीसगढ़ महेश सेवा निधि ट्रस्ट द्वारा गत 07 फरवरी को ट्रस्ट की वार्षिक सामान्य सभा एवं प्रादेशिक मेधावी विद्यार्थी प्रतिभा सम्मान का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस ट्रस्ट द्वारा 2005 से लगातार समाज की निराश्रित महिलाओं एवं बच्चों को 2,000 रुपये प्रतिमाह की सहायता राशि दी जाती है, साथ ही 12वीं कक्षा के मेधावी बच्चे जिनको 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हुए है, उन्हें 5,000 रुपये की नगद राशि एवं स्मृति चिन्ह के साथ सम्मानित किया जाता है। इसी तरह शिक्षा के विशेष क्षेत्र में जिन बच्चों ने सफलता अर्जित की है, उन्हें भी स्मृति चिन्ह के साथ सम्मानित किया जाता है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष कक्षा 12वीं से 23 बच्चों एवं शिक्षा के विशेष क्षेत्र के लिए 10 बच्चों का सम्मान किया गया। इस आयोजन में रामरतन मूंदड़ा (उत्तरप्रदेश), मोहन राठी, (दुर्ग) पूर्व उपसभापति मध्यांचल अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा एवं ट्रस्ट संस्थापक अध्यक्ष नारायण राठी (कार्यालय मंत्री) अ.भा.भा. महासभा, विट्ठल भूतड़ा (निवृत्तमान प्रदेश अध्यक्ष), सीए मनोज राठी (प्रबंध न्यासी), बालकिशन झंवर (मानद मंत्री), अजय सोमानी (वित्त सचिव), संपत काबरा (अध्यक्ष माहेश्वरी सभा रायपुर), प्रदेश पदाधिकारियों, जिलाध्यक्षों, युवा संगठन के प्रदेश अध्यक्ष रूपेश गांधी सहित 200 सदस्यों की उपस्थिति रही।

जेसी प्रीमियर लीग का आयोजन

चंद्रपुर। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जेसी प्रीमियर लीग के 10 वें संस्करण का आयोजन जेसीआई चंद्रपुर एलीट द्वारा गत 07 फरवरी को श्री महर्षि विद्या मंदिर स्कूल में किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महर्षि विद्या मंदिर के संचालक गिरीश चांडक, जेसीआई चंद्रपुर एलीट के अध्यक्ष आनंद मूंधड़ा व सचिव अनूप काबरा थे। इस प्रतियोगिता में कुल 10 टीमों ने हिस्सा लिया। टूर्नामेंट के प्रकल्प निर्देशक आशीष पोद्दार , पार्थ कंचार्लावर, कुनाल वेगड़, परीक्षित सारडा थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अनिरुद्ध पोपट, आशीष गजबे, रूपेश राठी, ऋषिकांत जाखोटिया, श्रेयस सुराणा, गौरव लाहोटी आदि सदस्यों ने योगदान दिया। इसी के साथ टूर्नामेंट का विशेष मैच जेसीआई एलीट की लेडीज विंग बनाम जेसीआई चंद्रपुर गरिमा के बीच आयोजित हुआ, जिसे जेसीआई ईलाइट की लेडीज विंग ने जीता।

वैदिक का मना जन्म शताब्दी समारोह

शाहपुरा। आर्य समाज व बेली परिवार के संयुक्त तत्वावधान में गत 31 जनवरी को श्रीमद् दयानंद महिला शिक्षण केंद्र (दयानंद उ.प्रा. विद्यालय) के प्रांगण में सिद्धांत शास्त्री स्व. रामस्वरूप वेली (वैदिक) के जन्म शताब्दी समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बेली परिवार के सदस्यों ने यजमान के रूप में बैठकर श्रद्धा से यज्ञ में आहूतियाँ दीं। मुख्य अतिथि के रूप में राजा जयसिंह (संरक्षक आर्य समाज) उपस्थित थे। अध्यक्षता वयोवृद्ध आये मनीषी हनुमान प्रसाद पुरोहित ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्रधान कन्हैया लाल आर्य उपस्थित थे।

राम मंदिर निर्माण में दिया योगदान

बैंगलुरू। राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण कार्य के लिए शुरू हुए धन संचय अभियान में माहेश्वरी सभा बैंगलुरू की ओर से भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। सुबह 10 बजे माहेश्वरी भवन के प्रांगण में एक छोटे से कार्यक्रम में माहेश्वरी सभा सदस्यों से एकत्रित की गयी राशि का चेक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पदाधिकारियों को माहेश्वरी सभा अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया, वरिष्ठ सदस्य महावीरप्रसाद काबरा, नंदकिशोर मालू, राजाराम भूतड़ा द्वारा भेंट किया गया। इस कार्यक्रम में समाज से गौरीशंकर सारड़ा, देवकीनंदन डागा, माहेश्वरी सभा उपाध्यक्ष नवलकिशोर मालू, कोषाध्यक्ष अजय राठी, समिति सदस्य संजय साबू आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सचिव भगवानदास लाहोटी ने किया।

महिला मंडल ने किया पिकनिक का आयोजन

वाराणसी। कोरोना महामारी के कारण लम्बे वक़्त से घरों के कामकाज में सिमटी समाज की महिलाओं के रंगारंग मनोरंजन के लिए सरकारी निर्देशों का अनुपालन करते हुए गत 5 फरवरी को पिकनिक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इनडोर चौपड़-पासा, छुप्पम-छुपाई, जलेबी रेस, स्पून बैलेंस रेस, म्यूजिकल चेयर, सुर-ताल हाउजी आदि प्रतियोगिताएं रखी गई। सभी प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2020 की सभी सदस्यों को स्मृति स्वरूप उपहार दिए गए। इस कार्यक्रम की संयोजिकाएँ मंजू चितलांगया, मीनू लड्ढा, शशि राठी, सुषमा कोठारी, सरोज भरानी थी । प्रबंधन कृष्णा लड्ढा, जमुना राठी ने किया । अध्यक्षता अंजू बियानी और धन्यवाद ज्ञापन संतोष मूंदड़ा ने किया । इस अवसर पर संगठन की वरिष्ठ सदस्या रतन देवी दम्माणी, सत्यवती चितलांग्या, सविता जाजू, कृष्णा भुराड़िया आदि उपस्थित थीं।

बैडमिंटन लीग टूर्नामेंट सम्पन्न

भीलवाड़ा। गुलाबबाग युवा संगठन द्वारा बेडमिंटन लीग टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इसमें झारखंड बिहार बंगाल और नेपाल की टीम ने भाग लिया।प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राज कुमार लढ़ा ने बताया कि टूर्नामेंट का उद्घाटन पुर्णिया विधायक विजय खेमका, माहेश्वरी सभा के संस्कृति मंत्री राजेश कुमार, बिहार झारखंड के अध्यक्ष छीतरमल धुत, सचिव महेश लखोटिया, महावीर चांडक व पूर्वोत्तर उपाध्यक्ष मनीषा चितलांगिया ने संयुक्त रूप से किया। मंच संचालन गुलाबबाग अध्यक्ष प्रदीप सारडा ने किया। लीग मैच के फाइनल में सिलीगुड़ी और गुलाबबाग की टीम पहुंची जिसमें सिलीगुड़ी टीम ने जीत हासिल कर फाइनल का खिताब आपने नाम किया। दोनों टीम को युवा संगठन द्वारा मैडल देकर सम्मानित किया।

करवा को पीएच.डी. उपाधि

चुरू (राज.)। सूरत निवासी एवं ताल छापर (जिला चुरू राजस्थान) प्रवासी पंकज करवा पुत्र स्व. सोहन लाल करवा को महर्षि कॉलेज ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी, उदयपुर द्वारा 'वास्तु और अंक शास्त्र का संबंध' विषय पर शोध हेतु पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। उन्हें इस उपलक्ष में गोल्ड मैडल भी मिला है। श्री करवा ने 43 वर्ष की उम्र में व्यवसायरत रहते हुए यह उपलब्धि अर्जित कर यह सिद्ध कर दिया कि पढ़ने या सीखने की कोई उम्र नही होती।

Shashikanth Mantri
GST: 36CNWPM0188C1ZO
9440730251
8374818555

Mantri Distributors

Reputed Suppliers for entire Range Cloth,
Hotels, Hospitals, Industries, Restaurants, School,
Security, Caterers, Mattress, Corporate Offices,
Various Institutions, Bed Linen, Carpet tiles, T-Shirts,
Sarees, Curtains, Upholstry, Chair Cover etc.
7-1-841, Buruguchetty Bazar, R.P. Road, Secunderabad - 500 003 T.S.
Mobile: 9440730251, Email: mantridistributors@gmail.com

माहेश्वरी प्रीमियर लीग का हुआ आयोजन

रांची। माहेश्वरी युवा संगठन रांची द्वारा टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता के आठवें संस्करण 'रौनक बजाज माहेश्वरी प्रीमियर लीग 2021' का आयोजन गत 28 से 31 जनवरी तक स्थानीय बिरसा कृषि विश्वविद्यालय मैदान में किया गया। झारखंड बिहार प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा ने बताया कि जिसमें 8 टीम ने भाग लिया। अंपायर के लिए प्रोफेशनल सेवाएं ली गई थी। फाइनल मैच मारू और बियानी मस्कीटर्स टीम के बीच खेला गया जिसमें मारू स्टनर्स ने विजय हासिल की। आयोजन के संयोजक श्याम बिहानी, विनय मंत्री एवं धीरेंद्र राठी थे। बिडिंग संयोजक अभिनव मंत्री एवं नीरज चितलांगिया थे। मैदान प्रबंधक मयंक माहेश्वरी एवं विज्ञापन प्रबंधक विकास काबरा थे। कॉमेंट्री एवं सोशल मीडिया स्कोर अपडेट्स गिरिजा शंकर पेड़ीवाल ने संभाला। अन्य सहयोगी के रूप में युवा संगठन के अध्यक्ष सौरभ साबू, सचिव अंकुर डागा, पंकज साबू, हर्षित चितलांगिया, हिमांशु चितलांगिया, कुणाल बोड़ा, हेमंत माहेश्वरी, धीरज बोड़ा सहित पूरे युवा संगठन के सदस्य आदि थे। इस टूर्नामेंट का उद्घाटन प्रदेश सभा उपाध्यक्ष राजकुमार मारू, रांची सभा अध्यक्ष शिव शंकर साबू, सचिव नरेंद्र लखोटिया, उपाध्यक्ष अनिल साबू एवं निवर्तमान प्रदेश युवा अध्यक्ष गिरिजा शंकर पेड़ीवाल ने किया। समापन सत्र में झारखंड बिहार प्रदेश माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष छीतरमल धूत (जमशेदपुर), सचिव महेश लाखोटिया (जमशेदपुर), संगठन मंत्री आदित्य मूंदड़ा (पटना), प्रदेश युवा अध्यक्ष सुमित लोहिया (गुलाबबाग), महिला संगठन अध्यक्ष भारती चितलांगिया, सचिव अनिता साबू आदि के साथ प्रदेश ट्रस्ट के पदाधिकारी विशेष रूप से मौजूद थे।

महिला संगठन का भ्रमण सम्पन्न

हैदराबाद। तेलंगाना-आंध्र-प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा पदाधिकारियों का चार दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम जूम ऐप के माध्यम से आयोजित किया गया। संस्था की अध्यक्ष उर्मिला साबू एवं सचिव रजनी राठी ने बताया कार्यक्रम के लिए प्रदेश के 19 जिलों को 4 भागों में विभाजित किया गया। जिलों का संभाग बनाकर उन्हें दर्पण, स्नेहम, सुघोष एवं चतुर्भुज नाम दिए गए। कार्यक्रम की शुरूआत भगवान उमा-महेश की वंदना, पूजा एवं अध्यक्षों के दीप प्रज्जवलित करने के साथ हुआ। उपाध्यक्ष प्रेमलता कांकाणी, शशिकला राठी, चंदा सोनी, कलावती लोया व राजकुमारी लोया ने अतिथियों का स्वागत किया। जिलों के सचिव द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। कोषाध्यक्षों ने आय-व्यय का ब्यौरा दिया। 4 दिवसीय भ्रमण में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय संरक्षक रत्नीदेवी काबरा ने भाग लिया। मुख्य अतिथि शैला कलंत्री ने सभी संगठन को मजबूत बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य करने की सलाह दी। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगराणी ने संस्था के कार्यों की सराहना की। दक्षिणांचल सहसचिव पुष्पा तोष्णीवाल की भी प्रशंसा की। प्रदेशाध्यक्ष पुष्पा तोषणीवाल ने भी सम्बोधित किया।

राम मंदिर निर्माण

RR KABEL

बड़ोदरा। सभी के आराध्य देव श्रीराम के मंदिर निर्माण कार्य का शुभारम्भ "श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट" के तत्वावधान में प्रारंभ हो चुका है। इसमें आर.आर. कॉबेल ने एक करोड़ एक लाख रुपये की राशि का चेक समर्पित कर राम-काज में योगदान दिया। यह चेक स्वामीजी गोविन्ददेव गिरिजी कोषाध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अयोध्या (उ.प्र.) को प्रेषित किया गया।

माहेश्वरी हुए सम्मानित

बठिण्डा। कोरोना महामारी के दौरान उत्कृष्ट सेवाएं देने पर बठिंडा की नौजवान वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष सोनू माहेश्वरी को पंजाब सरकार की ओर से राज्य स्तरीय सम्मान देकर सम्मानित किया गया। कोविड-19 के चलते हुए यह सम्मान विशेष रूप से उनके घर पहुंचाया जा रहा है।

लढ्ढा का किया सम्मान

फारबिसगंज। झारखंड बिहार युवा संगठन के अध्यक्ष सुमित लोहिया ने फारबिसगंज आ कर झारखंड बिहार प्रदेश सह मीडिया प्रभारी एव पुर्णिया अंचल मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा को (झारखंड बिहार माहेश्वरी समाज की खबर राष्ट्रीय तक पहुंचने पर) स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर माहेश्वरी महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष सुनीता लढ़ा, निकिता बाहेती दीपेश लढ़ा इत्यदि उपस्थित थे।

ऋतु को बेस्ट पापुलर अवार्ड

झाबुआ। स्पार्कलिंग स्टार कॉम्पिटिशन के फिनाले में झाबुआ की ऋतु सोडाणी को बेस्ट पापुलर अवॉर्ड मिला। ऋतु ने हर राउंड यूनिक और डिफरेंट अंदाज में कंप्लीट किए। 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' राउंड में डबल रोल प्ले करके एक कामवाली बाई और मालकिन दोनों का रोल किया।

समाज पंच के चुनाव सम्पन

महू। श्री माहेश्वरी समाज महू की पंचायत के पांच पंच पद के चुनाव गत 31 जनवरी को सम्पन हुये। इसमें दिनेश श्यामसुंदर सोडानी, पुरुषोत्तम दाऊलाल लोया, रमेशचन्द रामनारायण सोनी, अमित मोतीलाल बियानी, ओमप्रकाश हरिकिशन लड्ढा पंच चुने गये। इन सभी पंचो का कार्यकाल तीन वर्षों का रहेगा। निर्वाचन प्रक्रिया वरिष्ठ अधिवक्ता शेखर बुंदेला ने पूरी की। रामकिशन बाहेती व श्यामसुंदर भरानी का सराहनीय योगदान रहा है।

क्रिकेट प्रतियोगिता का किया आयोजन

हावड़ा। माहेश्वरी महिला संगठन हावड़ा व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति एवं महिला अधिकार उत्थान एवं सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत महिलाओं के चहुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए तीन दिवसीय ''पंख एक उड़ान क्रिकेट प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। हर टीम दो मैच खेल सके यह प्रतिबद्धता रखी गई। 45 वर्ष से कम और 45 वर्ष से अधिक आयु, इन दो समूहों में टीम का वर्गीकरण किया गया। एक मैच प्रतियोगिता को समर्पित करने हेतु पंख टीम ने खेला। द्वितीय दिवस भगवान शिव की वंदना के साथ सीधे खेल की ओर प्रस्थान रहा और 8 लीग मैच खेले गए। तृतीय दिवस पंख टीम द्वारा सर्वप्रथम मैच खेला गया। अधिक मैच जीतने वाली और अधिक रन रेट वाली टीम फाइनल में पहुंची। 45 वर्ष से कम आयु वर्ग मे HIGH ROLLERS VS THUNDERIRD, 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में COX QUEENS VS BLOCK BUSTER के बीच फाइनल मैच खेले गए। इसमें HIGH ROLLERS ने मैच जीतकर शील्ड पर अपना अधिकार जमाया।

बसंतोत्सव का किया आयोजन

उज्जैन। श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल गोलामंडी द्वारा मंगलनाथ मार्ग स्थित रसरंजन उद्यान में सर्वकामना सिद्धि का पर्व बसंतोत्सव मनाया गया। इसमें सभी महिलाएं एक जैसे पीले परिधान में उल्लास के साथ सजधज कर आईं। बेस्ट परिधान का पुरस्कार तेजूदेवी तोषनीवाल व माधुरी राठी को दिया गया। इसमें कोरोना काल में ऑनलाइन विभिन्न स्पर्धाएं आयोजित कराने हेतु उत्कृष्ट सेवा-कार्य के लिये अध्यक्ष हेमलता गांधी का सम्मान किया गया। सहभोज में वासंती रंग से निर्मित मिष्ठान परोसे गए। इस कार्यक्रम में उषा मूंदड़ा, संतोष सोडानी, रमा लड्ढा, ज्योति राठी, आशा तोतला, मनीषा राठी, उषा सोडानी, सीमा परवाल, गीता तोतला, प्रतिमा राठी, लीला लोया आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

कुलदेवी का मनाया वार्षिकोत्सव

भीलवाड़ा। काबरा परिवार की कुल देवी सुष्माद् माता जी का वार्षिकोत्सव आजाद नगर रामधाम के पीछे स्थित काशीपुरी वकील कॉलोनी माहेश्वरी भवन मे धूमधाम से मनाया गया। गणेश काबरा ने बताया कि कोरोना संक्रमण को ध्यान मे रखते हुए इस वर्ष मूलतः कुचेरा (नागौर) मे स्थित काबरा परिवार की कुल देवी सुष्माद् माता जी के वार्षिकोत्सव में शहर के 300 से भी ज्यादा परिवारो ने अपना योगदान दिया। सांस्कृतिक आयोजन के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र मे अव्वल रहे काबरा परिवार के छात्र छात्राओं जिनमे सीए फाऊंडेशन परीक्षा मे उत्तीर्ण कृतिका काबरा, अमन काबरा सीए इंटर परीक्षा मे उत्तीर्ण अंजली काबरा, खुशी काबरा, मानस काबरा, सीएस फाऊंडेशन परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाली स्फूर्ति काबरा तथा सीए फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्र अंकुर काबरा तथा नेहा काबरा को ब्रेन पोईंट कॉमर्स क्लासेस के संचालक सीए ललित काबरा एवं अल्पना काबरा द्वारा प्रशस्ति पत्र भेंटकर माला पहनाकर सम्मानित किया गया।

म.प्र. पश्चिमांचल पारमार्थिक न्यास की बैठक संपन्न

इंदौर। मध्यप्रदेश पश्चिमांचल माहेश्वरी पारमार्थिक न्यास के पदाधिकारी, कार्यसमिति एवं न्यासियों की साधारण सभा ओमप्रकाश भराणी की अध्यक्षता में दिनांक 26 फरवरी को 'श्री माहेश्वरी विद्यालय' छत्रीबाग, पर सम्पन्न हुई। इस बैठक में विधान संशोधन समिति घोषित की गई, जिसमें अशोक ईनानी, भरत सारडा, अशोक डागा, घनश्याम झंवर, अजय झंवर एवं आर.डी. असावा को संशोधन का ड्राफ्ट तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई।

ट्रस्ट द्वारा महिलाओं को दी जा रही, आर्थिक मदद हेतु 4 सदस्यीय समिति घोषित की गई, जिसके प्रभारी रमेशचंद्र डाढ़ को मनोनीत किया गया। अशोक डागा ने ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों की जानकारी दी। महेश मुंगड़ ने ट्रस्ट के कॉरपस फंड को बढ़ाने हेतु उपस्थित सभी ट्रस्टियों से अपील की। आगामी सत्र हेतु पदाधिकारी एवं कार्यसमिति का चयन सर्वानुमति से हुआ। जिसमें अध्यक्ष-महेश मुंगड़, सचिव-अजय सोडानी, उपाध्यक्ष - सुरेश राठी, कोषाध्यक्ष- आर.एल. माहेश्वरी, सह सचिव-सुरेश लखोटिया। कार्यसमिति सदस्य हेतु रामावतार जाजु, अशोक ईनानी, गोविंददास मोदानी, प्रकाशचंद्र बाहेती, भरत सारडा, रमेशचंद्र डाढ़, अजय झंवर, घनश्यामदास झंवर, सत्यनारायण राठी, वेणुगोपाल असावा, रामनिवास मंत्री, बी. डी. भट्टड़, गोरीशंकर लखोटिया, श्याम सारडा, शेलेष मुंदड़ा, पदेन सदस्य, ओमप्रकाश भराणी, अशोक डागा का चयन किया गया। अंत में अजय झंवर द्वारा सभी चयनित पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों को बधाई देते हुये सभी का आभार व्यक्त किया।

मध्य उ.प्र. महिला संगठन की गतिविधि

कानपुर। मध्य उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा दिसम्बर एवं जनवरी माह में सतत रूप से विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ के आशीर्वचनों से कार्यकारिणी बैठक सुकृति का शुभारम्भ हुआ। गत 15 दिसम्बर को आयोजित इस बैठक में पूर्व अध्यक्ष सुशीला काबरा द्वारा विषय "अपने संस्कार अपनी धरोहर" पर ज्ञान वर्धक वक्तव्य दिया गया। समिति प्रभारी कलावती जाजू ने शुभकामना संदेश दिया। मैनपुरी की डॉ. श्रुतिका जाजू द्वारा दांतों की देखभाल कम खर्चों में कैसे की जाए इसकी जानकारी दी गई। राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन समिति द्वारा आयोजित "बंधन प्यार का" एवं कम्प्यूटर समिति द्वारा "कल आज और कल" एवं पर्व संस्कृति समिति के आयोजन में प्रदेश की महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। साहित्य समिति द्वारा आयोजित जागृति कवि सम्मेलन में सचिव अर्चना झंवर द्वारा राजनीति पर करारा व्यंग्य कर स्वरचित कविता पठन किया गया। बाल विकास समिति द्वारा आंचलिक स्टार पर आयोजित अश्विका कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। सक्रांति के शुभ अवसर पर अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के आह्वान पर प्रदेश द्वारा 11 हजार रुपये की धनराशि का सहयोग दिया गया। कोलकाता स्थित केंद्र में शारीरिक और मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों को चिप्स, लड्डू, बिस्कुट, मास्क, सैनिटाइजर आदि बांटे गए। 20 जनवरी को प्रदेश की तरफ से रतनपुर स्थित स्वराज वृद्ध आश्रम में हीटिंग पैड बांटे गए। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ एवं राष्ट्रीय प्रभारी प्रेमा झंवर आदि उपस्थित थी। पीपीटी प्रेजेंटेशन में प्रदेश ने डायमंड केटेगरी में स्थान प्राप्त किया। उरई के 5 वर्षीय बालक को गीता पठन में प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ।

बागड़ी की विशेष डाक टिकट प्रकाशित

नागपुर। भारतीय डाक विभाग माय स्टँप योजना के अंतर्गत समय-समय पर समाज में विभिन्न क्षेत्रों में अति विशिष्ट कार्य करने वाले नागरिकों को प्रौत्साहन देने हेतु उन महानुभावों के डाक टिकट प्रकाशित करता है। इसी श्रृंखला में भारतीय डाक विभाग ने 27 जनवरी 2021 को क्रमांक डी-043093 अंतर्गत शरद गोपीदास बागडी के लेखन, चिंतन व सामाजिक कार्यो की सराहना व प्रोत्साहित करने हेतु विशेष डाक टिकट प्रकाशित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री बागड़ी समाजसेवा व लेखन के क्षेत्र में अभी तक कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

L.K. Chandak 93913 84709
P.K. Nyati 94907 54216

SRI RAMA MARBLEX
ALL KINDS OF RAJASTHAN MARBLES & GRANITES

Exclusive White Marble

Plot No. 21, Opp. Andhra Bank, Nagole, Hyderabad - 500068. (T.S)
Mob. 95813 07477

सलाह के सौ शब्दों से ज्यादा अनुभव की एक ठोकर इंसान को... बहुत मजबूत बनाती है...

गणतंत्र दिवस का हुआ आयोजन

जयपुर। गणतंत्र दिवस 'दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज' के तत्वावधान में एम.एच.एस. के प्रांगण में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि परम रोहित साबू, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एन.बी.सी. ने ई.सी.एम.एस. अध्यक्ष प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा नटवरलाल अजमेरा के साथ ध्वजारोहण कर तिरंगे को सलामी दी। मुख्य अतिथि रोहित साबू (प्रेसिडेन्ट एण्ड सी.ई.ओ., नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड), ई.सी.एम.एस. के अध्यक्ष प्रदीप बाहेती तथा महासचिव शिक्षा नटवरलाल अजमेरा थे। समारोह में ध्वजारोहण कर राष्ट्र के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए ई.सी.एम.एस. द्वारा संचालित एम.पी.एस जवाहर नगर, एम.जी.पी.एस विद्याद्यर नगर और एम.एच.एस तिलक नगर के एन.सी.सी. कैडेट्स ने परेड प्रस्तुत की एवं एम.पी.एस इंटरनेशनल ने बैंड वादन की प्रस्तुति की।

पौधारोपण कर मनाया राष्ट्रीय पर्व

उज्जैन। श्री माहेश्वरी महिला मंडल नरसिंह मंदिर द्वारा गत गणतंत्र दिवस को वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षीरसागर बालोद्यान में विभिन्न प्रकार के फूलों एवं औषधीय पौधे लगाए गए। इस अवसर पर भारती कोठारी, पुष्पा भलिका, मंगला बांगड़, नर्मदा सारदा, रेखा काबरा, पुष्पा कोठारी, तारा कोठारी इत्यादि महिला मंडल सदस्याऐं उपस्थित थीं। उक्त जानकारी अध्यक्ष रेखा लड्ढा एवं सचिव उषा भट्टड़ ने दी।

महेश सेवा संस्थान के चुनाव संपन्न

आकोला। महेश सेवा संस्थान में कोटड़ी तहसील माहेश्वरी समाज के चुनाव अधिकारी तेजकरण बहेड़िया, के निर्देशन में संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष चांदमल काबरा, उपाध्यक्ष गोपालकृष्ण पोरवाल, मंत्री राजेंद्रकुमार काबरा, कोषाध्यक्ष कैलाशचंद्र गगराणी, संगठन मंत्री जगदीशचंद्र बांगड़ व सहमंत्री प्रहलाद काबरा चुने गये। कार्यकारिणी सदस्यों का भी निर्विरोध निर्वाचन हुआ।

गणतंत्र दिवस पर किया झंडा वंदन

नागदा। माहेश्वरी समाज द्वारा गणतंत्र दिवस पर माहेश्वरी भवन पर झंडा वंदन समाज के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा किया गया। इसमें महिला मंडल, माहेश्वरी सोशल ग्रुप व माहेश्वरी युवा ग्रुप के सभी सदस्य उपस्थित थे। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। समाज के अध्यक्ष रमेश मोहता, जगदीश भूतड़ा, बंशीलाल राठी, घनश्याम राठी, गोपाल बजाज, गोविंद मोहता, मनोज राठी, राजेंद्र मालपानी, महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति मालपानी, सुनीता राठी, सीमा मालपानी, विपिन मोहता, अशोक बिसानी आदि समाजजन उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि

श्री केदारनाथ माहेश्वरी

जयपुर। वरिष्ठ समाजसेवी एवं शिक्षाविद् श्री केदारनाथ माहेश्वरी (चांडक) का गत 5 दिसंबर को 92 वर्ष की अवस्था में जयपुर में देहावसान हो गया है। वर्ष 1988 में शिक्षा विभाग, राजस्थान के उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात आप दो सत्रों में 1992 तक दी एजुकेशन कमेटी ऑफ माहेश्वरी समाज जयपुर (ECMS) द्वारा संचालित प्रमुख शिक्षण संस्थान माहेश्वरी हायर सेकेंड्री स्कूल, तिलक नगर के संयुक्त शिक्षा सचिव रहे। सरकारी विद्यालयों को गोद लेकर उनके नवनिर्माण और शैक्षणिक उन्नयन के महत्वपूर्ण कार्य के लिए शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा आपको 2016 में भामाशाह सम्मान से विभूषित किया गया। आपके बड़े पुत्र जस्टिस दीपक माहेश्वरी राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश रह चुके हैं। आपके जवाहरात व्यवसायी छोटे पुत्र संजय माहेश्वरी समाज, जयपुर के निवर्तमान महामंत्री हैं।

श्रीमती कृष्णादेवी देवपुरा

उज्जैन। समाजसेवी श्री माहेश्वरी थोक पंचायत ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष नृसिंह देवपुरा की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णादेवी देवपुरा का गत 15 फरवरी 2021 को देवलोकगमन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की थी तथा माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत महिला मंडल की अध्यक्ष रहीं थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई हैं।

शिखा बनी सीए

अंबाजानगर (गुज.)। शिखा ईनाणी सुपुत्री विनोद एवं मीना ईनाणी ने इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टेड एकाउंटेंट द्वारा आयोजित सीए फाइनल 2021 परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर सभी स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

प्रियल बनी सीए

भाटापारा। समाज सदस्या प्रवीण प्रतिभा राठी की सुपुत्री प्रियल ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

पुलकित बने सीए

ताल (जिला रतलाम)। समाज की प्रतिभा पुलकित प्रफुल्ल सोमानी ने सीए इंटर के दोनो ग्रुप की परीक्षा प्रथम प्रयास में ही 60% अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

सलौनी बनी सीए

भीलवाड़ा। सलौनी डाड-सुपुत्री सीए संजय व रीना डाड तथा सुपौत्री महेश प्रगति संस्थान के अध्यक्ष सत्यनारायण डाड ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की।

पलक बनी सीए सीएस

दिल्ली। प्रसिद्ध ख्यात सीए अतुल माहेश्वरी एवं -पूनम माहेश्वरी की सुपुत्री पलक माहेश्वरी (आगीवाल) ने सीए व सीएस दोनों परीक्षा इसी वर्ष उत्तीर्ण की। उल्लेखनीय है कि पलक उज्जैन के प्रतिष्ठित समाजसेवी आर.आगीवाल की सुपौत्री है। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

आदित्य सीए इंटर उत्तीर्ण

उदयपुर (राज.)। समाज सदस्य मुकेश कुमार व गायत्री देवी झंवर के आत्मज आदित्य ने सीए इंटर की परीक्षा 239 अंकों से उत्तीर्ण की।

सीए बनी रक्षा

भीलवाड़ा। रक्षा जागेटिया-सुपुत्री केदार व सीमा जागेटिया भीलवाड़ा ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की।

रिषभ मूंधड़ा सी.ए. फाउंडेशन उत्तीर्ण

मालेगांव। सुमिता एवं राजकुमार मूंधड़ा के सुपुत्र रिषभ मूंधड़ा ने सी.ए. फाउंडेशन की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। बी.कॉम द्वितीय वर्ष के छात्र रिषभ अब सी.ए. इंटरमीडिएट की तैयारी कर रहे हैं।

प्रथम प्रयास में सीए बने रवि

भीलवाड़ा। विजयसिंह नगर निवासी रवि शारदा ने सीए फाइनल की परीक्षा पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण कर ली। सीए प्रदीप व अध्यापिका रेखा शारदा के पुत्र रवि ने वर्ष 2017 से मुंबई में दो साल इंटर्नशिप की व ऑल इंडिया 50वीं रैंक प्राप्त की।

साहिल सीए फाउण्डेशन में अव्वल

नांदुरा। साहिल डागा ने सीए फाउंडेशन में अकोला में प्रथम टॉपर स्थान प्राप्त कर सफलता प्राप्त की। साहिल स्थानीय रोशन कुमार डागा एवं रश्मि डागा के सुपुत्र एवं विट्ठल दास डागा बुलढाणा जिला माहेश्वरी समाज के उपाध्यक्ष एवं शांता देवी नांदुरा नगर परिषद पूर्व नगराध्यक्ष के सुपौत्र हैं।

गोविंद बने सीए

भीलवाड़ा। गोविंद तोषनीवाल सुपुत्र चंदा व रमेश तोषनीवाल ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की।

शुभी बनी सीए

आगर-मालवा। शुभी सुपुत्री संदीप माहेश्वरी (लड्ढा) ने पुणे (महाराष्ट्र) में अध्यनरत रहते हुए इंस्टीट्यूट आफ चार्टेड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित सीए फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण कर चार्टेड अकाउंटेंट की डिग्री हासिल की। इस सफलता पर परिवार, इष्ट मित्र एवं समाजजनो ने हर्ष व्यक्त किया।

अपने हौसलों को ये खबर करते रहो, कि...
ज़िंदगी मंज़िल नहीं सफर है, चलते रहो...

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Registration Free

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agrawal2agrawal.org

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

वर्तमान में डिजिटल दुनिया ''नेट में प्रोटेक्टर एंटी वायरस'' (NPAV) एक ऐसी ब्राण्ड का नाम है, जो अपने आप में हमारे कम्प्यूटर या लेपटॉप की सुरक्षा का पर्याय बन चुका है। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि इसकी सौगात देने का श्रेय भी माहेश्वरी नारी पुणे निवासी शैला केला को जाता है, जिन्होंने अपने पति के साथ मिलकर इसकी सौगात देश को दी।

■ टीम SMT

NPAV की सौगातदाता शैला केला

वर्तमान में NPAV का लोगों ''पीसी का डॉक्टर्स'' अपने आप में इसके उद्देश्य का परिचायक बना हुआ है, ''डिजिटल लाइफ की सुरक्षा''। वर्तमान में एंटी वायरस के क्षेत्र में अपनी विश्वसनीयता के कारण NPAV मार्केट लीडर बना हुआ। डिजिटल उपकरण कम्प्यूटर, लैपटाप आदि का उपयोग करने वाले हों या फिर व्यवसायी उनके लिये डिजिटल सुरक्षा के मामले में यह विश्वास के शिखर पर ही है। शुरूआत से ही पुणे निवासी शैला केला इसको समर्पित भाव से सफालता के शिखर पर पहुचाने में जुटी हई है।

ऐसे हुई थी जीवन की शुरूआत

श्रीमती केला का जन्म अकोला के ऐसे प्रतिष्ठित मोहता परिवार में हुआ था, जिसने कई जज, हाईकोर्ट एडवोकेट, तथा डॉक्टर्स आदि की सौगात दी। फिर नागपुर में रहते हुए होम साइंस में युनिवर्सिटी रेंकर के साथ बेचलर उपाधि तथा डायटीशियन में पीजी कोर्स टॉपर के रूप में पूर्ण किया था। वे न सिर्फ पढ़ाई में ही आगे थी, बल्कि बचपन से खेलकूद में भी उनका विशेष रूझान रहा। स्कूली शिक्षा के दौरान श्रीमती केला स्टेट लेवल नेशनल हॉकी टीम उपाध्यक्ष तथा एथलेटिक्स खिलाड़ी रहीं। बचपन से उनके अंदर कुछ नया करने की इच्छा अवश्य थी ओर वह भी पूर्ण ऊर्जा के साथ।

ऐसे मिली NPAV की सौगात

श्रीमती केला का विवाह नासिक के प्रतिष्ठित केला परिवार के संजीव केला के साथ हुआ तो जैसे उनके सपनों को पंख ही लग गये। उन्होंने व्यवसाय की कमर्शियलय साइड को समझने के लिये टेक्सेशन लॉ में डिप्लोमा किया। फिर वर्ष 1989 में पति संजीव केला के साथ मिलकर ''कम्प्यूटर डोमेन'' जैसे बिल्कुल नये व्यवसाय की शुरुआत की। इस व्यवसाय में भी नये-नये प्रयोग करने लगीं। यही प्रयोग वर्ष 2004 में उनके स्वयं का ब्राण्ड एंटी वायरस ''नेट प्रोटेक्टर एंटीवायरस'' की शुरूआत के रूप में सामने आया। इसको उन्होंने पति संजीव व उनके भाई सुमित केला के साथ मिलकर प्रारम्भ किया था, जो वर्तमान में इस व्यवसाय में डायरेक्टर के रूप में सेवा दे रहे हैं। इस डिजिटल दौर में NPAV विश्वप्रसिद्ध ब्राण्ड बन चुका है ।

कई मौकों पर खरा उतरा NPAV

औपचारिक शुरुआत तो NPAV की वर्ष 2004 में हुई थी, लेकिन इसकी विकास यात्रा 30 वर्ष से कम नहीं है। इस दौरान डिजिटल सुरक्षा को लेकर NPAV को कई अंतर्राष्ट्रीय चेक मार्कस प्रमाण पत्र तथा आईएफओ प्रमाण पत्र प्राप्त हुए। वर्तमान में इसके 25 हजार से अधिक चेनल पार्टनर्स तथा करोड़ों यूजर्स हैं। NPAV सामान्य रूप से वायरस, मॉलवेयर्स आदि से डिजिटल उपकरणों की सुरक्षा तो करता ही है, साथ ही Wanna Cry, Tflower आदि खतरनाक वायरस व मॉलवेयर आदि को भी डिटेक्ट कर इससे सुरक्षा में खरा उतर चुका है। इसकी सेवाओं में वर्तमान में डाटा बैकअप, रेनसमवेयर प्रोटेक्शन, पेरेन्टल कंट्रोल, सेफ बैंकिंग, एंटिफिशिंग, एंटीमालवेयर, स्पायवेयर, टेली बैकअप, रूटफिट आदि सुरक्षा शामिल है।

परिवार की जिम्मेदारी में भी समर्पित

इस व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद श्रीमती केला अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी बखूबी निभा रही हैं। वर्तमान में उनके परिवार में एक बेटा व एक बेटी हैं। बेटे आदित्य फिजिक्स में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर जर्मनी में वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत रहे व वर्तमान NPAV में ही रिसोर्स एण्ड डेवलपमेंट के हेड है। पुत्री श्रेया इंजीनियरिंग में स्नातक कर NPAV पुणे में सॉफ्टवेयर डेवलपर के रूप में कार्यरत हैं। उनका केला परिवार मूलरूप से वर्तमान में भी संयुक्त परिवार के रूप में साथ-साथ ही है।

भारतीय नारी आमतौर पर वैसे ही आत्मनिर्भर नहीं होती और ऐसे में भी यदि वह मनोरोगों से गुजर रही हो तो फिर उसकी स्थिति कितनी विकट हो जाती है, यह कल्पना करना भी मुश्किल है। ऐसी ही महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये कार्य कर रही हैं, वाराणसी की समाजसेवी मोहिनी झंवर।

■ टीम SMT

नारी सशक्तिकरण की ज्योति

मोहिनी झंवर

बनारस में ''देवा फाउंडेशन'' का नाम जुबान पर आते ही हर कोई उसकी सेवाओं के सामने नत मस्तक हो जाता है। इसमें भी यदि महिलाओं की बात की जाए तो उनके लिये तो एक तरह से यह सशक्तिकरण के मंदिर से कम नहीं है। यह ट्रस्ट महिलाओं को स्वरोजगार प्रशिक्षण प्रदान कर आत्मनिर्भर तो करता ही है, साथ ही अन्य सहयोगी संस्थाऐं बौद्धिक रूप से किन्हीं परेशानियों से जूझ रही महिलाओं की चिकित्सा तथा उनके पुनर्वास के लिये भी काम कर रही है। मानवता के प्रति समर्पित इस संस्था की शुरुआत की है, बनारस निवासी समाजसेवी मोहिनी झंवर ने और उनके नेतृत्व में ये अपना सफलतापूर्वक योगदान दे रही है।

जीवन किया मानवता को समर्पित

श्रीमती झंवर का जन्म राजस्थान की धरा पर 5 जुलाई 1973 को हुआ था। 30 जनवरी 1996 को मनोचिकित्सक डॉ. वेणुगोपाल झंवर के साथ विवाह के पश्चात् आपकी कर्मभूमि बनारस (उ.प्र.) हो गई। बी.कॉम. सी.ए. (इंटर) तथा एम.बी.ए. तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी श्रीमती झंवर के मन में जो परम मानवीय संवेदनाऐं उमड़ रही थीं, जिन्होंने उन्हें समाजसेवा की ही राह दिखाई। मानसिक स्वास्थ्य व महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य करने के लिये 15 जनवरी 2012 को ट्रस्ट ''देवा फाउंडेशन'' का गठन किया। वर्तमान में आप इसकी ट्रस्टी तथा सीईओ हैं। यह ट्रस्ट अपने दो वाराणसी, एक खजुराहो तथा एक कानपुर में स्थित व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों ''सम्बल'' द्वारा महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर आत्मनिर्भर कर रहा है। श्रीमती झंवर के निर्देशन में कार्यरत सम्बल-महिला सशक्तिकरण हेतु एक वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर है, जो अभी तक 70 हजार से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर कर चुका है।

महिला पुनर्वास पर भी केन्द्रीत

देवा फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य मानसिक विकलांगता पर कार्य करना है। इसी उद्देश्य के साथ श्रीमती झंवर ने अपनी मुख्य परियोजना 'अन्विता' का आरम्भ सन 2016 में मिर्ज़ा पुर जिले के चुनार शहर से किया। अन्विता में प्रवेश के बाद मानसिक मंदित/विक्षिप्त महिलाओं व बालिकाओं की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के साथ साथ कुशल मनोचिकित्सकों तथा काउंसलर द्वारा उनको परामर्श तथा उचित इलाज प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही उनको विशेष शिक्षा, योग तथा अन्य क्रिया-कलापों की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है। 'अन्विता'- विशेषीकृत बालिका/महिला गृह में भी सम्बल द्वारा चलाये जा रहे विविध प्रकार के रोजगार परक प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है। पिछले चार वर्षो से यह परियोजना महिला एवं बालकल्याण विभाग, उत्तरप्रदेश के प्रतिनिधित्व में चल रही थी। 'अन्विता'- विशेषीकृत बालिका/महिला गृह चुनार मिर्ज़ापुर के उत्कृष्ट कार्यो को देखते हुए ही 'अन्विता'- विशेषीकृत बालिका/महिला गृह गौतम बुद्ध नगर नोएडा तथा वाराणसी की भी ज़िम्मेदारी महिला एवं बालकल्याण विभाग, उत्तरप्रदेश ने देवा फ़ाउंडेशन को ही सौंपी है। कुशल मनोचिकित्सकों तथा काउंसलर के परामर्श तथा उचित इलाज द्वारा अभी तक अन्विता के विशेषीकृत गृहों से कुल प्रवेशित 350 महिलाओं व बालिकाओं में से लगभग 150 महिलायें व बालिकायें पूर्णतया स्वस्थ हो गई तथा लगभग 100 महिलाओ व बालिकाओ को वापिस उनके परिवार में पुनर्वासित भी किया जा चुका है।

सेवा ने दिलाया सम्मान

श्रीमती झंवर ''देवा फाउंडेशन-मिशन फॉर मैन बाइंड '' को ट्रस्टी व सीईओ, ''अन्विता-ऐन-ऑल वूमेन रीहेबिलीटेशन सेंटर'', देवा इंस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ केयर एण्ड रिसर्च प्रा.लि. तथा वोकेशन ट्रेनिंग केन्द्र सम्बल'' को निदेशिका के रूप में सेवा दे रही है। वर्ष 2016 से लगातार श्रीमती झंवर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की ''आन्तरिक शिकायत कमेटी'' की निर्वाचित सदस्या हैं। श्रीमती झंवर मानवता को समर्पित अपनी सेवाओं के लिये एच.टी. वुमन अवार्ड के लिये नामित हैं तथा विशाल भारत संस्थान द्वारा नेताजी सुभाषचंद्र बोस नेशनल अवार्ड, उद्गम उत्कृष्ट पुरस्कार - 2016, काशी शक्ति अवार्ड-2016, आई.सी.सी.आई द्वारा एफ.एल.ओ वुमन अवार्ड ऑफ उ.प्र., हिन्दुस्तान टाईम्स (2014) द्वारा अनोखी क्लब स्टार प्लस अवार्ड, रेडियो मिर्ची द्वारा मिर्ची लेडी एचिवर्स अवार्ड, ईस्टर्न अवार्ड तथा आईसीएआई वाराणसी द्वारा सीआईआरसी आदि कई पुरस्कारों द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं।

गिफ्ट और वह भी ऐसा जो आकर्षक होने के साथ-साथ पर्यावरण के लिये भी हानिकारक न हो तो वास्तव में ''सरप्राईज'' ही कहा जाऐगा। ऐसे ''सरप्राइज'' को ही अपना कॅरियर बनाकर अपने स्टार्टअप को शिखर की ऊँचाई दे रही हैं, जयपुर निवासी पिंकी माहेश्वरी अपनी माँ शारदा डागा के साथ। एक पेपर बेग से उन्होंने शुरूआत की थी और आज 1200 से अधिक पेपर प्रोडेक्ट बना रही हैं।

''सरप्राइज'' की रचनाकार बनी माँ-बेटी

शारदा डागा पिंकी माहेश्वरी

टीम SMT

जयपुर निवासी नवल डागा वर्तमान में पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रहे एक ऐसे व्यवसायी के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिन्होंने अपना अपना सिर्फ व्यवसाय ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन ही पर्यावरण को समर्पित कर दिया है। अब उनसे ही प्रेरित एम.बी.ए. तक उच्च शिक्षित उनकी बेटी पिंकी भी उन्हीं के पदकमलों पर चलते अपने स्टार्टअप ''सरप्राइज समवन'' द्वारा सरप्राइज की सौगात दे रही है। एमबीए करने के बाद पिंकी एक ग्लोबल एडवरटाइजिंग कंपनी में लगभग आठ साल तक काम करती रहीं और फिर जयपुर में भी दो साल तक काम किया। शादी होने और फिर मां बनने के बाद उन्होंने फैसला किया कि अब वह नौकरी नहीं करेंगी और खुद का ही कोई काम करेंगी। पिंकी बताती हैं, नौकरी छोड़ने के कुछ महीने बाद मेरे एक साथी ने मुझसे हाई प्रोफाइल कुछ मेहमानों के लिए हैंडमेड वेलकम कार्ड्स बनाने के लिए कहा। चूंकि मैं जॉब के दौरान क्रिएटिव काम से जुड़ी हुई थी, इसलिए उन्हें मेरी रुचि के बारे में पता था। तब मैंने कुल 150 मेहमानों के लिए कार्ड्स बनाए। उन कार्ड्स को काफी पसंद किया गया। हालांकि, मैंने पैसे के लिए काम नहीं किया था, लेकिन बाद में मुझे उस काम के लिए 15 हजार रुपए मिले, जिसकी मैंने उम्मीद भी नहीं की थी। मुझे यहीं से प्रेरणा मिली और मैं कुछ अलग करने की कोशिश में लग गई।

माँ बनी व्यवसाय की सहयोगी

क्राफ्ट में रुचि बचपन से थी, इसलिए मैंने इकोफ्रेंडली पेपरबैग, गिफ्ट रैपर, आमंत्रण कार्ड वगैरह बनाने का काम शुरू किया। पिंकी ने बताया कि मैंने अपनी मां शारदा डागा के साथ मिलकर 2015 में ''सरप्राइज समवन'' स्टार्टअप की शुरुआत की। पेड़ बचे रहें, इसलिए मैंने कपड़ों से पेपर बनाने का काम शुरु किया और फिर उससे गिफ्ट रैपर या बैग बनाने लगी। आइडिया डेवलप करने का काम मैं खुद देखती हूँ, लेकिन एग्जीक्यूशन और हिसाब-किताब का काम मां संभालती हैं। वर्तमान में इस स्टार्टअप से 39 आर्टिस्ट और 19 टीम मेंबर्स जुड़े हैं। कुछ स्कूल-कॉलेजों के संपर्क में हूं, क्योंकि वहां से पुरानी फाइलें, जो रद्दी फैंक दी जाती है, उसे इकट्ठा करके हम

फिर से इस्तेमाल लायक बनाने की सोच रहे हैं। फिलहाल इस पर मेरा रिसर्च वर्क चल रहा है। मेरा स्टार्टअप सेल्फ-फंडेड है। सेल से जो भी पैसा आता है, उसे आगे प्रोडक्ट डेवलपमेंट पर खर्च कर दिया जाता है। फिलहाल ये वेंचर सिर्फ ऑनलाईन उपलब्ध है और मार्केटिंग के लिए कंपनी सोशल मीडिया प्लेटफार्म का इस्तेमाल कर रही है। सबसे खास बात यह है कि भारत सरकार द्वारा देश के शीर्ष 50 स्टार्टअप में मुझे शामिल किया गया है। वर्तमान में पिंकी को देश के प्रतिष्ठित आईआईएम से इंटरप्रेन्योरशिप की पढ़ाई के लिये शत प्रतिशत स्कालरशिप प्राप्त हुई। वर्तमान में उनकी उपलब्धियों को देखते हुए शासन की ओर से एमएसएमई/एनएसआईसी में इंटरप्रेन्योरशिप पढ़ा रही हैं और अभी तक 25 बेचेस पढ़ा चुकी हैं।

कैसे हैं उनके उत्पाद

इन गिफ्ट्स की खास बात यह है कि आप गिफ्ट का इस्तेमाल करने के बाद उसे पौधे के बीज के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं और पौधा उगा सकते हैं। स्टार्टअप के सभी प्रोडक्ट्स रिसाइकिल्ड पेपर्स से बने होते हैं और उनमें बीज (सीड्स) मौजूद होते हैं। कॉटन रैग्स और वेस्ट कॉटन की मदद से भी रिसाइकिल्ड पेपर तैयार करते हैं। इसी तरह सीड पेंसिल्स भी हैं। ये पेंसिल्स 100 प्रतिशत बायो-डिग्रेडेबल हैं और इन्हें भी रिसाइकिल्ड पेपर और पुराने न्यूजपेपर्स की मदद से तैयार किया जाता है। इरेजर की जगह पर इन पेंसिल्स में सीड कैप्सूल लगे होते हैं। पेंसिल का इस्तेमाल खत्म हो जाने पर आप इन कैप्सूल्स को मिट्टी में रोप सकते हैं। इन्हें पानी वगैरह उपलब्ध कराएं, तो दो हफ्तों के भीतर इनके अंदर के बीज बढ़ने लगेंगे।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना भी लक्ष्य

पिंकी के पिता नवल डागा का मानना है कि बचपन से ही इसका खिलौना ही कागज, पेंसिल, चाकू, फेविकोल जैसी चीजें रही हैं, इसी से क्रिएटिव समान बनाना शौक रहा है। हमेशा से एक नयी सोच और नये जुनून ने इसे इस मुकाम पर पहुंचाया है। टॉप 50 स्टार्टअप इंडिया में अपनी पहचान बनाने वाली इनकी कम्पनी ऐसे तबके की महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करा रही है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की बेहद गरीब, विधवा, तलाकशुदा, घरेलू औरतें हैं, जिनके लिये छत के नीचे पंखे में बैठकर काम करना भी जीवन का आशीर्वाद है। ऐसी महिलाओं को निरंतर सक्षम बना कर उन्हें मूलभूत जीवन की सुविधाएं मुहैया करा कर देश के लिये वे बहुत बड़ा योगदान दे रही हैं। भारत अच्छी गुणवत्ता के कागज आयात करता है, उसे भी यहीं पर तैयार करवा कर काम में लेना भारतीय स्तर पर सचमुच बड़ा सराहनीय कदम है।

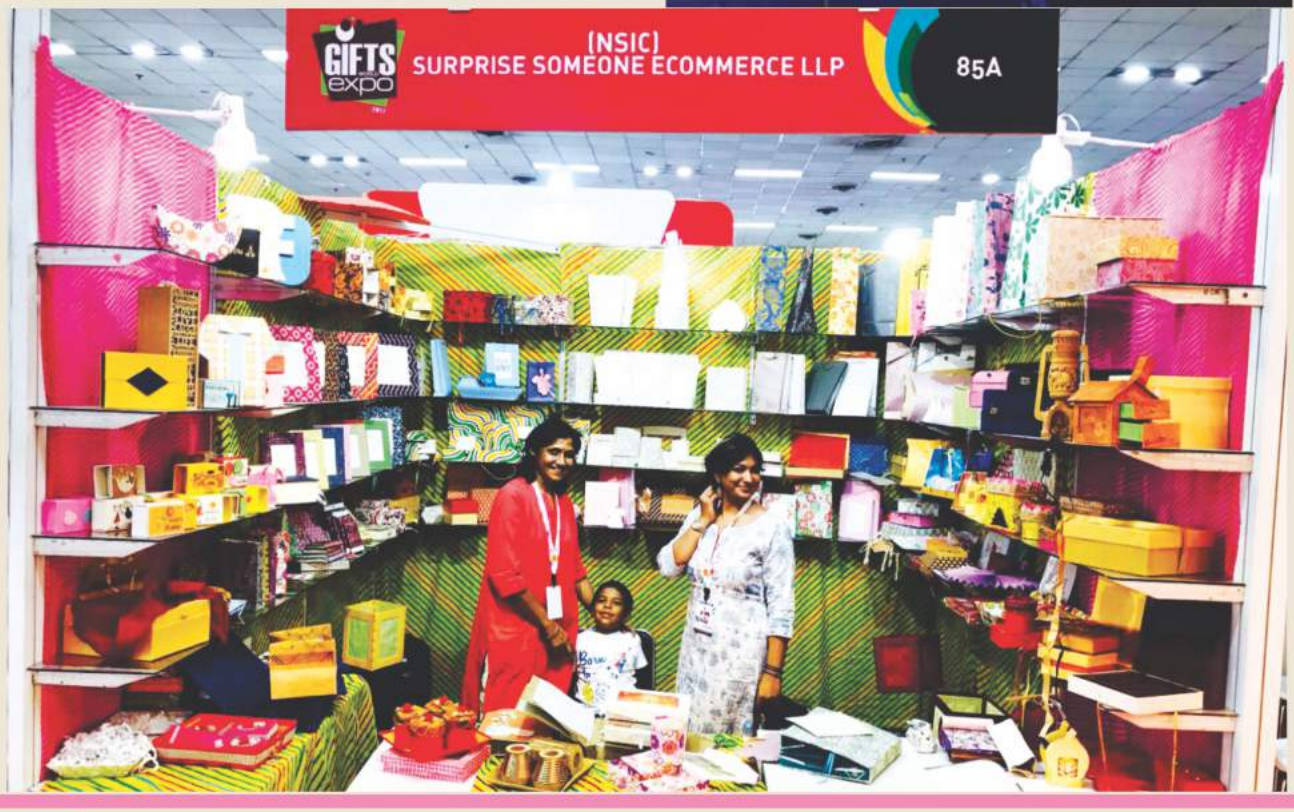

शिक्षा तभी सही ढंग से मानव का निर्माण कर सकती है, जब उसमें नैतिक मूल्यों का समावेश भी हो। अन्यथा इसके बिना तो सिर्फ मशीनों का निर्माण हो सकता है, इंसानों का नहीं। इसी सोच के साथ ''हेमा फाउण्डेशन'' द्वारा नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाने में जुटी हैं, मुंबई निवासी सी.ए. सुशील माहेश्वरी की धर्मपत्नी अनिता माहेश्वरी।

■ टीम SMT

नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाती अनिता माहेश्वरी

राजस्थान के जयपुर में एक माहेश्वरी परिवार में जन्मी अनिता माहेश्वरी ने स्कूली शिक्षा के बाद राजनीति विज्ञान में डिप्लोमा किया। कत्थक नृत्य में प्रवीण होने के साथ वे रंगमंच की बेहतर कलाकार भी रहीं। वर्तमान में मुंबई निवासी श्रीमती माहेश्वरी नैतिक मूल्यों के साथ शिक्षा के कायाकल्प में जुटी एक ख्यात समाजसेवी के रूप में जानी जा रही हैं। शिक्षक के साथ साथ घर में माता पिता, भाई बहन और समाज द्वारा भी समय समय पर सामाजिक संस्कारों की प्रक्रिया चलती रहती हैं। इस प्रक्रिया पर शिक्षा के प्रारंभ काल में ही ध्यान केंद्रित किया जाये तो एक सुसंस्कारित पीढ़ी का निर्माण होता है। इसी सूत्र के आधार पर 'राम रत्ना ग्रुप' की सामाजिक इकाई 'हेमा फाउण्डेशन' की स्थापना 25 जून, 2016 को की गई। 'हेमा फाउण्डेशन' विविध अभिनव उपक्रमों के माध्यम से छोटे बच्चों को उनकी संवेदनशील आयु में संस्कारित करने एवं राष्ट्र के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का बोध करवाने हेतु प्रयासरत है। अनिता माहेश्वरी हेमा फाउंडेशन की ट्रस्टी एवं क्रिएटिव डायरेक्टर हैं।

कैसे कार्य करता है फाउण्डेशन

फाउण्डेशन अपने लक्ष्यों की पूर्ति में पूर्ण मनोवैज्ञानिक साधनों का उपयोग कर रहा है। दृश्य-माध्यमों का सर्वाधिक प्रभाव होता है, जिसे ध्यान में रखते हुए भावनात्मक व वैज्ञानिक पहलू से ही जीवनमूल्यों, जैसे- सत्य, साहस, समय पालन, संस्कृति, दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास, आशा-जैसे 48 मूलभूत विषयों का चयन कर उन पर प्रभावी लघु फिल्मों का निर्माण कर विद्यालयों तक पहुंचाया गया है। साथ ही इन प्रासंगिक विषयों पर उपयुक्त अन्तःप्रतिक्रिया, कथा-कथन, चर्चा-सत्र, उसके बाद फिल्म प्रदर्शन, जो बच्चों के दिल और दिमाग में विशिष्ट मुद्दों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने की प्रक्रिया का निर्माण करता है। उनके अथक प्रयास से वर्तमान में नैतिक शिक्षा का यह उपक्रम मुंबई, पुणे, गुलबर्गा, अहमदनगर, संगमनेर - जैसे महाराष्ट्र एवं आंध्र प्रदेश के अनेक जिलों तथा लखनऊ, जयपुर, कोटा, जोधपुर, अहमदाबाद, गांधीनगर, बड़ोदरा, हैदराबाद, असम, गुवाहाटी एवं गंगटोक इत्यादि शहरों सहित 19 राज्यों तथा 109 शहरों के हजारों विद्यालयों तक पहुंच चुका है।

सभी ने प्रयासों को सराहा

नैतिक शिक्षा के इस कार्यक्रम को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य अनेक सामाजिक संस्थाऐं जैसे-अखिल भारतीय माहेश्वरी समाज, भारत विकास परिषद, रोटरी क्लब, गीता परिवार एवं इंडियन डेवलपमेंट फाउंडेशन इत्यादि अनेक संस्थाएं आदि बखूबी कर रही हैं। समाचार पत्र नवभारत की ओर से श्रीमती माहेश्वरी को इंस्प्रेशन एण्ड आईकॉनिक विमंस ऑफ नवभारत से पुरस्कृत किया गया। राजस्थान शिरोमणि रत्न, निर्भया नारी रत्न अवॉर्ड, महिला वैभव पुरस्कार और आईडीएफ सोशल एक्शन अवॉर्ड जैसे अनेक अवॉर्डों से सम्मानित किया गया। हेमा फाउण्डेशन की ओर से सुसंपन्न हेमोत्सव -19 कार्यक्रम में गत वर्षों के अवलोकन, मार्गदर्शन, सफलता और भविष्य की गतिविधि के बारे में बताया गया। हेमा फाउंडेशन के स्थापना दिवस 25 जून 2019 पर रविंद्र नाट्य मंदिर, प्रभादेवी में 'हेम फार्मेशन' विमोचित किया, जिसमें महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री आशीष शेलार, मुंबई मनपा उपायुक्त मिलिंद सावंत, विख्यात मोटीवेटर राइटर व वक्ता शिव खेड़ा और बहुचर्चित अभिनेता एवं पद्मश्री मनोज जोशी इत्यादि आमंत्रित थे। महाराष्ट्र के राज्यमंत्री संजय उपाध्यक्ष और भारत विकास परिषद मुंबई के अध्यक्ष श्याम सुंदर खेतान भी शामिल थे। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मरिन लाईन्स स्थित पाटकर हॉल में निर्भयदूत तथा नारी चेतना द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में बालक बालिकाओं में नैतिक शिक्षा का अलख जगाने के लिये भी श्रीमती माहेश्वरी को निर्भय नारी रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया।

कोरोना लॉकडाउन में जब कई बच्चे खेलकूद में मस्त थे, ऐसे में सूरत निवासी 11 वर्षीय बालिका भाविका ने रामकथा का अभ्यास किया। इसके बाद उन्होंने जब रामकथा सुनाने का अभियान प्रारम्भ किया तो वह इतना लोकप्रिय हुआ कि मात्र 4 कथाओं से ही वे अयोध्या में राम मंदिर निर्माण हेतु 50 लाख रुपये की समर्पण निधि संग्रहित कर चुकी हैं।

टीम SMT

11 वर्षीय बाल कलाकार

भाविका माहेश्वरी

समाज सदस्य राजेश माहेश्वरी की सुपुत्री 11 वर्षीय भाविका माहेश्वरी कक्षा छठवीं की छात्रा हैं। कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान हुए लोकडाउन में उन्होंने समय का सदुपयोग करते हुवे रामकथा का अभ्यास किया। इसमें उनके माता पिता का पूरा सहयोग व प्रोत्साहन मिला जिसके परिणाम स्वरूप आज भाविका माहेश्वरी व्यास कथाकार के रूप उभर कर सामने आ रही हैं। राम मंदिर निर्माण निधि समर्पण में सहयोग देने के ध्येय के साथ अभी तक भाविका माहेश्वरी ने एक दिवसीय चार राम कथा की। पहली राम कथा माहेश्वरी भवन सिटी लाइट में, दूसरी सुभाष डावर के सहयोग से राम मंदिर में, तीसरी जॉली परिवार द्वारा वेसू में और चौथी माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी सेवा सदन परवत पाटिया में की। अभी तक की इन 4 कथाओं में अयोध्या में राम मंदिर निर्माण हेतु कुल 50 लाख से ज्यादा निधि की घोषणा हुई। कथा के दौरान जैन मुनि व मुस्लिम समुदाय के लोगों ने भी सहयोग दिया। इससे पहले भाविका ने 6 महिने की मेहनत से रामायण के 108 वीडियो बनाये थे जो सोशल मीडिया पर पूरे देश में पसंद किए गए।

कई हस्तियों ने सराहा

भाविका माहेश्वरी मूलतः शेरगढ़ जोधपुर राजस्थान से हैं, उनके पिताजी राजेश माहेश्वरी सूरत में स्कूल संचालन करते हैं। वो अपना प्रेरणा स्त्रोत दादा-दादी, नाना-नानी को मानती हैं। विश्व हिंदू परिषद हेड आफिस ने अपने आफिशियल ट्विटर हैंडल से भाविका की राम कथा का ट्वीट किया। साथ में गोविंद भाई ढोलकिया (जिन्होंने 11 करोड़ समर्पण निधि दी) एवं केशवचंद उ.प्र. प्रचारक, दिनेश नावड़िया ने भी प्रोत्साहित किया। पूरे देश में सांसद, विधायक जैसे अग्रणी लोगों ने भी ट्वीट रिट्वीट करके बच्ची का मान बढ़ाया।

मोबाईल एडिक्शन के खिलाफ चलाया अभियान

इससे पहले भाविका एवं टीम ने विश्व की पहली कोरोना अवेयरनेस ड्राइंग बुक बनाई साथ ही मोबाईल एडिक्शन कम करने के लिए 10 हजार बच्चों को ट्रेनिंग भी दी। भाविका ने 1 वर्ष पहले पबजी पर पाबंदी की मांग की थी। हाल ही में केंद्र सरकार ने पबजी सहित 119 चाइनिज एप को बेन किया है लेकिन भाविका ने इससे पहले अप्रेल 2019 में ही प्राइम मिनिस्टर आफिस, मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, इन्फॉमेशन टेक्नॉलॉजी मिनिस्ट्री, शिक्षा मंत्री, बाल एवं महिला विकास संसाधन मंत्रालय, सहित कई अग्रणी लोगों से पबजी गेम बैन करने की अपील की थी। भाविका अब तक 40 से ज्यादा स्कूलों में पबजी एवं मोबाइल एडिक्शन पर सेशन ले चुकी हैं। पबजी गेम ने युवाओं को ऐसी लत लगाई जिससे काफी लोगों ने आत्महत्या तक कर ली।

एडवोकेट व पशुपालन दोनों लगभग विपरीत क्षेत्र हैं। इनका साथ होने की बात करें तो लगभग असंभव सा ही लगेगा। लेकिन दो भिन्न व्यक्ति नहीं बल्कि एक ही किशनगढ़ निवासी एडवोकेट सुनीता रांदड़ ने इस 'अनहोनी को होनी' करके दिखा दिया। इसमें उनका सम्बल बनीं गौमाता के प्रति श्रद्धा जिसने उनके जीवन की दिशा डेयरी व्यवसाय की ओर मोड़ दी।

टीम SMT

एडवोकेट से बनी ''गौ सेवक''

सुनीता रांदड़

किशनगढ़ निवासी बी.ए.एल.एल.बी. तक शिक्षित सुनीता रांदड़ पेशे से वकील हैं। आपने सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में प्रखर वक्ता एवं बुद्धिजीवी के तौर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। पति विनोद रांदड़ बिट्स पिलानी से बी.ई हैं। लेकिन श्रीमती रांदड़ अब जैविक खेती और गोवंश पालन में भी विशिष्ट पहचान बना रही हैं। साथ वे अब भारत के वातावरण में देशी गौमाता के हो रहा तिरस्कार के खिलाफ भी बिगुल बजा चुकी हैं। इनका मानना है

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत स्थावरजङ्गमम।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ।।

अर्थात् गीता मं लिखा है कि देशी गौमाता भूत एवं भविष्य की जननी है एवं इन्होंने समस्त चराचर जगत व्यापक कर रखा है इसलिए हमें इन्हें प्रणाम करना चाहिए।

ऐसे मिली जीवन को राह

गौमाता के प्रति श्रद्धा भाव के साथ सुनीता ने आज से ठीक 5 वर्ष पूर्व रूपनगढ़ के पास मानपुरा गांव में अपने गिर गाय के डेयरी फार्म एवं संरक्षण एवं संवर्धन केंद्र की शुरुआत 2 गाय से की। फिर देशी नस्ल की गौमाता के संरक्षण का बीड़ा उठाया एवं साथ ही भारत में जैविक क्रांति को भी सफल बनाने का प्रण लिया। इनके आ जाने से उन्हें घर के लिए शुद्ध सब्जियों के साथ ही दूध, दही/छाछ एवं घी मिलने लगा। धीरे-धीरे ज्यादा दूध होने के कारण रिश्तेदारों एवं मित्रों को भी दूध दिया जाने लगा। देशी गाय के लिए श्रीमती रांधड़ का लगाव बढ़ा, साथ ही दूध की मांग भी। तत्पश्चात सुनीताजी ने डेयरी खोलकर गौमाता को आत्मनिर्भर बनाने एवं लोगों को पूर्णतः शुद्ध दूध घी देने का विचार किया। इसके लिये उन्होंने गिर नस्ल की गायों के साथ ही नंदी भी खरीदा और धीरे-धीरे गौवंश की मात्रा एवं दूध उत्पादन बढ़ने लगा।

जैविक चारा और फसल उत्पादन

शुरुआती दिनों में दूध छाछ एवं घी की नियमित एवं व्यवस्थित बिक्री से सुनीता जी ने डेयरी को आत्मनिर्भर बनाने पर प्रयत्न किया। इसके बाद जैविक चारा एवं फसल का उत्पादन भी स्वयं के खेत पर जीवामृत एवं गोबर केचुआ खाद व बिना कीटनाशक के करना शुरू किया। यही चारा एवं फसल गायों की नित्य खुराक में रखीं गई। गौपालन के साथ ही अपनी जैविक खेती एवं रसायनमुक्त भारत के मिशन को लेकर उन्होंने घी के साथ ही बैल से चलित घाणी से निकले हुए जैविक तेल, शुद्ध जैविक मसाले एवं सभी प्रकार के जैविक खाद्य पदार्थों का उत्पादन एवं विक्रय उचित मूल्य पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन चालू किया। आज श्रीमती सुनीता का डेयरी फार्म श्री चारभुजा ऑर्गेनिक डेयरी फार्म ''गिर गाय संरक्षण एवं संवर्धन केंद्र'' के नाम से जाना जाता है, यहां इस वक्त 95 के लगभग गोवंश है। जहां न सिर्फ शुद्ध दूध छाछ घी का उत्पादन किया जाता है बल्कि उन्नत गिर नस्ल का गोवंश भी पैदा किया जा रहा है। आलम यह है कि दूरदराज से लोग इस काम पर गोपालन के तरीके सीखने और समझने आते हैं एवं जैविक खाद्य पदार्थों का उत्पादन बंशीवाला इंटरप्राइजेस के नाम से फेसबुक इंस्टाग्राम एवं सभी ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्लेटफार्म पर उपलब्ध है।

गौवंश की श्रेष्ठ देखभाल

गाय को स्वस्थ रखने के लिए वे नियमित सफाई एवं पीने के पानी को सफाई में चूने का प्रयोग करती है। गाय का हाजमा सुचारू रखने के लिए प्राकृतिक नमक का प्रयोग एवं मच्छरों से बचाव के लिए नियमित पुताई एवं सही मात्रा में नियमित पौष्टिक जैविक आहार का उपयोग होता है। श्रीमती रांदड़ गौपालन क्षेत्र में आयी है और अपने फार्म पर गिर गाय की अच्छी नस्ल तैयार करती है जिससे पशुपालक यहां से अच्छी नस्ल की गौमाता लेकर जाते हैं। वह गिर नस्ल के सुडोल नंदी तैयार करके सार्वजनिक गौशालाओं को दान भी करती हैं, जिससे कि उनकी नस्ल भी सुधरे। श्रीमती रांदड़ को इनके प्रयत्नों के लिए भारतीय कृषि संस्थान द्वारा भी प्रोत्साहित किया गया, साथ ही इनका फार्म राजस्थान राज्य जैविक बोर्ड द्वारा नेशनल प्रोग्राम फॉर ऑर्गेनिक प्रोडक्शन, एफएसएसएएल, एमएसएमई एवं राजस्थान सरकार द्वारा संचालित व्यवसायिक केंद्र में भी पंजीकृत है।

राजनीति में भी रहीं सक्रिय

श्रीमती रांदड़ का जन्म 26 अगस्त 1974 को अजमेर में बालकिशन लड्ढा जिला नागोर तथा गीतादेवी लड्ढा के यहाँ हुआ। वर्तमान में जिला अध्यक्ष- भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा-नागौर, सदस्या-उत्तर पश्चिम रेलवे उपयोगकर्ता एवं सलाहकार समिति (ZRUCC) सदस्या- जिला विकास एवं समन्वय कमेटी नागौर (DHISHA), सदस्य-अजमेर मंडल रेलवे कमेटी, जिला कमेटी प्रभारी-आईटी सेल नागौर के रूप में सेवा दे रही हैं। पूर्व में 'मध्य राजस्थान' प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संघठन की भी जिम्मेदारी निभा चुकी है।

सेवा ने दिलाया सम्मान

गौ सेवा के इस अभियान ने जहाँ उन्हें आत्मसंतोष दिया वहीं सम्मान भी दिलाया। प्रशासन द्वारा गणतंत्र दिवस पर समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मानित किया। महिला शक्ति शिरोमणि सम्मान से इंडो नेपाल समरसता समिति नईदिल्ली, गौ संवर्धन के क्षेत्र में कार्य हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान (ICAR) परिषद से सम्मान सहित प्रवक्ता रत्न सम्मान-भीलवाड़ा, नारी शक्ति पुरस्कार-बीकानेर, किशनगढ़ रत्न सम्मान-किशनगढ़, वूमन पॉलिटिकल लीडरशिप अवार्ड 2018- जयपुर तथा भामाशाह पुरस्कार आदि से सम्मानित हुई। श्रीमती रांदड़ की पुत्री दीक्षा बी.टेक. कर आईआईएम से एमबीए कर रही है तथा पुत्र तनिष्क भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर चहुंमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए अपनी माँ श्रीमती रांदड़ के गौसेवा के इस अभियान में भी सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

ऋषिमुनि प्रकाशन

की नवीन सौगात

ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अपनी मन पसंद कोई भी पुस्तक आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।
श्री माहेश्वरी टाईम्स के पाठकों को इनके मूल्य पर विशेष छूट प्रदान की जाएगी।
अधिक जानकारी के लिये ऋषिमुनि प्रकाशन के कार्यालय पर संपर्क किया जा सकता है।

सम्पर्क-
90, विद्या नगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) मोबाइल : 094250-91161
E-mail : rishimuniprakashan@gmail.com

कोटा राजस्थान निवासी अर्चना मूंदड़ा एक ऐसी धाविका हैं, जिन्होंने गत गणतंत्र दिवस पर 72 किमी की टाईगर रन में 65 अन्य धावकों के साथ मिलकर विश्व कीर्तिमान बनाने में अहम भूमिका निभाई। वे अभी 26 से अधिक मैराथन में भाग लेकर कोटा व माहेश्वरी समाज का नाम रोशन कर चुकी हैं और वह भी 52 वर्ष की ऐसी अवस्था में जब लोग आराम फरमाने का सोचते हैं।

मधु बाहेती,कोटा

विश्व रिकार्ड बनाती 52 वर्षीय धाविका

अर्चना मूंदड़ा

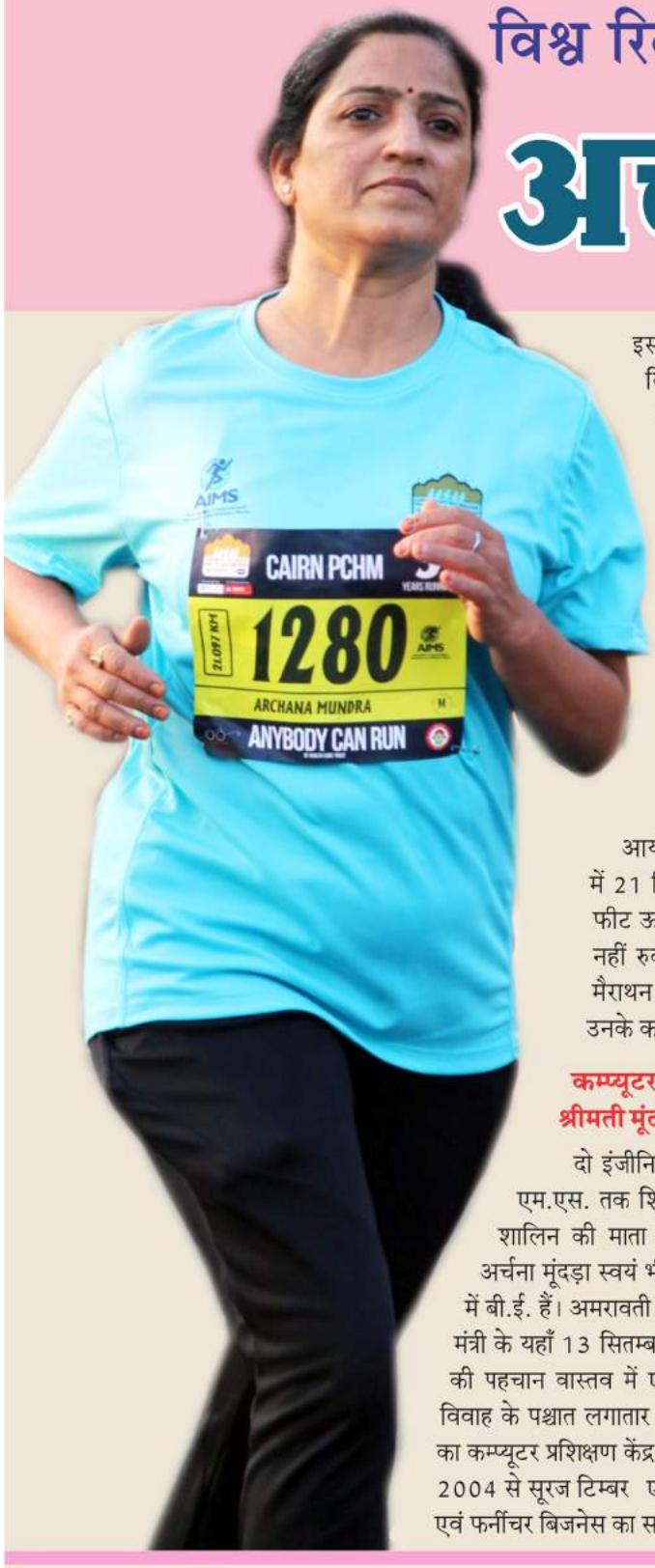

इस वर्ष 72वें गणतंत्र दिवस पर देशभर से 65 धावकों ने ध्वज तिरंगे के साथ 72 किमी की लंबी राष्ट्रीय दौड़ पूरी की। इंडियन फ्लेग रनर्स ग्रुप द्वारा आयोजित इस ऑनलाइन राष्ट्रीय स्पर्धा में राजस्थान से इकलौती कोटा की 52 वर्षीया महिला धावक अर्चना मूंदड़ा ने निर्धारित समय 14 घंटे से भी कम अवधि 11 घंटे 53 मिनिट में 72 किमी की दौड़ पूरी कर कीर्तिमान बनाया। इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड में वर्ल्ड रिकॉर्ड ऑफ एक्सीलेंस के लिये सभी 65 धावकों ने एक साथ निर्धारित अवधि में तिरंगे के साथ अपनी दौड़ पूरी की। अर्चना ने 26 जनवरी को प्रातः 6 बजे माला रोड से अपनी दौड़ आरंभ की। तिरंगे का सम्मान बढ़ाने के लिये शहर के कई धावक उनके साथ तिरंगा लेकर दौड़े। उनके कोच अमित चतुर्वेदी 72 किमी तक दौड़ते हुए उनका साथ दे रहे थे।

लद्दाख की पहाड़ियों पर भी बनाया रिकार्ड

श्रीमती मूंदड़ा ने बताया कि इससे पूर्व वीर सैनिकों के सम्मान में आयोजित 'रन फॉर सोल्जर्स' लद्दाख हॉफ मैराथन में भी अर्चना मूंदड़ा ने 2.32 घंटे में 21 किमी दौड़ पूरी की थी। श्रीमती मूंदड़ा इसमें समुद्र तल से करीब 11 हजार 500 फीट ऊपर होने वाले गत लद्दाख हाफ मैराथन के दौरान पांच किलोमीटर अप-हील पर भी नहीं रुकी। उस समय उनकी उम्र लगभग 49 वर्ष थी। इस अवस्था में इतनी कठिन मैराथन को पूरा करना दुष्कर था, लेकिन श्रीमती मूंदड़ा ने उसे पूरा कर दिखाया। इसमें उनके कठोर परिश्रम व परिवार के प्रोत्साहन का सर्वाधिक योगदान था।

कम्प्यूटर साईंस इंजीनियर रही हैं श्रीमती मूंदड़ा

दो इंजीनियर पुत्र होस्टन यूएसए में सेवारत एम.एस. तक शिक्षित हर्ष तथा बैंगलौर में कार्यरत शालिन की माता व घनश्याम मूंदड़ा की धर्मपत्नी अर्चना मूंदड़ा स्वयं भी 1987 बेच की कम्प्यूटर साईंस में बी.ई. हैं। अमरावती में श्री सुखदेव जी व श्रीमती कुसुम मंत्री के यहाँ 13 सितम्बर 1969 को जन्मी श्रीमती मूंदड़ा की पहचान वास्तव में एक बिजनेस वुमन के रूप में है। विवाह के पश्चात लगातार 6 वर्ष तक श्रीमती मूंदड़ा ने स्वयं का कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र संचालित किया। इसके पश्चात वर्ष 2004 से सूरज टिम्बर एण्ड प्लायवुड के नाम से प्लायवुड एवं फर्नीचर बिजनेस का सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं।

वेट लॉस के लिये प्रारम्भ हुई थी दौड़

कुछ साल पहले बच्चों ने कहा था कि मम्मी आपका वेट बहुत बढ़ता जा रहा है। इसको कम करो। बच्चों की इस बात को उन्होंने प्रेरणा के रूप में लिया। इसके बाद पति घनश्याम मूंदड़ा व ट्रेनर अमित चतुर्वेदी से प्रेरणा मिली। अर्चना ने बताया कि उन्होंने वेट कम करने के लिए वर्कआउट शुरू किया था। रनिंग के बारे में सोचा नहीं था, लेकिन अमित चतुर्वेदी ने उनको सपोर्ट किया। सबसे पहले वर्ष 2016 में जयपुर में होने वाली पिंक सिटी मैराथन में भाग लेकर 21 किलोमीटर दौड़ी। उन्होंने साल 2016 से रनिंग शुरू की थी। तो यह यात्रा फिर थमी नहीं। वे अभी तक विश्व की सबसे कठिन लद्दाख हॉफ मैराथन सहित 26 से अधिक मैराथन पूर्ण कर सम्मानित हो चुकी हैं। गत 2 से 6 फरवरी तक उन्होंने केदारनाथ में भी ट्रेकिंग प्रारंभ किया था, लेकिन खराब मौसम के कारण वे इसे पूर्ण नहीं कर पायीं।

फिर लिखेगी सफलता का नया इतिहास
3000 से अधिक रिश्ते जोड़ने के पश्चात अब

श्री माहेश्वरी मेलापक 2021

(माहेश्वरी समाज की विश्व स्तरीय डायरेक्टी)

विवाह योग्य युवक–युवतियों की
विश्वस्तरीय डायरेक्टी 2021

पृथक से प्रति बुक करवाने के लिए
शुल्क मात्र (डाक खर्च अतिरिक्त)
अब रिश्ते आयेंगे - आपके द्वार

श्री माहेश्वरी मेलापक

जिसमें आपको मिलेंगे आपके अनुरूप रिश्ते
प्रोफेशनल व हाइटिक युवक–युवतियों की
पहली पसन्द

हाइटिक व प्रोफेशनल
युवक–युवतियों की
पहली पसन्द

90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), इन्दौर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
मो. : 94250-91161, 96305-62161
e-mail : srimaheshwarimelapak@gmail..com

जरूरतमंद परिवार हो या फिर ऐसे परिवार के बच्चे उनके लिये तो जीवन यापन ही अत्यंत कठिन होता है, तो फिर शिक्षा तो अत्यंत कठिन स्वप्न से कम होता ही नही है। ऐसे ही परिवारों और बच्चों की रॉबिनहुड की तरह सहयोगी बनी हुई हैं, वापी जिला वलसाड़ (गुजरात) निवासी पूनम धूत।

टीम SMT

जरूरतमंदों की ''मददगार''
पूनम धूत

गुजरात के वलसाड़ जिले के वापी कस्बे में सामाजसेवी पुष्पकुमार धूत की धर्मपत्नी पूनम धूत की पहचान एक ऐसी सहृदय समाजसेवी के रूप में हैं, जो जरूरतमंदों की हर समस्या में उनके साथ खड़ी दिखाई देती हैं। जरूरतमंदों की मदद भी वे इस तरह अपनी टीम के साथ करती हैं कि कई बार मदद प्राप्त करने वालों को भी पता नहीं चलता कि मदद करने वाले कौन हैं? विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं से जुड़ी श्रीमती धूत ने समाजशास्त्र विषय के साथ बी.ए. ऑनर्स तक शिक्षा मुंबई से प्राप्त की। गत 23 वर्षो से वापी में रहते हुए कई सामाजिक कार्यों से जुड़कर 2014-16 में जिला वलसाड व दमन की माहेश्वरी महिला मंडल में अध्यक्ष पद पर भी अपनी सेवा दे चुकी हैं। इसके साथ ही आप माहेश्वरी महिला मंडल सलाहकार समिति सदस्या भी हैं।

बच्चों व महिलाओं के प्रति समर्पित

विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर चाईल्ड वेलफेयर के अंतर्गत चाईल्ड एब्यूजमेंट विषय पर कई सेमिनार लिऐ जिसे दमन आकाशवाणी ने सोशल अवेयरनेस के अंतर्गत ब्रॉडकास्ट किया। लाईफ स्किल्ड बेस एज्यूकेशन से सरकारी स्कूल के बच्चों को जीवन के लिये जरुरी शिक्षा दी। भागीरथ प्रोजेक्ट के अंतर्गत श्रावण मास एवम् शिवरात्रि पर शिवलिंग पर चढ़ने वाले दूध को गरीब बच्चों में बांटने की मुहिम चलाई। कुपोषण के शिकार बच्चों को पौष्टिक आहार दिलवाया। फिलहाल फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों की जीवन शैली को ठीक करने के लिए कार्यरत हैं। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य के लिऐ चिकित्सा शिविर आयोजित करवाए। सेनेटरी पेड वितरित किये, प्रसूता स्त्रियों को पौष्टिक आहार प्रदान किया। स्वयं सुरक्षा हेतु सेल्फ डिफेंस के सेशन भी करवाए। समाज की महिलाओं में मासिक धर्म के दौरान होने वाली कई भ्रांतियों को दूर करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन भी किया। कोरोना लॉकडाउन काल में निरंतर अनाज, कान्टेंमेंट जोन में राशन, गरीबों के लिये खाना, काढ़ा, मास्क, सेनिटाइजर, इम्युनिटी बुस्टर, गायों के लिये गुड़ इत्यादि वितरित किया। अनाथ आश्रम के बच्चों को भी राशन इत्यादि जरूरत की वस्तुऐं पहुंचाई।

सेवाओं ने दिलाया सम्मान

श्रीमती धूत वर्ष 2019 से मानव अधिकार मिशन की वक्ता से है। अन्तर्राष्ट्रीय एनजीओ रोबिनहुड आर्मी की सक्रिय सदस्या, सड़क पर जीवन यापन करने वाले बच्चों को समर्पित संस्था 'द होप हाऊस' की कोर कमेटी सदस्या, वापी वुमन्स क्लब तथा सेक्च्युअल एब्यूज कमेटी ''पाश'' आदि की सदस्या के रूप में भी अपनी सेवा दे रही हैं। उनकी सेवाओं ने उन्हें सम्मान भी दिलवाया। जरूरतमंद बच्चों के स्किल एज्युकेशन के लिये ''इन्नोवेटिव अवार्ड'', 'दूध बचाओ बच्चों को पिलाओ' अभियान के लिये जेसीआई लेडीज विंग द्वारा प्रोजेक्ट भागीरथ अवार्ड, तेरापंथी जैन समाज द्वारा सोशल एक्टिविस्ट अवार्ड तथा रोटरी व वापी नगर निगम द्वारा कोरोना योद्धा आदि कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

समाजसेवा जब संगठित रूप से होती है तो उसकी सफलता असफलता उसके नेतृत्व की सफलता पर निर्भर करती है। जोधपुर निवासी रामेश्वरी भूतड़ा एक ऐसी ही समाजसेवी हैं, जिन्होंने जहां भी रहीं अपनी सफल नेतृत्व क्षमता की छाप अवश्य ही छोड़ी। वर्तमान में श्रीमती भूतड़ा पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष के रूप में सेवा दे रही हैं।

टीम SMT

सेवा पथ का सफल नेतृत्व

रामेश्वरी भूतड़ा

वर्तमान में पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन प्रदेशाध्यक्ष के रूप में सेवा दे रहीं रामेश्वरी भूतड़ा को समाजसेवा वास्तव में विरासत में ही मिली। श्रीमती भूतड़ा का जन्म 15 नवम्बर 1954 को धार्मिक व समाजसेवी भावना से ओतप्रोत परिवार में श्री रामगोपाल व श्रीमती गोपीदेवी राठी के यहाँ हुआ था। अतः बचपन से ही समाजसेवा की भावना संस्कारों के रूप में ही प्राप्त हुईं। फिर जब जोधपुर निवासी नंदकिशोर भूतड़ा का जीवनसाथी के रूप में साथ मिला तो उनकी यह सेवा भावना परवान चढ़ने लगीं। वर्तमान में श्रीमती भूतड़ा प्रदेशाध्यक्ष के रूप में प्रदेश की महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य कर रही हैं।

स्थानीय स्तर से नेतृत्व की शुरूआत

जोधपुर जिला माहेश्वरी महिला मंडल के चुनाव में 14 अगस्त 2002 में श्रीमती भूतड़ा को जिला अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। फिर 2010 से 2012 तक पूरे राजस्थान की प्रथम उपाध्यक्ष रही। 2012 से 2015 तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य व 2015 से 2018 तक राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य रहीं। वर्ष 1993 से 2000 तक श्री माहेश्वरी समाज जोधपुर की पंचायत समिति सदस्य रही, उसमें महिला बाल विकास समिति की तीन बार संयोजक रही। इसमें कई कार्यक्रम जैसे डांस सिखाना डांडिया सिखाना, ढोलक बाजा सिखाना, ब्यूटी पार्लर का कोर्स एवं एक्यूप्रेशर के कैंप लगाना, पासपोर्ट बनाने आदि का कार्य एक छत के नीचे करवाया। लर्निंग लाइसेंस बनवाए व नगर निगम से आदमी बुलाकर, विवाह के प्रमाण पत्र भी बनवाए। महिला उद्यमिता संयोजक के रूप में तीन चार बार मेले का आयोजन भी किया। जो महिलाए पहले से घर से काम कर रही है, उनको प्लेटफार्म देने के लिए बिल्कुल कम शुल्क में स्टाल देकर उनको प्रोत्साहित किया। इसमें समाज के मंत्री दामोदरलाल बंग का पूर्ण सहयोग रहा।

कुशल नेतृत्व बना मिसाल

अभी श्रीमती भूतड़ा का प्रदेशाध्यक्ष पद पर वर्ष 2020 से 2022 तक का कार्यकाल रहेगा। वे अभी अखिल भारतीय मुद्रा समिति की अध्यक्ष भी है, जिसका कार्यकाल 2019 से 2021 तक रहेगा। इसमें भी प्रतिभाओं का वार्षिक अधिवेशन में गिफ्ट सर्टिफिकेट देकर सम्मान किया जाता है। अखिल भारतीय महिला संगठन से जरूरतमंद महिलाओं को गीली दाल की मशीन दिलवाई जिससे आज वे घर में बैठकर काम कर रही हैं। वर्ष 2004 में महेश नवमी संयोजक श्री माहेश्वरी समाज पंचायत समिति में 50 वर्ष में पहली महिला संयोजक बनने का गौरव श्रीमती भूतड़ा ने प्राप्त किया। श्री माहेश्वरी समाज जोधपुर 2004 में महेश महोत्सव की प्रथम महिला संयोजक बनने का श्रेय भी श्रीमती भूतड़ा को ही है, जिन्होंने 17 दिन के कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए थे।

वास्तव में समाजसेवा के लिये अलग से समय देना या कुछ ओर करना जरूरी नहीं बल्कि हम जो कर रहे हैं, वह भी समाजसेवा बन सकता है। इसी को चरितार्थ कर रही हैं, परतवाड़ा जिला अमरावती निवासी ख्यात स्त्रीरोग विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. मंगल राठी।

■ टीम SMT

चिकित्सा से समाजसेवा की यात्रा

डॉ. मंगल राठी

परतवाड़ा जिला अमरावती (महाराष्ट्र) में जब भी स्त्री रोग चिकित्सक का उल्लेख होता है, तो हर किसी की जुबान पर सबसे पहले ख्यात अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. शरद राठी की धर्म पत्नी डॉ. मंगल राठी का नाम आता है। इसका कारण उनका स्त्रीरोग क्षेत्र में एम.बी.बी.एस. के साथ डीजीओ जैसी उपाधि होना तो है ही, इससे अधिक उनकी समाज सेवा है जो चिकित्सा के रूप में ही वे कर रही हैं। वर्ष 1994 में अपनी उच्च चिकित्सक शिक्षण पूर्ण कर वर्ष 1995 से उन्होंने छोटे से कस्बे परतवाड़ा का प्रेक्टिस के लिये चयन किया तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस छोटे से कस्बे को सबसे पहले सोनोग्राफी सेवा की सौगात भी उन्होंने ही दी थी।

इसलिये किया परतवाड़ा का चयन

डॉ. राठी ने उस दौर में स्त्रीरोग चिकित्सा क्षेत्र में उच्च शिक्षा ग्रहण की थी, जब चिकित्सकों की भारी कमी थी और कई चिकित्सक बड़े - बड़े शहरों में प्रेक्टिस कर रहे थे। ऐसे में परतवाड़ा का चयन वास्तव में दिलचस्प कहानी लगता है। डॉ. राठी का जन्म लातूर निवासी श्री सत्यनारायण व श्रीमती कौशल्या लड्ढा के यहां हुआ था। अतः बचपन से ही समाजसेवा विरासत में मिली। फिर जीवनसाथी के रूप में डॉ. शरद राठी का साथ मिला। पति डॉ. राठी का जन्म सिरसगांव कस्बा में हुआ था। अपने इस पैतृक गांव से अत्यधिक लगाव होने से वे चाहते थे कि इसके आसपास ही किसी स्थान का चयन प्रेक्टिस हेतु करें, क्योंकि यहां सिरसगाँव वालों का आना-जाना अक्सर चलता रहता है, जिससे वे गाँव वालों को चिकित्सा सेवा दे सकें। बस इस सोच के चलते पति-पत्नी ने सिरसगांव के समीप स्थित परतवाड़ा को अपनी कर्मभूमि बना लिया।

सतत चली सेवा यात्रा

प्रेक्टिस के प्रारम्भ से ही डॉ. राठी दम्पत्ति चिकित्सक से अधिक समाजसेवी बन गये और सतत रूप से मानवता की सेवा में अपनी निःस्वार्थ सेवा देते रहे हैं। शुरू से ही कई जगह डायग्नोस्टिक कैंप लगाये। जरूरतमंद लोगों को मेडिसिन का वितरण भी किया। विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर हर साल किशोरियों के लिये आयोजित किए जाने वाले कार्यशाला शिविर में किशोरियों को अपने खान पान के बारे में, शारीरिक स्वच्छता, माहवारी और पर्यावरण की स्वच्छता और चकाचौंध की दुनिया में खुद को संभाल के कैसे रखा जा सकता है, इसकी जानकारी दी। हर साल स्तनपान सप्ताह में आंगनवाड़ी व अचलपुर के सरकारी अस्पताल में जाकर गर्भवती महिलाओं को और डिलीवरी वाली महिलाओं को स्तनपान का महत्व समझाया। कई स्कूलों में जाकर लड़कियों का हिमोग्लोबिन चेक किया। जिनका हीमोग्लोबिन कम है उनको हिमोग्लोबिन की टेबलेट दी, हिमोग्लोबिन का महत्व समझाया। कई संस्थाओं में जाकर और महिला दिवस के अवसर पर अलग अलग परिसर में जाकर स्त्रियों में होने वाली बीमारी जैसे गर्भाशय का कैंसर और स्तन के कैंसर आदि के बारे में समझाया। मैमोग्राफी कैंप लेकर कैंसर का और पैपस्मीयर कैंप लेकर गर्भाशय के मुंह के कैंसर का भी रोग निदान किया। स्वास्थ्य को लेकर आपके लिखे कई आलेख भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

अन्य समाजसेवी गतिविधियों में भी सक्रिय डॉ. राठी दम्पत्ति

आरोग्य का महत्व, बालिका दिवस, मातृ-पितृ दिवस, कैंसर दिवस, एड्स दिवस, गर्भनिरोधकता, स्तनपान का महत्व, 16 व वरिस धोक्याच, एनीमिया आदि कई अलग-अलग विषयों पर जन जागृति हेतु उनके लिखे लेखों का भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ। स्कूलों में जाकर ऑडियो वीडियो सेशन लेकर बच्चों को यशाची गुरूकिल्ली अर्थात 'सफलता की चाबी' की जानकारी दी। 'मातृ पितृ वंदन' जैसे अनोखे प्रोग्राम परतवाड़ा और अमरावती में लिए जिसमें माता-पिता के ऋण लोगों का ध्यान दिलाया और माता-पिता का सत्कार शॉल श्रीफल और फूल देकर उनके बच्चों के हाथों से करवाया। 'बंमबांच बसलय' नाटक के 1 घंटे के मंचन में स्वयं ने सखूबाई का किरदार निभाया और उसके अंदर महिलाओं के काम का महत्व लोगों को दर्शाया। अलग-अलग विषयों पर यूट्यूब पर वीडियो बनाकर लोगों में अलग अलग बीमारियों के बारे में जानकारी भी दी। उन्होंने कई बार अपने बच्चों का बर्थडे अनाथ आश्रम और अंध विद्यालय में जाकर सेलिब्रेट करवाया। कई बार वृद्ध आश्रम जाकर भी वृद्धजनों का चेकअप करवाया, उनको मेडिसिन का भी वितरण किया। स्वयं का बर्थडे भी आदिवासी रेजिडेंशियल आश्रमशाला

में जाकर मनवाया। हर साल पति, पत्नी और बेटी जन्मदिन पर रक्तदान करते हैं। स्वयं का 50वां बर्थडे अपने फ्रेंड सर्कल में 51 पौधे का वितरण कर मनाया। सभी डॉक्टर लोगों की शादी की सालगिरह पर वे फूल के बुके देने के बजाय सुंदर-सुंदर फूलों के पौधे देकर उनका सम्मान करती हैं। कोरोना के दरम्यान कई लोगों को कोरोना के संबंधित जानकारी दी। मास्क व सैनिटाइजर वितरण किया। गर्भवती महिलाओं को भी कोरोना से बचने के उपाय बताएं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

डॉ. राठी रोगियों का इलाज भी अत्यंत कम फीस में समाजसेवा की तरह ही करती हैं और उनकी सेवाओं ने न चाहते हुए भी उन्हें सम्मान दिलाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। नेशनल लेवल पर वंडर फॉगक्सईएन अवार्ड फिल्म एक्ट्रेस जैकलिन फर्नांडीस, डायना हेडन, सोनाली और ऑल इंडिया प्रेसिडेंट ऑफ ओबीजिवाय सोसायटी नंदिता पालशेटकर आदि की उपस्थिति में मिला। इंडियन मेडिकल ऐसोसिएशन के प्रेसिडेंशियल कार्यकाल के दौरान उनकी टीम को महाराष्ट्र लेवल पर नवाजा गया। परवाड़ा स्त्री रोगतज्ञ संघटना, परतवाड़ा इंडियन मेडिकल ऐसोसिएशन, परतवाड़ा माहेश्वरी मंडल, अमरावती अस्थिरोगतज्ञ संघटना ने भी उनके कार्य को नवाजा। इनके अतिरिक्त ऐसे अनगिनत अवसर आये जब उन्हें सम्मानित किया गया, जिनकी फहरिश्त अत्यंत लम्बी है।

किसी भी समाज या राष्ट्र का भविष्य उसकी भावी पीढ़ी पर निर्भर करता है। भविष्य तब ही उज्जवल हो सकता है, जब उस भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीज भी रोपे जाऐं। यही पावन कार्य कर रही हैं, विराटनगर नेपाल निवासी सुरूचि साबू।

टीम SMT

''रूचि'' के साथ संस्कारों का पाठ पढ़ाती सुरूचि साबू

बिराटनगर (नेपाल) में निवास करने वाले डॉक्टर राजकुमार साबू की पत्नी सुरुचि साबू बच्चों को संस्कारित करने का एक अतुलनीय कार्य कर रही हैं। निःस्वार्थ भाव से संस्कार सेवा का कार्य करना और इस तरह की सेवा के बदले में पाने की कुछ भी इच्छा नहीं रखना ही सच्ची सेवा है। स्वामी विवेकानन्दजी के अनुसार त्याग और सेवा देश के दो मुख आदर्श हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों के निर्माण से ही सुन्दर राष्ट्र का निर्माण संभव है। बच्चों का ह्रदय अत्यंत कोमल होता है। बचपन में सीखी हुई चीज़ें पूरे जीवन काल को प्रभावित करती हैं। बचपन में सद्विचारों के श्रवण से बाल ह्रदय में भक्ति के बीज अंकुरित होने से जीवन को एक सुन्दर दिशा मिल जाती है। अतः प्रत्येक शनिवार को श्रीमती साबू अपने आवास स्थल पर बच्चों को श्री विष्णुसहस्त्रनाम, श्री राम रक्षा स्तोत्र आदि का पाठ सिखाने का बहुत सुन्दर कार्य करती हैं। अभी तक नगर के न जाने कितने ही बच्चों ने उनसे स्तोत्र पाठ सीख कर अपना जीवन श्रेष्ठ बनाया है।

कोरोना काल में भी नहीं रूकीं संस्कारों की पाठशाला

कोरोना काल में भी आप खाली नहीं बैठी और ऑनलाइन ज़ूम मीटिंग द्वारा बच्चों को इतना कुछ सीखा दिया जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। 5 साल की बच्ची से लेकर 40 साल की महिलाओं ने भी उनकी ऑनलाइन क्लासेज द्वारा बहुत कुछ सीखा। रामचरितमानस के पाठ के लिए सबको प्रेरित करना, रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों को अत्यंत रूचि के साथ सुनाना, जिससे बच्चों के कोमल मानस पटल पर प्रभु श्री राम का, उनके नाम का अत्यधिक प्रभाव पड़ा, यही उनका लक्ष्य भी रहा। उन्होंने उनके बाल ह्रदय में भक्ति के बीज अंकुरित करने का उत्कृष्ट कार्य किया।

ऑनलाईन क्लासेस ज्ञान का सागर

ऑनलाइन क्लास में आपने बच्चों को पाँच देवों का उनके वाहन के साथ परिचय दिया। प्रत्येक देव की स्तुति के श्लोक बच्चों को याद करवाने का अनुपम कार्य किया। चार आश्रम, चार युग, पांच तत्त्व, नव ग्रह, चार वेद, चार वर्ण, सात पुरियां, सप्त चिरंजीवी, नवधा भक्ति आदि से बच्चों को परिचित करवाती हैं। रामचरितमानस में वर्णित राम जन्म के कारणों से बच्चों को अवगत कराना बड़ा ही दुष्कर कार्य था परन्तु आप बड़े ही रोचक ढंग से बच्चों को अनेक प्रसंग (सती की कथा पार्वती जी की कथा, श्रवण कुमार की कथा, धनुष भंग, भरत मिलन, शबरी प्रसंग, सुग्रीव एवं बाली प्रसंग सुन्दरकाण्ड, रावण संहार, अयोध्या आगमन और राज्याभिषेक) सुनाती हैं। इसके साथ साथ अनेक भक्तों की और प्रेणास्पद कथाएं जैसे रत्नाकर की कथा, ध्रुव की कथा, प्रह्लाद की कथा, मार्कण्डेय ऋषि की कथा, दुष्यंत-शकुंतला की कथा, मीरा बाई की कथा आदि सुनाती हैं व पञ्च देव स्तुति, संकटनाशन गणपति स्तोत्र, सूर्याष्टकम, रुद्राष्टकम आदि कंठस्थ भी करवा चुकी हैं।

अपनी लेखनी व ओजस्वी वाणी दोनों से पाठकों को नई दिशा दे रही हैं, इंदौर निवासी नम्रता कचोलिया। उनके विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित आलेख अपने आपमें प्रेरणा स्त्रोत हैं।

टीम SMT

उभरती लेखिका
नम्रता कचोलिया

नम्रता कचोलिया काँटाफोड़ ज़िला देवास के प्रसिद्ध उद्योगपति गिरधर-साधना बियाणी की सुपुत्री है और इंदौर माहेश्वरी समाज के प्रतिष्ठित कचोलिया परिवार के वरिष्ठ मुकेश-संगीता कचोलिया की बहू व रोहन कचोलिया की धर्मपत्नी हैं। बचपन विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में बीतने के कारण जमीन से जुड़े रहने की भावना स्वाभाविक ही उन्हें प्राप्त हुई है। गाँव में दसवीं तक हिंदी माध्यम स्कूल से पढ़ने के बावजूद अपनी आगे की सम्पूर्ण पढ़ाई को श्रीमती कचोलिया ने अंग्रेज़ी माध्यम से पूरा किया है। ग्रैजूएशन भारत की विख्यात महिला यूनिवर्सिटी वनस्थली विद्यापीठ से किया और एमबीए की पढ़ाई गुरूग्राम आईआईएलएम इंस्टिट्यूट से पूर्ण की। आपका सामाजिक कार्यों के प्रति रुझान युवावस्था से ही रहा है और उस ओर कदम बढ़ाते हुए वर्ष 2014 में कृष्ण मोहन सामाजिक सेवा संस्थान की स्थापना की। वहीं दूसरी ओर अपनी बिज़नेस कम्पनी शांति ओवरसीज़ इंडिया लिमिटेड में एक्सपोर्ट डिविजन में कार्य करके अपने पति का सहयोग करते हुए पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वाह कर रही हैं।

संचार माध्यमों से विचारों की क्रांति

वर्तमान में श्रीमती कचोलिया लेखन के क्षेत्र में अपने आपको स्थापित कर माहेश्वरी समाज का नाम रोशन कर रही हैं। वे देश के प्रतिष्ठत न्यूज़पेपर्स के लिए लिखती रहती हैं। उनके लिखे लेख दैनिक भास्कर, नईदुनिया, अमरउजाला, गुडईवनिंग जैसे प्रतिष्ठित न्यूज़ पेपर्स में काफी पसंद किए जाते है। उनके लेख विशेषकर तात्कालिक सामयिक विषय को लेकर तथा पारिवारिक, सामाजिक व धार्मिक सकारात्मकता को ध्यान में रखते हुए भी लिखे गए हैं। वह हर रोज़ अपने सोशल प्लैटफॉर्म फेसबुक पेज, इंस्टाग्राम, ट्वीटर पर एक प्रेरणादायक सुविचार भी डालती हैं।

प्रेरक वक्ता के रूप में भी पहचान

श्रीमती कचोलिया अपनी पहचान एक मोटिवेशनल स्पीकर के तौर पर भी बना रही हैं। इसके लिए उन्होंने लॉकडाउन के दौरान और उससे पहले भी विभिन्न संस्थाओ में जाकर महिलाओं और बच्चों को मोटिवेट किया है। इसी कारण अभी हाल ही में उन्हें ''स्माईल चैरिटी'' संस्था द्वारा एक उभरती ओजस्वी लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सम्मानित किया गया। वहाँ भी उन्होंने अपनी मोटिवेशनल स्पीच द्वारा लोगों को प्रभावित किया। आप अपनी उपलब्धियों के लिए विशेष तौर पर अपने ससुरजी मुकेश कचोलिया को अपना प्रेरणा स्रोत मानती हैं। श्रीमती कचोलिया निरंतर एक अच्छे लेखक और वक्ता के रूप में उभरने के लिये प्रयासरत हैं और नए आयाम बना रही हैं।

नारी का विशिष्ट सम्मान ही उसकी ममत्व भरी कोमल भावनाओं के लिये है, और जब यह ममत्व स्वयं की संतान के साथ अन्य के लिये उमड़ने लगे तो फिर वह नारी तो ''श्रद्धेय'' हो जाती है। ऐसी ही नारी हैं, जोधपुर निवासी यशोदा माहेश्वरी जो गरीब बच्चों पर भी अपना स्नेह न्यौंछावर कर उनका भविष्य संवारने की कोशिश कर रही हैं।

■ टीम SMT

ममता का दरिया
यशोदा माहेश्वरी

'वही उदार है परोपकार जो करे वहीं मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे।' जोधपुर (राजस्थान) निवासी यशोदा माहेश्वरी, मैथलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों को अपने जीवन का आधार मानती हैं। श्रीमती माहेश्वरी ने पिछले कई सालों से गरीब बच्चों की पढ़ाई का जिम्मा अपने कंधों पर उठाया हुआ है। वहीं लॉकडाउन के दौरान उन्होंने अपने यहां पढ़ने वाले गरीब बच्चों के घर महीने भर का राशन पहुंचा की उनकी मदद की है। उन्होंने बताया कि वे आज भी शहर की झुग्गी झोपड़ियों में जाकर गरीबों को राशन बांट सेवा कार्य कर रही हैं। वहीं लॉकडाउन के दौरान बच्चों के लिए ऑनलाइन क्लासेस चलाने के साथ कॉपी किताबें भी उन्होंने उपलब्ध करवाई।

कोरोना वॉरियर सम्मान से हुई सम्मानित

कोरोना महामारी ही नहीं बल्कि इससे बचाव के लिये चला लॉकडाऊन भी किसी विपदा से कम नहीं था। इसने जहां हर व्यापार-व्यवसाय की कमर तोड़ दी, वहीं गरीब वर्ग को तो भूखमरी के कगार पर ही लाकर छोड़ दिया। श्रीमती माहेश्वरी गरीब बच्चों को निःशुल्क ट्यूशन तो पढ़ाती ही हैं, साथ ही प्रायवेट स्कूल में दाखिला करवाने में उनकी आर्थिक मदद भी करती हैं। कोरोना लॉकडाऊन के दौरान श्रीमती माहेश्वरी ने ऐसे परिवारों के घरों में नियमित रूप से राशन पहुँचाकर मानवता की जो सेवा की उसके लिये समाचार पत्र ''दैनिक नवज्योति'' द्वारा उन्हें ''कोरोना वारियर'' के सम्मान से भी नवाजा गया।

दूसरों का जीवन संवारने का लिया संकल्प

श्रीमती माहेश्वरी गरीब बच्चों और उसमें भी खासकर बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करवाने में जो योगदान दे रही हैं, उसका कारण उनका स्वयं का परिस्थितिवश अधिक शिक्षा ग्रहण न कर पाना भी है। श्रीमती माहेश्वरी का जन्म 27 मई 1964 को अजमेर (राज.) के छोटे से गांव ब्यावर में हुआ था। ग्रामीण परिवेश में उनकी शादी कम उम्र में ही जोधपुर निवासी गोविंद माहेश्वरी के साथ हो गई। वर्तमान में उनके परिवार में दो बच्चे 1 पुत्र व 1 पुत्री हैं। इन परिस्थितियों के कारण श्रीमती माहेश्वरी न तो उच्च शिक्षा ग्रहण कर पायी और न ही नृत्य तथा गायन आदि का अपना शोक पूर्ण कर पाईं। अतः वे अपने बच्चों के साथ ही अन्य बच्चों की प्रतिभा को भी संवारने का प्रयास कर रही हैं। इसके लिये भविष्य में एनजीओ का पंजीयन करवाना भी उनकी योजना में शामिल है।

Ramesh Chander Biyani
Bhagwan Das Biyani
Cell : 9848411120
8639882302
SHYAM PLASTICS
Mfg. Poly Proplene Bags (P.P.) &
Polythene Bags, Packing Material,
Carry Bags Etc.
15-7-594/2, Near Post Office,
Begum Bazar, Hyderabad (T.S.) - 500012

Brijgopal Baldwa
98480 12149
Premkumar Baldwa
90300 45157
SANJAY GOODS TRANSPORT CO.
Transport contractors
14-8-268, Chudi Bazar, Opp. MCH Court, Hyderabad-12.

नारी कभी कमजोर नहीं होती बस उसे उसकी शक्ति को याद दिलाने तथा दक्षता द्वारा संवारने की जरूरत भर होती है। इसी सोच के साथ काम कर रही है सौंदर्य परी जोधपुर निवासी सिद्धि जौहरी।

टीम SMT

''विद्या एप'' की एम्बेसेडर

सिद्धि जौहरी

(मालपानी)

शिक्षा प्रत्येक छात्र का जन्म सिद्ध अधिकार है। भारत के प्रत्येक छात्र को निशुल्क और अच्छी गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करने के इस महान विचार के साथ, विद्या शिक्षा अनुप्रयोग के संस्थापक आगे बढ़ रहे हैं। विद्या शिक्षा ऐप के संस्थापक गौरव गोयल ने मिसेज इंडिया एवं महिला सशक्तिकरण की नैशनल ऐम्बेसेडर जोधपुर निवासी सिद्धि जौहरी को राजस्थान का ब्राण्ड ऐम्बैसेडर घोषित किया है। अब वह पूरे राज्य में इस मुहिम को आगे बढ़ाएंगी। विद्या एज्युकेशन स्कूली छात्रों के लिए निशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक ऐंड्रॉड ऐप है। वे पर्सनोलिटी ग्रूनिंग, कांफिडेंस बिल्डिंग, कम्युनिकेशन स्किल तथा पब्लिक स्पीकिंग की कई वर्कशॉप भी अभी तक ले चुकी हैं। सौंदर्य स्पर्धाओं में अभी तक मिसेज इंडिया इंटरनेशनल 2019, मिसेज गेलेक्सी क्वीन इंडिया 2019, मिसेज राजस्थान इंडिया इंटरनेशनल 2010, मिसेज राजस्थान क्वीन आदि कई उपाधियों से अलंकृत हुई हैं।

जिम्मेदारी ने दिलाया सम्मान

29 जुलाई 1988 को मालचंद सोमानी के यहां काठमांडू (नेपाल) में पली बढ़ी तथा वर्तमान में अपने पति राहुल जौहरी के साथ जोधपुर को अपनी कर्मभूमि बनाने वाली सिद्धि ने कई जिम्मेदारियां सम्भाली तो सेवा ने सम्मान भी दिलाया। श्रीमती जौहरी नेशनल यूथ काउंसिल ऑफ इंडिया की स्टेट वाईस प्रेसिडेंट, 'सार्क' की स्टेट अकाडमिक डायरेक्टर, नारी सशक्तिकरण को समर्पित संस्था स्वर्ण भारत परिवार की राष्ट्रीय ब्रांड एम्बेसेडर, यूएन की एनजी ''बी मेकचेंज इंडिया'' की चेंजमेकर, नेशनल राष्ट्रीय मानव अधिकार संगठन की राज्य महिला अध्यक्ष तथा कई कंपनियों की ब्रांड एम्बेसेडर रहीं। अभी तक श्रीमती जौहरी डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम नेशनल अवार्ड 2020, इंस्पायरिंग पीपल ऑफ इंडिया 2020 अवार्ड, कोरोना वारियर, माहेश्वरी वुमन ऑफ वोर्थ 2021 आदि कई अनगिनत पुरस्कारों से नवाजी गई हैं।

समय के साथ चलना धार्मिक कथा-साहित्य के लिये भी जरूरी है, अन्यथा वे आम व्यक्ति की पहुँच से दूर हो जाते हैं। इसी सोच के साथ वीडियो रूप में न सिर्फ विभिन्न पर्व त्यौंहार अपितु सम्पूर्ण श्रीमद् भगवद् गीता को अर्थ के साथ सरल भाषा-शैली में प्रस्तुत कर रही हैं, भीलवाड़ा निवासी रीना डाड।

टीम SMT

धर्म संस्कृति की ''गंगा'' बहाती

रीना डाड

राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति महाराष्ट्र पुणे द्वारा इस बार का वार्षिक राष्ट्रीय स्तर का सम्मान महिला संस्थान भीलवाड़ा की रीना डाड को भेंट किया जा रहा है। श्रीमती डाड विभिन्न शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के माध्यम से हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना सराहनीय योगदान दे रही है। राष्ट्रीय पुरस्कार से सर्वधर्म समन्वय समिति, दिल्ली एवम् राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार प्रसार समिति, महाराष्ट्र पुणे द्वारा सम्मानित श्रीमती डाड, भीलवाड़ा (राजस्थान) में नगर माहेश्वरी महिला संगठन की नगर मंत्री पद पर हैं।

व्रत-त्यौंहारों की अधिकांश कथा

कोरोना लॉकडाउन के समय जब बड़ी तीज पूजा में परंपरागत रूप से मंदिर में या एक जगह एकत्र होना संभव नहीं था। तब श्रीमती डाड के मन में यह विचार आया कि क्यों ना सभी कहानियों की श्रृंखला बनाई जाए जिससे पूजा घर पर सम्पूर्ण कर कहानी श्रवण की जा सके। उनके इस प्रयास को जब सभी ने सराहा तथा आगे चलकर भादवा चौथ, बछ बारस, ऋषि पंचमी आदि की कहानियों की श्रृंखला प्रस्तुत की। इस श्रृंखला में पुरूषोत्तम मास का वैज्ञानिक आधार, पुरूषोत्तम माह में दान का महत्व, नवरात्रि हवन विधि, सम्पूर्ण विधान सहित दीपावली पूजन विधि, मकर सक्रांति का महत्व आदि अनेक वीडियो आपके द्वारा प्रस्तुत किए जा चुके है, जो सुनने वालो को अत्यंत उपयोगी लगे, एवम् उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा हुई।

गीता की भी सरल रूप में प्रस्तुति

लॉकडाउन के उनके पुरुषोत्तम माह में गीता श्रवण के महत्व को देखते हुए विचार मन में आया कि सभी की सुविधा के लिए गीता के अध्याय सरल रूप में प्रस्तुत करें। कारण कि गीता महाकाव्य सदियों से ज्ञान का सागर रहा है, जिसके आगे सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है। जिसमें सभी वेद और उपनिषदों का सार है इसलिए उसका पाठ करके तथा श्रवण करके उसकी महत्ता को पहचान के और अपने जीवन की समस्याओं का समाधान पा सकें। अतः उनके द्वारा भगवद गीता के सभी 18 अध्याय सरल अर्थ एवम् आसानी से समझने वाली भाषा शैली, स्पष्ट उच्चारण एवम् मधुर वाणी में प्रस्तुत किये गये।

यह रहा इसका कारण

वीडियो को बनाने का मुख्य कारण ऐसे सभी बडे बुजुर्ग हैं जिनकी नजर कमजोर हो जाने के कारण उन्हें श्रीमद्भागवद गीता पढ़ने में परेशानी हो रही है। इसी के साथ नव पीढ़ी के लिए सरल भाषा का प्रयोग कर समझने में सहायक होने के साथ ही गृहिणियों एवं अन्य महिलाऐं भी श्रवण करना चाहे तो कार्य की व्यस्तता के दौरान कहीं भी इसे सुन सके। उनकी कहानियों की श्रृंखला को सुनकर प्रदेश अध्यक्ष कुंतल तोषनीवाल ने दक्षिणी राजस्थान प्रदेश, जिला एवम् नगर माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत ये सभी वीडियो प्रस्तुत करवाए। इसके पश्चात शीघ्र ही राम चरित मानस भी सरल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास जारी है। इसके साथ ही गणगौर, दसा माता, शीतला माता आदि कहानी की श्रृंखला शीघ ही प्रसारित की जाएंगी जिनकी रिकॉर्डिंग पूर्ण हो चुकी हैं।

परिवार का मिला प्रोत्साहन

श्रीमती डाड इसका श्रेय अपनी सासुमाँ एवम् ससुर गीता देवी सत्यनारायण डाड, माता-पिता सुमित्रा देवी-हरिशचंद्र माहेश्वरी एवम् अपने जीवन साथी संजय डाड को देती है। इस महत्वपूर्ण कार्य के साथ ही वे डीपीएस स्कूल, भीलवाड़ा की डायरेक्टर के रूप में भी अपनी सेवा दे रही हैं। परिवार भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। पुत्री सलोनी ने इसी वर्ष प्रथम प्रयास में सीए फायनल उत्तीर्ण की एवम् पुत्र संवित 12 वीं कक्षा का छात्र है, जिसने हाल ही में जनवरी में ओपन नेशनल फुटबॉल गोल्ड मेडल पदक जीता। उनके वीडियो एबीएमएम पत्रिका में भी प्रसारित हो चुके हैं।

प्रीति भट्टड़ ने कानून की शिक्षा हांसिल की तो बस संकल्प ले लिया महिला अधिकारों की रक्षा तथा उनके सशक्तिकरण का। चाहे वकालात की अथवा लीगल मैनेजर के रूप में सेवा लेकिन उनका यह अभियान सतत चलता ही रहा। आईये जानें उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी

टीम SMT

महिला अधिकारों की रक्षक

प्रीति भट्टड़

कोयंबटूर। (तामिलनाडू) की श्रीमती प्रीति भट्टड़ जन्म और प्राथमिक शिक्षा महाराष्ट्र के छोटे से गांव मूल में हुई। बी.कॉम. कर पीजी इकोनोमिक की डिग्री नागपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। स्कूली दिनों से मंच के प्रति एक लगाव और खिंचाव बना रहा। स्कूल से कालेज तक मंच संचालन, वाद विवाद स्पर्धा, निबंध लेखन और पद्य लेखन का एक क्रम सा चला रहा। वाद विवाद स्पर्धाओं में राज्य स्तरीय तक जाने और जीतने का मौका मिला। उन्हीं दिनों एक अखबार ''लोकमत'' में पत्रकारिता का भी अवसर मिला। वकालत की पढ़ाई शुरू की, पर पूरी पढ़ाई तमिलनाडु के कोयम्बटूर में विवाहोपरांत हुई । लॉ की डिग्री लेकर 2009 से 2017 तक चैन्नई एवम कोयम्बटूर कोर्ट में प्रैक्टिस की। 2017-18 में चोलामंडलम इन्वेस्टमेंट फाइनेंस में **NBFC** कंपनी में लीगल सीनियर एक्सींक्यूटिव का काम संभाला, और अब **HDFC** बैंक में लीगल मैनेजर के रूप में कार्यरत हैं। विवाह बाद भाषा में भिन्नता के वजह से कार्यक्षेत्र में कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। लेकिन शायद यही चुनौतियां तमिल भाषा जल्दी सीखने में मेरी सहायक रही।

विवाह बाद भी चली सफलता की यात्रा

विवाह बाद पढ़ाई पूरी कर काम करना एक संयुक्त परिवार में रहकर घर के बड़ों और बच्चों के प्रति साथ ही बाकी पारिवारिक जिम्मेदारी और दायित्वों को पूरा करना किसी के लिये आसान नहीं न मेरे लिये था। पढ़ाई पूरी करना ही एक स्वप्न समान था, मगर पारिवारिक सदस्यों की सहायता और मेरी जिद ने राह आसान कर दी। इसमें विशेष योगदान रहा मेरे पति सुरेश भटटड और मां उर्मिला सत्यनारायण सारडा का। अब तो दोनों बेटियां खुशी और गरीमा भी साथ हैं। इन सभी के बीच भी मंच और कविता लेखन के प्रति मेरा रूझान हमेशा बना रहा और उन्होंने वह पूरा करने का अवसर दिया। माहेश्वरी सभा ने समाज में होने वाले स्नेह सम्मेलन से मंच संचालन का अवसर दिया।

महिला जागरूकता की प्रखर वक्ता

कम्पनी और बैंकिंग के क्षेत्र में कार्य करने से यह तो समझ आ रहा था कि कानूनी अधिकार, आर्थिक स्वावलंबन व निवेश इन सभी विषयों से महिलायें पूर्णतः अवगत नहीं। यह मानसिकता, कि महिलाओं के कानूनी अधिकार याने ''परिवार विभाजन,'' यह बात हमेशा मुझे चुभती रही। इन्हीं बातों को ध्यान में रख इन विषयों पर महिलाओं के लिये फ्री सेमिनार लेना शुरू कर किया। इसमें महिलाओं के लिये अच्छा निवेश, साइबर क्राइम, आर्थिक स्वावलंबन जैसे पसंदीदा विषय रहे। जैन माहेश्वरी, तमिल, गुजराती आदि अलग-अलग समाज की महिलाओं से जुड़ने का अवसर सेमिनार से प्राप्त हुआ। जहां कुछ महिलायें वास्तव में समस्या में थी, जिसे शायद कभी न कह पाती, उन तक पहुंच उनको सहायता पहुंचाने का मौका मिला। यह श्रृंखला आज भी चल रही है, लॉकडाउन में जूम ऐप पर सेमिनार लिये, जिसमे समाज की उत्तरांचल और पूर्वांचल की महिलायें भी शामिल रहीं। लेकिन कुछ एनजीओ से जुड़ बाल उत्पीड़न जैसे संवेदनशील विषयों पर जागरूकता शिविर आयोजित किये। कई संगठन मुझे मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित कर चुके हैं और इनमें मैंने निःशुल्क सेवा दी है। लीगल और बैंकिंग दोनो क्षेत्रों में काम करते वक्त यह बात तो समझ आई कि हमारे समाज के महिलाओं अपने आर्थिक स्वावलंबन और कानूनी अधिकारों में शायद पूर्णता परिचित नहीं इसी को ध्यान में रख लीगल विद फायनेंस पर महिलाओं के लिये सेमिनार लेना शुरू किया जो अब तक चल रहा है।

पारिवारिक और कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारी और दायित्वों को पूरा कर अगर समय हो तो हमें अवश्य समाज के प्रति अपना योगदान देना चाहिये।

मुश्किलें, चुनौतियां तो हर किसी की राह में हैं मगर
उम्र थका नहीं सकती। ठोकरें गिरा नहीं सकती।।
अगर जिद हो जीतने की तो। परिस्थितियां भी हरा नहीं सकती।।

राजस्थानी नृत्य घूमर की बात हो या फिर कथक नृत्य की शहर की प्रतिभा नवीन सोनी की धर्मपत्नी रुपाली सोनी का नाम सीहोर शहर के हर व्यक्ति की जुबां पर सबसे पहले आता है। मंच पर जब रुपाली कथक, एकल नृत्य, गरबा या समूह में प्रस्तुति देती हैं तो हर व्यक्ति उनकी प्रतिभा की तारीफ़ करने लगता है। रुपाली शहर मे ''मिनी इला अरुण'' के नाम से भी जानी जाती हैं, तो अब अपने नृत्य प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से नृत्य गुरू के रूप में नयी प्रतिभाओं को भी तराश रही हैं।

टीम SMT

नृत्य गुरू रुपाली सोनी

सीहोर ग़ल्ला मंडी निवासी स्व. श्री देवकीनंदन एवं कान्ता भट्टर की मझली सुपुत्री रुपाली को उनकी प्रतिभा के लिये कई समाज सेवी संस्था, कला केन्द्र, एजुकेशन इंस्टिट्यूट द्वारा शहर, जिला, प्रदेश के साथ राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया जा चुका हैं। रुपाली का जन्म वर्ष 1978 मे म.प्र. के शाजापुर मे हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा भोपाल एवं शाजापुर में हुई। रुपाली को बचपन से ही नृत्य का बेहद शोक था। इसी को देखते हुए इनके माता पिता ने सीहोर के प्रसिद्ध संगीत गुरु पंडित वासुदेव मिश्रा से संपर्क किया और रुपाली की जिज्ञासा बताई। तब रुपाली की उत्सुकता देखकर पं. मिश्रा जी ने रुपाली को अपनी शिष्या बनाने की अनुमति प्रदान की। वे संगीतिका संगीत महाविद्यालय की कथक सीखने वाली प्रथम बैच की छात्राओं मे से एक थी। रुपाली ने बी.कॉम शिक्षण पूर्ण किया तथा वर्ष 2000 तक कथक में डिप्लोमा भी हासिल किया था।

विवाह भी बना सहयोगी

वर्ष 2000 मे रुपाली ने शादी के बाद कुछ वर्षो का विराम लिया परन्तु अपनी नृत्य के प्रति लगन व उत्साह को देखते हुये रुपाली ने विवाह के पश्चात भी अपने पति एवं परिवार की सहमति लेकर नृत्य के क्षेत्र मे अपना अध्ययन चालू रखा इसका परिणाम ये हुआ कि वर्ष -2020 मे रुपाली ने नृत्य के क्षेत्र में स्नातक उपाधि बी.डांस हासिल कर डबल ग्रेजुएशन कर सभी को चौका दिया। अब वे नृत्य के क्षेत्र में कला और संस्कृति से जुड़े शासकीय एवं अशासकीय मंचों पर अपनी प्रस्तुति के द्वारा उपस्थित जनसमूहों को मंत्र मुग्ध करने लगी। शहर की इस उभरती कलाकार को म. प्र. शासन द्वारा आयोजित युवा महोत्सव में कत्थक की शानदार प्रस्तुति देने को लेकर वर्ष 1994 से 1996 मे जिले के साथ साथ प्रदेश मे भी ग्वालियर एवं बैतूल में प्रथम स्थान प्राप्त कर सम्मानित किया गया था।

नृत्य ने दिलाया सम्मान

रुपाली को म.प्र. पूर्व क्षेत्रीय प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन पुणे, संगीतिका म्यूजिक कॉलेज सीहोर, खेल एवं युवा कल्याण विभाग सीहोर, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खेरागढ़, भारतीय संस्कृति के संरक्षण सवर्धन एवं उत्थान के लिये काम करने वाले विद्या भारतीय संस्कृति शिक्षा संस्थान हरियाणा, नगर पालिका सीहोर, जनपद पंचायत सीहोर, जिला निर्वाचन कार्यालय सीहोर, नवांकुर क्लब शाजापुर, दुर्गा उत्सव समिति सीहोर, नवोदित कला मंच सीहोर, साहित्य साधना मंच सीहोर, दूरदर्शन ज्ञानदीप मंडल सीहोर, माहेश्वरी समाज सीहोर, सिद्धपुर सांस्कृतिक चेतना मंच सीहोर, सीहोर सांस्कृतिक मंच सीहोर, सूरत जिला माहेश्वरी सभा अभिरुचि गरबा महोत्सव सीहोर, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन देहली, वृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन, माहेश्वरी समाज सूरत, वनिता विश्राम वुमेंस कॉमर्स कॉलेज सूरत, आल इंडिया कल्चरल सोसाइटी कटक (उड़ीसा) आदि अनेकानेक संस्थाओ द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान की इसी श्रृंखला में दैनिक भास्कर सीहोर द्वारा वर्ष 2019 में स्वच्छता स्लोगन में प्रथम आने पर सम्मानित किया गया। वहीं पत्रिका समूह द्वारा कला के क्षेत्र में वर्ष 2019 में रुपाली की उपलब्धि को देखते हुये पत्रिका अचीवर अवार्ड -2019 से नवाज़ा गया। रुपाली को पूर्व राष्ट्रपति स्व श्री शंकरदयाल शर्मा की माताजी द्वारा भी सम्मानित किया गया।

कलाकार से अब नृत्य गुरू का सफर

रुपाली ने अपनी कला को आगे बढ़ाते हुये वर्ष 2014 से शहर की बच्चियों को कला के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का प्रण लिया और सरस्वती कथक कला केन्द्र की वर्ष 2016 में नींव रखी। इस संस्था के माध्यम से शहर की उभरती कलाकारों को कथक नृत्य के साथ फोक नृत्य, गरबा डांडिया, धार्मिक एवं देशभक्ति नृत्यों के माध्यम से तराशने का कार्य करती हैं एवं समय-समय पर सेमिनार एवं मंच उपलब्ध कराया जाता है। इसी श्रेणी में रुपाली एवं उनकी संस्था की टीम को लगातार 3 वर्षो से शहर की विभिन्न गरबा समितियों द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त हुआ तथा 15 अगस्त -2019 मे शासकीय कार्यक्रम में जिले के सभी स्कूलों से मुकाबला करते हुये द्वितीय स्थान एवं वर्ष -2020 के गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम में प्रथम स्थान पाने का सुनहरा अवसर मिला। मार्च-2020 में कोविड-19 की परिस्थितियों में भी हार माने बिना रुपाली ने ऑनलाइन वर्चुअल प्लेटफार्म के माध्यम से कथक नृत्य एवं कथक योगा सिखाना चालू किया। अब संस्था ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों प्लेटफार्म पर क्लासिकल नृत्य का प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही हैं। संस्था की छात्राऐं राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय द्वारा डिप्लोमा एवं डिग्री कोर्स की परीक्षा देकर अपने कैरियर को संवार रही हैं। निकट भविष्य में बहुत जल्दी संस्था अपना खुद का कॉलेज शुरू करने की दिशा में कार्य कर रही हैं, संस्था का उद्देश्य उभरती प्रतिभाओं को सही मंच तक पहुंचाना एवं उनके कैरियर को एक नई दिशा देना है। आज संस्था की अनेक प्रतिभाएं स्कूल, कॉलेज एवं विभिन्न मंचों पर संस्था का नाम रोशन कर संस्था को एक नई पहचान दिला रही हैं।

सम्मानित होंगे माहेश्वरी समाज के 100 कर्मयोगी

भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग के प्रवर्तक और निष्काम कर्म के प्रेरक पुरुषोत्तम हैं। सृजन के विविध आयाम और कर्म की पराकाष्ठा से ओतप्रोत श्रीकृष्ण के मार्ग का अनुसरण करते हुए माहेश्वरी समाज के भी अनेक बन्धु-बहिनों ने कर्मयोग की अनुकरणीय मिसालें प्रस्तुत की हैं।

प्रतिष्ठित चैनल 'भक्ति सागर' और आपकी अपनी मासिक पत्रिका 'श्री माहेश्वरी टाइम्स' ने सृजन की विभिन्न विधाओं और लोक कल्याण के नाना क्षेत्रों में अपने निष्काम कर्म की छाप छोड़ने वाले समाज के ऐसे ही प्रेरक कर्मयोगियों के अभिनन्दन का निर्णय किया है। अखिल भारतीय स्तर पर चुने हुए इन '100 कर्मयोगियों' के साक्षात्कार चैनल पर प्रसारित किए जाएंगे और पत्रिका इन सभी के योगदानो को समर्पित विशिष्ट पुस्तक का प्रकाशन करेगी।

समाजजनों से आग्रह है कि कृपया अपने क्षेत्र के ऐसे कर्मयोगियों के बारे में हमें सूचनाएं सुलभ कराने का कष्ट करें, जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि के शिखर छूकर लोक के लिए कर्म की पराकाष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया हो। आप इनके नाम, परिचय, कार्य विवरण, चित्र, सम्पर्क नम्बर या मेल आईडी उपलब्ध करा कर हमारे इस अभियान में सहयोगी बन सकते हैं। श्रेष्ठ 100 का चयन निर्णायक मंडल के अधिकार में होगा।

श्री माहेश्वरी टाईम्स
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे)
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

www.rathi.com

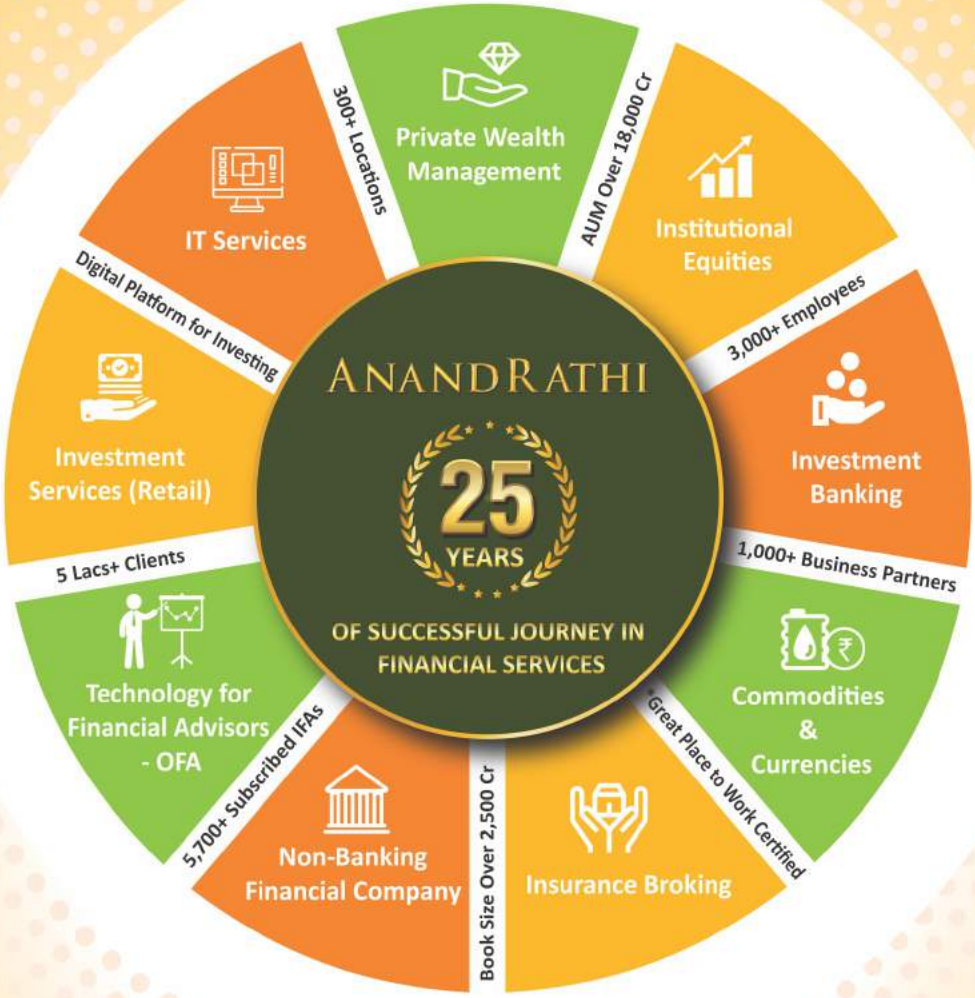

ANANDRATHI

Call us on 1800 200 1002 / 1800 121 1003 or log on to www.rathi.com

Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd. / AnandRathi Advisors Ltd.
Regd. Office: Express Zone, A Wing, 9th Floor, Western Express Highway, Opposite Oberoi Mall, Goregaon (E). Mumbai - 400063. India. Tel: 022 6281 7000
BSE (Mem.ID.949) CM: INB011371557 FO: INF010676931 BSE CD: Exchange Regn. | NSE (Mem.ID.06769) CM: INB230676935 FO: INF230676935 CD: INE230676935 | MSE (Mem.ID.1014) CM: INB260676938 FO: INF260676938 CD: INE260676935 | DP- NSDL: IN-DP-NSDL-149-2000, CDSL: IN-DP-CDSL-04-99. | Research Analyst - INH000000834 | MCX: MCX/TCM/CORP/0525 Mem.ID.: ITCM8500 | NCDEX: NCDEX/TCM/CORP/0178 Mem.No.: TCM00147 | NCDEX SPOT: NCDEXSPOT/043/CO/08/10050 Mem.No.: 10050 | PMS: INP000000282 | MBD-INM000010478 | Investment Adviser: INA000000268 | AMFI: ARN-4478 is Registered under "Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd." | ARN-100284 is Registered under "AR Wealth Management Pvt. Ltd." | ARN-111569 is Registered under "AR Venture Fund management Pvt. Ltd." --We are a distributor of Mutual Fund. Anand Rathi Global Finance Limited is registered as NBFC Regn. No.: B-13.01682. Insurance is registered under "Anand Rathi Insurance Brokers Ltd." License No. 175. PMS registered under Anand Rathi Advisors Ltd. Insurance Products are distributed under Anand Rathi Insurance Brokers Ltd. PMS, PAS & Wealth Management are not offered in commodities segment. Commodities is registered under Anand Rathi Commodities Ltd. | *Anand Rathi Wealth Services Limited.

Disclaimer: Investment in securities market are subject to market risks, read all the related documents carefully before investing. Investments in Mutual Fund are subject to market risk, read all the related documents carefully before investing.

कोरोना महामारी के कारण चले लॉकडाउन में जहाँ कुछ लोगों ने घर की चार दीवारी में मनोरंजन कर समय व्यतीत किया वहीं कुछ लोग इस समय का ज्ञान बढ़ाने में उपयोग करने में भी पीछे नहीं रहे। ऐसे ही भाई बहन हैं, जलगाँव निवासी देवेश व कलश भैया जिन्होंने एक दो नहीं बल्कि कई अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षाओं में सफलता का परचम लहराकर देश को गौरवान्वित किया।

अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षा में लहराया परचम

कलश व देवेश

जब दुनिया भर के छात्र कोरोना की वजह से नई ऑनलाईन शिक्षा पद्धति अपना रहे थे, तब समाज के दो प्रतिभावान छात्र विभिन्न अंतरराष्ट्रीय ऑनलाईन परीक्षाओं में भारत का परचम लहरा रहे थे। ये हैं जलगाँव निवासी नवल किशोर व उषा भैया के पौत्री - पौत्र तथा पंकज-पल्लवी भैया के सुपुत्री-सुपुत्र कलश एवं देवेश। दोनों ने अपने माता-पिता के मार्गदर्शन में ऑनलाईन परीक्षाओं में भाग लिया और केवल दस महीनों में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय परीक्षाओं में 21 से ज्यादा पदक जीतकर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

10वीं की छात्रा है कलश

कक्षा 10 वीं की छात्रा कलश ने सिंगापुर एण्ड साऊथ ईस्ट एशियन स्कूल्स मॅथ्स ऑलंपियाड (SASMO), सिंगापूर मॅथ कांगारु कॉन्टेस्ट (SMKC), इंटरनॅशनल जनरल नॉलेज ऑलंपियाड आदि इंटरनेशनल गोल्ड मेडल जीते हैं। साउथ इस्ट एशियन मॅथेमॅटिकल ऑलंपियाड (SEAMO), थाइलैंड इंटरनेशनल मॅथेमेटिकल ऑलंपियाड (TIMO), इंटरनॅशनल जुनिअर मैथ ऑलंपियाड (IJMO) में अंतरराष्ट्रीय सिल्वर मेडल तथा वंदा साईन्स कॉन्टेस्ट (VANDA), साऊथ इस्ट एशियन मॅथमॅटिकल ऑलंपियाड-एक्स (SEAMO-X) में अंतरराष्ट्रीय कांस्य पदक प्राप्त किया है ।

देवेश ने पाये शत-प्रतिशत अंक

कक्षा 8 वीं के छात्र देवेश ने अमेरिका के जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय की सैट जनरल मैथ्स परीक्षा में 800 में से 800 अंक प्राप्त किए हैं, इसके लिए इन्हें ग्रेड ऑनर अवार्ड के साथ 12 वर्ष की आयु में विश्वविद्यालय के टैलेंट यूथ सेंटर में स्थान दिया गया है। जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय के सेट प्री-कॉलेज न्यूजलेटर में उनकी तस्वीर के साथ परिचय प्रकाशित किया गया है। उन्होंने थाईलैंड इंटरनेशनल मैथेमेटिकल ऑलंपियाड (TIMO), साउथ इस्ट एशियन मैथेमेटिकल ऑलंपियाड (SEAMO), इंटरनॅशनल मैथ्स ऑलंपियाड (IMO), साऊथ इस्ट एशियन मैथमेटिकल ऑलंपियाड -एक्स (SEAMO-X) में अंतरराष्ट्रीय पहली रैंक के साथ स्वर्ण पदक जीते और 'विश्व चैंपियन' के रूप में सम्मानित किया गया। सिंगापुर एण्ड साऊथ ईस्ट एशियन स्कूल्स मॅथ्स ऑलंपियाड (SASMO), इंटरनेशनल जूनियर मैथ ओलंपियाड (IJMO), हांगकांग इंटरनेशनल मैथमेटिकल ओलंपियाड (HKIMO), इंटरनेशनल मैथ्स कंगारु कॉन्टेस्ट (SMKC), सिंगापूर इंटरनेशनल मैथ्स चैलेंज (SIMOC) में भी अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक जीते।

इंटरनेशनल ओलंपियाड में टॉपर

देवेश वर्ल्ड इंटरनॅशनल मॅथेमॅटिकल ऑलंपियाड (WIMO) में दूसरे और एशिया इंटरनेशनल मॅथ ओलंपियाड (AIMO) में (वर्ल्ड सेकंड रनर अप) तीसरे स्थान पर रहे। इन बारह स्वर्ण पदकों के अलावा, देवेश को अमेरिकी मैथ्स कॉन्टेस्ट (AMC 8) में पहली रैंक और इसी अवधि के दौरान अमेरिकी मैथ्स कॉन्टेस्ट (AMC 10) में भी ग्रैंड ऑनर मिला है। वे ऑस्ट्रेलियाई मैथ्स कॉन्टेस्ट में 'हायर डिस्टिंक्शन' और पर्पल कमेंट मैथ मीट 2020 के 'विजेता' हैं। देवेश को 'एलन चैंप 2020 बेस्ट ब्रेन ऑफ इंडिया' के रूप में भी चुना गया है। पिछले साल, देवेश को राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की उपस्थिति में दिल्ली में प्रधानमंत्री बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। शिक्षा के क्षेत्र मे रुचि रखने वाले होनहार बालिका-बालक कलश और देवेश मिलकर लॉकडाऊन से जरुरतमंद बच्चे जिनके पास ऑनलाईन पढ़ने की सुविधा नही थी, उन सभी को निःशुल्क में शिक्षा प्रदान करके समाज के प्रति अपना दायित्व निभा रहे है।

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

आज हमारे समाज में सगाई से विवाह तक का सफर भी नाजुकता से गुजरता है। जब तक विवाह ना हो जाये माता-पिता की चिंता बनी ही रहती है। सगाई से विवाह होने तक ऐसी कोई विध्न-बाधा ना आ जाये कि संबंध जुड़ने से पहले ही टूट जाये। यही कारण है कि जहां पहले सगाई संबंध से विवाह होने का अंतराल बरस दो बरस तक रखा जाता था वहीं समाज अब धीरे-धीरे चट मंगनी पट ब्याह की तरफ रुख करने लगा है। वर्तमान दौर में दाम्पत्य के रिश्ते विवाह के बाद भी तेजी से बिखरने लगे हैं। ऐसे में इसका दोष सगाई के बाद जल्द विवाह पर भी मड़ा जाने लगा है। अतः विचारणीय हो गया है कि सगाई का लंबे समय तक रखना होने वाले दाम्पत्य संबंध को मजबूत/कमजोर बनाता है? समाज व पारिवारिक व्यवस्था के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण इस विषय पर प्रबुद्ध पाठकों से उनके विचार आमंत्रित हैं। आपके ये विचार समाज को नई दिशा दिखाऐंगे।

सगाई से विवाह का अंतराल

दाम्पत्य सम्बंध को मजबूत बनाता है या कमजोर ?

कम से कम समय ही श्रेयस्कर

चूंकि आजकल विवाह-संबंध ही नहीं सगाई-संबंध भी बड़ी आसानी से टूटने लगे हैं जिसका एक बड़ा कारण सगाई से विवाह तक लंबा अंतराल रखना भी होता है। हजारों में से एकाध अपवाद को छोड़कर सगाई-संबंधों में लड़का-लड़की की पढ़ाई अथवा किसी अन्य कारण विशेष से सगाई और विवाह के बीच का समय अधिक रखना पड़ सकता है अन्यथा लंबे समय तक सगाई को रखने का आजकल कोई औचित्य दिखाई नहीं देता क्यूंकि लड़का/लड़की की सारी जानकारी तो सोशल मीडिया द्वारा आसानी से उपलब्ध होने लगी है। जिससे निजी स्तर पर भी दोनों पक्ष एक-दूसरे की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। लड़का-लड़की को सगाई के बाद ही नहीं सगाई के पहले भी एक-दूसरे को समझने की अनुमति मिलने लगी है। लड़का-लड़की भी बालिग, पढ़े-लिखे और समझदार होते हैं; बिना किसी दबाब के सोच-समझकर ही फैसला लेते हैं। अधिक समय तक सगाई को खींचना दोनों पक्षों पर मानसिक ही नहीं आर्थिक बोझ ही बढ़ाता है। कोई भी दो इंसान समान विचार और स्वभाव के नहीं हो सकते हैं और ना ही शत-प्रतिशत गुणवान। आपस में तालमेल बिठाकर ही दाम्पत्य जीवन का आनंद लिया जा सकता है। चाहे जितना भी समय दिया जाए दो लोगों को आपस में एक-दूसरे को समझने के लिए कम ही पड़ने वाला है। अगर परिवार-खानदान, सामाजिक-आर्थिक स्तर, पढ़ाई-लिखाई, संस्कार-संस्कृति आदि मनमुताबिक मिल जाये तो विवाह में देर नहीं करने में ही दोनों पक्षों की भलाई है। एक-दूसरे के प्रति इधर-उधर की सुनी-सुनाई बातों पर ध्यान ना देकर दोनों परिवारों को सगाई से पूर्व ही आपस में खुलकर चर्चा करनी चाहिए साथ ही विवाह की तैयारियों के लिए जितना यथोचित समय चाहिए उसके अनुसार विवाह की तिथि निर्धारित कर देनी चाहिए। दोनों पक्षों को विशेषकर नव-जोड़े को सगाई के बाद ही नहीं विवाह के बाद भी धैर्य, संयम, सामंजस्य और समझदारी बनाये रखना चाहिए।

■ **सौ.सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव

अंतराल मधुरता घोलने में सहायक

वैवाहिक जीवन की नींव विश्वास और सच्चाई से सिंची जाए तो भविष्य में निश्चित सुखद परिणाम हासिल होंगे। सगाई से विवाह तक का सफर सुहाना होता है। यह अवधि दांपत्य जीवन में मधुरता घोलने में सहायक होगी, क्योंकि इस अवधि में जीवनसाथी के खुबियों के साथ ही उनकी कमियों का भी पता चल जाता है। इससे हर स्थिति को स्वीकारने की पूर्व मानसिकता हो जाती है। युवक और युवतियों को धैर्य, समझदारी से रहना जरुरी हैं। हमसफर होने का अर्थ यह कदापि नहीं कि मात्र एक दूजे की इच्छा पूर्ति कर लेने से कर्तव्यों की इतिश्री नहीं होती। समाज और परिवार द्वारा कुछ नियम, मर्यादा बनी है जिनका पालन करना युवा वर्ग का दायित्व बनता हैं। छोटे-छोटे कारणों से रिश्ते टूट जाते हैं। जब बुनियाद ही कच्ची होगी तो शादी हो भी जाए तो भी इन रिश्तों का ढहकर गिरना निश्चित है। सगाई से विवाह का अंतराल अधिक रहने में यूं तो कोई दिक्कत नहीं है, किंतु विवाह संबंधित सारी चर्चाएं आजकल लड़का लड़की ही कर लेते है। जबकि उनके पास अनुभव का अभाव होता हैं। अति किसी भी चीज की उचित नहीं होती, अत्यधिक मेलजोल व फोन भी विवाद उत्पन्न करते है। इसलिए एक सीमा में रहकर ही बातचीत हो तो बेहतर। सफल वैवाहिक जीवन के लिए आपसी सम्बन्धों में पारदर्शिता रखें।

■ **राजश्री राठी,** अकोला

अंतराल हो या नहीं इससे कोई फर्क नहीं

हमारा पहला लक्ष्य है, सगाई से विवाह तक जुड़े हुए संबंध निर्विध्न और सुचारू रूप से परिपूर्ण हों। ऐसा है कि पहले तो संबंध जुड़ते नहीं, और जुड़ गए तो विध्न संतोषी लोगों की कुदृष्टि से टूटने का डर। कुछ साल पहले शादी तय कर रख सकते थे क्योंकि लड़का लड़की अपने मां - बाप के निर्णय को सर्वोपरी मानते थे। दौर बदला बेटा-बेटी में शिक्षा की होड़ लगी। विदेश में शिक्षा ग्रहण करने लगे। विदेशी संस्कृति व तौर-तरीके अपनाने में खुद को बाध्य समझने लगे। दोनों कमाने लगे। पहले सोशल नेटवर्किंग का कोई सहयोग नहीं था। अब समय में बदलाव आया है। दोनों कामकाजी होने से घर परिवार से दूर रहने लगे। सोच विचार की कमी, विभक्त कुटुम्ब, सही गलत समझाएं कौन? सगाई के बाद शादी की जल्दी करना जरूरी है क्योंकि सगाई के बाद शादी तक हमारे समाज में पूरे साल के त्यौंहारों को बेटी के घर से बेटी के ससुराल कुछ न कुछ भेजने की रीत है। अगर सगाई साल भर तक रही तो 2 बार यानि सगाई के बाद और शादी के बाद भी त्यौंहार पर खर्च करने का भार बेटी के परिवार वाले वहन नहीं कर पाएंगें। मेरा विचार है कि दाम्पत्य संबंध को ये सभी बातें न कमजोर बनाती हैं न मजबूत। ये तो अपनी अपनी सोच है।

■ **मीना कलंत्री,** मुंबई।

अंतराल से विवाह का संबंध नहीं

सगाई से विवाह तक का सफर अत्यंत सुहाना होता है। सगाई एक छोटी सी रस्म है जो हमसफर के साथ नये सफर के पहले कदम की शुरूआत है। जो दाम्पत्य जोड़े को खूबसूरत रिश्ते में बांध देती है। दाम्पत्य जोड़ा सगाई से विवाह तक के अंतराल में दोस्ती का रिश्ता निभाता है। इन पलों को यादगार बनाने के लिए सपनों की जिंदगी जीते हैं। उन पलों में सिर्फ प्यार और मस्ती ही होती है। बातें भी समझदारी की होती है। दाम्पत्य संबंध की मजबूती या कमजोरी का अनुभव तो दाम्पत्य जीवन में प्रवेश से ही होता है। जब मीठे-मीठे पल जिम्मेदारियों के पलों में बदलते हैं, तभी आपसी समझदारी, प्यार और विश्वास की परीक्षा होती है। इस परीक्षा में पास हो गये तो संबंध निखर जाते हैं, वरना बिखर जाते हैं। सगाई से विवाह का अंतराल माता-पिता की चिंता का कारण बना हुआ है। पहले का युग और था, जहां विवाह सादगीपूर्ण तरीके से हर्षोल्लास के साथ संपन्न होते थे। पहले बच्चों की परवरिश का तरीका अलग था। जिससे विवाह टूटने का भय नहीं होता था। सगाई से विवाह के अंतराल में कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन रिश्ते तोड़ने में देर नहीं करते इसलिए विवाह में विघ्न के भय से माता पिता चट मंगनी पट ब्याह करना चाहते हैं। अतः मेरे विचार से दाम्पत्य संबंध आपसी समझदारी, अपनों के प्यार और विश्वास से ही मजबूत बनता है ना कि अंतराल से।

■ **किरण कलंत्री,** रेणुकूट (उ.प्र.)।

सोच व समझदारी जरूरी

बहुत ही सुन्दर विषय समाज के सामने आया है। हमारा यह निजी भावना के साथ मानना है कि अगर वैवाहिक पक्षों सगे-सम्बंधी में मधुर प्रेम हो, लड़का- लड़की आज के समय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी अगर आपसी सौच - समझदारी- व्यवहार और सहनशीलता हो तो अपनी स्थिति परिस्थिति अनुसार सम्बंध तय करके जल्दी वैवाहिक दाम्पत्य बन्धन होने से भी दरार या सम्बंध टूटने की स्थिति प्रायः कम ही होती है।

■ **घनश्याम राठी,** बिराटनगर।

अंतराल दांपत्य संबंध को मजबूत बनाता है

मानव जीवन समझदारी से भरा होता है।विवाह सभी लोगों के लिए जीवन की नई सीडी है । सगाई के बाद दंपत्ति के पास एक दूसरे को समझने का आधा लाइसेंस प्राप्त हो जाता है। इस बीच में अपनी आपसी बातें एक दूसरे से शेयर कर सकते हैं। जैसे अपनी रुचि, नकारात्मक पॉइंट्स, सकारात्मक पॉइंट्स, लक्ष्य आदि। विवाह का बंधन विश्वास की दौड़ से बना होता है। विश्वास से ही इस वैवाहिक रिश्ते को आगे बढ़ाया जा सकता है। वक्त चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा हो, स्थिति चाहे जैसी हो, दम्पत्ति हमेशा एक दूसरे के साथ रहेंगे, तो जीत जाएंगे। विवाह का अभिप्राय सोचना नहीं बल्कि एक साथ सोचना है। एक दूसरे को समय देना है। शादी में ईमानदारी बहुत जरूरी है। आप आधे सच और आधे झूठ के बल पर एक मजबूत रिश्ता नहीं बना सकते। इस अंतराल में रिश्ते और विश्वास दोनों ही दोस्त हैं। रिश्ता रखो या ना रखो पर विश्वास जरूर रखना होगा, क्योंकि जहां विश्वास होता है वहां रिश्ते अपने आप पनप जाते हैं, इससे संबंध मजबूर हो जाता है।

■ **पूजा काकाणी,** इंदौर (म.प्र.)

अवधि से कोई फर्क नहीं पड़ता

मेरे विचार में सगाई को लम्बे या कम समय रखने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। दांपत्य जीवन में व्यक्ति के अंदर की सोच अच्छी व मजबूत होनी चाहिए और अपने रिश्ते पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए, तभी रिश्ता मजबूत रहेगा और टूटेगा भी नहीं। ज्यादा समय संबंध रहने पर आजकल माता-पिता को डर रहता है, यह बात बिल्कुल सच है क्योंकि आजकल मोबाइल का जमाना है, तो मोबाइल में सारी बातें इधर की उधर हो जाती है। बिना अंडरस्टैंडिंग के कारण रिश्ता टूटने का डर लगा रहता है। यह नहीं है कि आज रिश्ता लंबे समय तक नहीं रहता है, रहता है। बस दोनों परिवारों के बीच और लड़का और लड़की के बीच बहुत समझदारी होनी चाहिए जिससे वह बड़े सुंदर ढंग से अपने दांपत्य जीवन की शुरुआत भी करेंगे और लास्ट तक निभाएंगे भी। थोड़ी सी सहनशीलता भी दोनो को रखनी पड़ती है, दोनों के विचार एक जैसे नहीं होते हैं।

■ **भगवती शिवप्रसाद बिहानी,** नाजिरा आसाम

आपसी सूझबूझ जरूरी

सगाई व विवाह के अंतराल का समय कम या अधिक होना सुखद वैवाहिक जीवन का आधार नहीं है। बीते समय में सगाई की अवधि ज्यादा होने के पीछे कम उम्र में शादी व बातचीत, मिलने जुलने का चलन ना होना भी कारण था। वर्तमान में परिस्थितियां विपरीत है। आधुनिकता व स्वतंत्रता का जामा पहनकर दिखावे की ओर अग्रसर हो रहे है। आये दिन मिलना, महंगे तोहफे देना जैसे आम बात हो गई है। मैं ये नहीं कहती कि लड़के लड़की मिलें नहीं पर कुछ दायरा व सादगी तो हो। सगाई पश्चात विवाह में अतिशीघ्रता भी न करे, परिवार व लड़के के बारे में जानकारी लें। ज्यादा समय भी न रखे क्योंकि इससे माता पिता पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। वैसे किसी भी इंसान की परख साथ रहकर ही की जा सकती हैं। कहते हैं ना 'दूर के ढोल सुहावने लगते है'। बच्चों को सहनशीलता, प्यार, अपनेपन, विश्वास की सीख दें। रिश्ते बहुत नाजुक होते हैं, जल्दबाजी में कोई फैसला न लें। सगाई की अवधि से दाम्पत्य जीवन की तुलना न करें। विवाह तो आपसी समझ, त्याग, समर्पण का रिश्ता है। इन्हें अपनाकर ही हम समाज में एक मिसाल कायम कर सकते है। रिश्ता तय करते समय अपनी सूझबूझ से काम लें, लोगों की बातों में न आये।

■ **ज्योति माहेश्वरी,** कोटा राजस्थान

वर्तमान में अंतराल जरूरी नहीं

दाम्पत्य जीवन में सगाई से विवाह तक के अंतराल का समय बहुत ही महत्वपूर्ण, बेहद नाजुक, संवेदनशील होता है, जहाँ लड़के-लड़कियों के साथ ही दोनो के परिवारों को भी एक दूसरे के सोच- विचार और रीति रिवाजों को जानने, समझने का अवसर मिलता है। इससे दाम्पत्य जीवन में निखार के साथ, आपसी रिश्तों में मजबूती भी मिलती है। परन्तु हर सिक्के के दो पहलू होते है, जहाँ कुछ सकारात्मक सोच से रिश्तों में आत्मीयता को बढ़ावा मिलता हैं। वहीं आज के आधुनिक परिवेश में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते है। आज अति स्वतंत्रता, मोबाइल और प्री वेडिंग के युग में जैसे ही सगाई होती हैं लड़के और लड़कियों का आपस में

मेलजोल इतना बढ़ जाता है कि जिससे पसंद-नापसंद, परिवार की कुछ आंतरिक बातें आदि एक दूसरे को पता चलती हैं। कुछ हद तक तो ये सही है, परन्तु परिवार के सदस्यों में अच्छे गुणों के साथ एक ही टॉपिक पर भिन्न भिन्न मानसिक सोच और दृष्टिकोण भी उत्पन्न होता है। जब गुणो के साथ कुछ कमियों का पता चलता है तो दाम्पत्य जीवन मे बंधने से पहले ही उनमें कुछ रिश्तों व अपने भावी जीवनसाथी के प्रति उनकी एक मानसिक सोच बन जाती हैं जो कहीं ना कही सुखी, सुंदर दाम्पत्य जीवन के विच्छेदन औरआपसी मन मुटाव का कारण बन जाती हैं। साथ ही कुछ रिश्तों की अहमियत भी कम हो जाती हैं, जिससे रिश्ते में मजबूत बंधने से पहले ही दरार आना शुरू हो जाती है। प्राचीन समय मे ना तो मोबाइल, ना एक दूसरे से मिलने की इतनी आजादी होती थी इसलिए उस समय 1 या 2 वर्ष का अंतराल एक दूसरे को जानने व समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता था जिसकी वर्तमान में आवश्यकता नहीं।

■ **राजकुमारी मंत्री, अध्यक्षा**
माहेश्वरी सखी मंडल, रामनगर अजमेर

थोडा समय तो देना ही चाहिए

समाज में सगाई एवं विवाह के बीच एक उचित दूरी या अंतराल रखा जाता था, साल-दो-साल तक का भी। इस बीच जो भी तीज त्यौहार हुआ करते थे, उन अवसरों में लड़का लड़की वाले एक दूसरो के घर नेग-शगुन भेजा करते थे। इसके पीछे छुपा हुआ गूढ कारण यह होता था कि विवाह सिर्फ लड़का-लड़की का ही संबंध नही बल्कि उन दो परिवारों का मिलन है। रिश्तेदारी मे पहले से ही प्रगाढता आती थी। फोन नही होते थे पर फिर भी पसंद ना पसंद का ख्याल रखा जाता था। रीति रिवाजो का आदान-प्रदान समझ लिया जाता था। इससे दोनो परिवार में एक भरोसे की रिश्तेदारी का महत्वपूर्ण भाव जागृत होता था। लड़का लड़की ही नही बल्कि सास-ससुर, देवर-ननंद, साला-साली हर एक अपना रोल विवाह के पहले ही परिपक्वता से निभाने लग जाते थे या यूं कहे जिम्मेदारी का एहसास विवाह के पहले ही हो जाता था। इसलिए समझदारी की अधिकता के कारण 'तलाक' का नामोनिशान दूर-दूर तक नही होता था। और अब 'चट मंगनी पट ब्याह' में लड़के लड़की दोनों ही एक दूजे को चट पहचानते पट ब्याह बाकी सभी लोग लड़की-लड़के वाले बनकर उन लोगो के विवाह में भूमिका मात्र निभाते है। जब दोनो के बीच कभी मतभेद आ जाता है तो तुरंत तलाक तक बात चली जाती है। मेरा मत रहेगा चट मंगनी पट ब्याह की जगह 5-6 महिने का समय दिया जाए। इससे समाज में एक स्वस्थ वातावरण तैयार होगा।

■ **अभिषेक प्रेमप्रकाश गोदानी**
(पिपरिया), नागपूर

अंतराल नही समझ जरूरी

नई पीढ़ी है तो सोच भी बिल्कुल नई व अलग ही होगी। लड़के व लड़कियों को आजकल बराबर का दर्जा दिया जाता है, उसके पीछे की वजह है उनकी शिक्षा। इसी शिक्षा ने लड़कियों को भी हर तरह से सक्षम व ताकतवर बना दिया है। वे अपने भावी जीवनसाथी को ठीक से जानना चाहती हैं जो मेरी राय में कोइ गलत बात भी नहीं। वहीं पुरानी पीढ़ी और उनका अनुभव भी कोई कमतर नहीं। क्योंकि जितना ज्यादा समय सगाई के बाद मिलेगा उसमे ये जोड़े हर आने वाले रविवार का रास्ता देखेंगे चाहे वो देश का कोई भी कोना क्यों ना हों, 24 घंटे ऑनलाईन रहना, घंटों फोन पर बातचीत करना, ये लगभग आम सी और प्रेस्टिज की बात है। वरना ये माना जाएगा कि परिवार वाले या तो बैकवर्ड है या फिर उन दोनों में से किसी में कोइ कमी है। फिर शुरू होगी विचारों, रहन सहन, शिष्टाचार व तमीज की अनबन। कई बार तो रिश्ता टूटने की वजह होती है, नासमझ उम्र में की गई दोस्ती। मेरे ख्याल में इस समस्या का समाधान दोनों पीढ़ी को मिलजुलकर करना चाहिए। अभिभावकों को चाहिए कि शादी की तैयरियों में जो खर्चा करते हैं उसकी बजाय अपनी संतानों को विवाह पश्चात की एक-दूसरे के प्रति दायित्व को समझाने में अपना समय खर्च करना चाहिए। वहीं युवा पीढ़ी को शादी में मनीष मल्होत्रा की या तरुण तहलानी की पोशाक पहनी जाए के बजाय शादी में लिए जाने वाले फेरो को सगाई पश्चात ही समझकर उसे निभाने का खुद से वादा करना चाहिए। जिससे उन्हें अपना दांपत्य जीवन कभी बोझ ना लगे।

■ **पूनम-पुष्पकुमार धूत, वापी** (गुजरात)

अन्तराल जरूरी लेकिन अधिक नहीं

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज परिवार के बाद ऐसी महत्त्वपूर्ण ईकाई है जहाँ व्यक्ति अपनी हर महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने में सक्षम हो सकता है।रही बात विषय के अनुरूप सगाई से विवाह के बीच अन्तराल दाम्पत्य जीवन को मजबूत बनाता है या कमजोर? तो मेरा मानना यह है कि न तो सगाई और विवाह के बीच का अन्तराल एक-डेढ़ वर्ष से अधिक हो और न ही 'चट मंगनी, पट ब्याह।' ये दोनों ही स्थितियाँ कई मायने में कहीं न कहीं संबंध विच्छेद का कारण बनने की उत्तरदायी होती हैं। डेढ़-दो वर्ष से अधिक सगाई रखने पर जहाँ वर-वधू दोनों पक्षों को आपस में जानने -समझने का समय मिल जाता है और वे सही समय पर सही निर्णय लेने की स्थिति में हो सकते हैं। वहीं कभी-कभी इस अन्तराल के दौरान अधिक मेलजोल बढ़ जाने से विपरीत परिस्थितियाँ भी उत्पन्न होने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। ऐसी परिस्थितियाँ भी संबंध विच्छेद का प्रमुख कारण बन जाती हैं। वहीं देखा जाए तो 'चट मंगनी - पट ब्याह' अर्थात एक दूसरे को जानने -समझने का उचित अवसर दिये बिना 2-3 माह के अन्तराल पर ही विवाह के बंधन में बाँध देना भी बच्चों के भावी जीवन को बहुत प्रभावित करता है। कारण स्पष्ट है कि इस अल्पावधि में न तो दोनों ही परिवार एक-दूसरे को जान-समझ सकते हैं और न ही एक-दूसरे के विषय में पूरी जानकारी ही जुटा पाते हैं। इसके अतिरिक्त लड़का -लड़की भी एक-दूसरे को ठीक से जान समझ नहीं सकते हैं। यह मात्र भावावेश में लिये गये निर्णय का ही परिणाम होता है।

■ **मधु माहेश्वरी,** सलुम्बर जिला उदयपुर, राज.

अंतराल बहुत जरूरी

आज का युग भौतिकवादी युग है। समाज आधुनिकता की दौड़ में अपने रीति-रिवाज, परंपराए, आदि को छोड़ पाश्चात्य सभ्यता को धीरे- धीरे अपनाता जा रहा हैं। भारतीय समाज में शादी-ब्याह होते थे तो उसमें सबसे पहले सगाई दस्तुर होता था। सगाई और शादी के बीच दो- तीन साल का अंतराल रहता था जिससे दोनो परिवार के व्यक्ति एक- दुसरे को जानते पहचानते व उनके आचार-विचार आदि देखते थे

एवं बाद में शादी करते थे जिससे कभी टूटती नहीं थी। क्योंकि लड़के व लड़की दोनो के परिवार एक-दूसरे को अच्छी तरह से पहचान लेते थे। लेकिन आज ठीक इसके विपरित 'चट मंगनी पट ब्याह' होता हैं जिसमें दोनो पक्ष एक-दूसरे को ठीक तरह से पहचान भी नहीं पाते तथा वर-वधु जिनको पूरी जिन्दगी एक-दूसरे के साथ रहना है उनको भी आपस में एक-दूसरे को पहचानने का समय नहीं मिलता है जिससे शादी होने के एक साल के अंतराल में ही कई बार दाम्पत्य संबंध टूट जाते हैं। अतः मेरी राय से तो सगाई व शादी के बीच कम से कम 6 माह का या इससे ज्यादा समय तो रखना ही चाहिए। सगाई व शादी के बीच में अन्तर रहेगा तो काफी हद तक शादियाँ टूटने से बचेंगी और दांपत्य जीवन सुखमय बीतेगा क्योंकि अगर टुटनी होगी तो सगाई टूटेगी, शादी नहीं।

■ **शारदा चाण्डक (जाजु)**, (उदयपुर)

परिस्थितियों पर निर्भर है अन्तराल

सिक्के के हमेशा दो पहलू होते हैं एक हमारी आंखों के सामने होता है, एक उसके पीछे। मानव जीवन में इन दो पहलुओं के बीच संतुलन बेहद अनिवार्य है। अगर प्रेम विवाह है तो सगाई के बाद विवाह में अंतराल दिए जाने की कतई आवश्यकता नहीं, लेकिन यदि विवाह निर्धारित किया गया है तो थोड़ा अंतराल दिया जाना आवश्यक है। यहां यह भी विचारणीय है कि दोनों पक्ष एक दूसरे से कितने परिचित हैं? यदि आप एक दूसरे पक्ष को निकट से जानते हैं तो भी ज्यादा समय सगाई रखना जरूरी नहीं। लेकिन यदि दूसरा पक्ष सर्वथा अपरिचित है तो निश्चित रूप से लड़के और लड़की को कुछ समय एक-दूसरे को समझने के लिए दिया जाना आवश्यक है। चूँकि विवाह दो व्यक्तियों के बीच होने वाला जीवन भर का संबंध ही नहीं वरन दो परिवारों, दो कुटुंब के मध्य होने वाली जीवन भर की रिश्तेदारी भी है, जिसे जिम्मेदारी के साथ निभाना अत्यंत आवश्यक है ताकि दोनों परिवारों का मान सम्मान बना रहे और संबंध भी हमेशा मधुर रहें। ऐसे में सिर्फ लड़के और लड़की को एक दूसरे को जानना ही नहीं होता बल्कि एक दूसरे के परिवारों, परिजनों और उनके विचारों से भी परिचित होना होता है।

■ **अर्चना गोरानी**, इंदौर (म.प्र.)

अति बुरी चाहे अंतराल हो या न हो

अति सर्वत्र वर्जयेत! यह उक्ति बहुत विचार करने पश्चात हमारे पूर्वजों ने लिखी थी। प्रत्यक्षतः आज की इन अत्यन्त गतिमान परिस्थितियों में ये अधिक प्रामाणिक सिद्ध हो रही हैं। संचार माध्यमों का आवश्यकता से अधिक उपयोग, इन माध्यमों द्वारा अनगिनत मित्रों से जुड़ना और उनमें अधिकांश ऐसों का होना, जिन्हें हम जानते तक नहीं हैं, न ही उनके स्वभाव से ही परिचित होते हैं।मनुष्य के जितने भी नैसर्गिक गुण-अवगुण होते हैं, वे न्यूनाधिक मात्रा में सभी में विद्यमान होते ही हैं। जहां तक सगाई और विवाह के मध्य अंतर होता है, वह परिस्थति जन्य होता है। अनावश्यक कोई भी विलम्ब नहीं चाहता है। यह समय आपसी विश्वास को प्रगाढ़ करने का होता है, साथ ही साथ हम हमारे उन तथाकथित सोश्यल मित्रों को भी परख सकते हैं कि वे सभी हमारे भावी वैवाहिक सम्बन्धों को बाधित करने का प्रयास तो नहीं कर रहे हैं। यह परिस्थिति हमें परिपक्व भी बनाती है, तो अशक्त भी। हमें अपने पर विश्वास करना, अपने चयनित जीवनसाथी पर विश्वास करना अपने परिवार जनों पर एवम् भावी सम्बन्धियों पर विश्वास करना आना ही चाहिये, तभी हम हमारे भावी वैवाहिक जीवन की नींव को सुदृढ़ बनाकर अपने सुन्दर स्वभाव से भव्य पारिवारिक महल बना सकते हैं।

■ **महेश कुमार मारू**, मालेगांव

एक दूसरे को समझना जरूरी

कई रिश्ते जन्म से जुड़े होते हैं, कई खून से, तो कई नाते रिश्तो से, बस वैवाहिक संबंध ही एक ऐसा नाता है, जिसमें दो अनजान लोग परिवार के माध्यम से मिलकर, सोच समझकर एक दूसरे से रिश्ते में बंधते है। सगाई से विवाह तक का समय बहुत नाजुक जरूर होता है, मगर आपसी समझ-बूझ व एक दूसरे को समझते हुए, सामाजिक मर्यादाओं में रहकर निभाया जाए तो यह अंतराल वैवाहिक जीवन के आने वाले सफर को मजबूत बनाता है। मगर यह ध्यान रखना चाहिए कि अंतराल बहुत ज्यादा लंबा ना हो, क्योंकि 'अति सर्वत्र वर्जयते' अगर किसी कारणवश ज्यादा लंबा समय हो भी जाए तो घर के बड़े समय-समय पर ध्यान रखें कि इस रिश्ते में किसी बात से कोई गलतफहमी ना आ जाए। क्योंकि पहले छोटी उम्र में शादियां तय होती थी दोनों नासमझ होते थे, बातें भी ज्यादा नहीं होती थी। मगर वर्तमान दौर में दोनों समझदार होते हैं और मोबाइल के जरिए बातें व मिलना जुलना सब चलता है। यह एक दूसरे को अच्छे से समझने के लिए बहुत जरूरी है, बस इस रिश्ते की नाजुकता को ध्यान में रखते हुए अपने भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए, लड़का लड़की दोनों को समझदारी भरे माहौल में एक दूसरे को समझना चाहिए। फिर चाहे सगाई से विवाह के बीच का अंतराल कम हो या ज्यादा कोई फर्क नहीं पड़ता।

■ **रेखा राजेश लखोटिया**, नागपुर

परिस्थिति अनुसार सभी का दृष्टिकोण

भारतीय संस्कृति में परिणय बंधन का अति विशेष महत्व है। द्वापर युग, त्रेतायुग में भी विवाह बंधन किस तरह जुड़ते थे। वह हमने ग्रंथों से लेकर संतो की मुख वाणी से पढ़ा-सुना है। समयकाल के हिसाब से समाज ने चट मंगनी पट ब्याह से लेकर, सगाई और शादी के छोटे, बडे अंतराल के कई अनुभवो को साक्षी मानकर होनेवाले संबंधो में सावधानी बरतकर ही अपने कदम इस दिशा में बढाए है। इसमें दो राय नही। अब एक नए युग की शुरुआत, और इस युग में हम नित-प्रतिदिन नई नई खबरों से अवगत होकर आश्चर्य के भाव से सोच में पड़ जाते हैं। यह कटु सत्य है कि आधुनिक युग का दौर मोबाइल का दौर, बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने का दौर, और न जाने किस-किस बारे में अपने आप को विशेष बताने का दौर है। संबंधो की बात की शुरुआत में ही पहले बच्चे एक दूसरे को मिलेंगे। बच्चे एक दूसरे को फोन पर परखेंगे। बच्चों के हाँ बोलने पर अभिभावक आगे की बात करेंगे। यह है आज की कड़वी सच्चाई। जिन संबंधों की बुनियाद ही इस इस बात से शुरु होती है। वहाँ बाकी सब बातें करना मेरी नजरों में बेमानी। शादी संबंधों में समाज के हर बंधु की प्रवृत्ति, परिस्थिति, माहौल के अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं।

■ **सतीश लाखोटिया**, नागपुर, महाराष्ट्र

कम ही सही पर अंतराल जरूरी

सगाई से शादी के बीच के अंतराल को आज के सन्दर्भ में उचित इसलिये कहा जा सकता है क्योंकि कुछ समय बच्चों को एक दूसरे को समझने का अवसर मिल जाता है। वे वैचारिक स्तर पर एक दूसरे को समझ सकते हैं। निश्चित तौर पर आज का समय विचार थोपने का बिलकुल नहीं, परिपक्वता से यदि वे परिवारों की विभिन्नता को आपस में साझा कर स्वयं भी एक दूसरे को समझ कर ग्रहस्थ जीवन में प्रवेश करें, तो कुछ हद तक समस्याओ को टाला जा सकता है। बशर्ते कि एक दूसरे को गुमराह न करें बल्कि समझने का प्रयास करें। लड़के-लड़कियाँ दोनों ही अब अपनी स्वतंत्रत सोच रखते हैं व अपने दृष्टिकोण को वे समझा सकते हैं। सगाई के पहले भी सहज़ बातचीत के अवसर से भी उन्हें वंचित नहीं किया जाना चाहिये। कुछ हद तक लम्बा अंतराल न सही, थोड़ा समय लेना लाभकारी हो सकता है। यदि आपसी तालमेल और वैचारिक आदान प्रदान द्वारा वे स्वस्थ्य तरीके से अपने-अपने आगामी स्वप्न और सोच को सही तरह से विमर्श कर सकते हैं। पूर्ण नहीं तो कुछ हद तक विच्छेद को रोक सकें। सगाई और शादी के बीच कुछ समय अवश्य देना चाहिए जिससे समय का विवेक पूर्ण उपयोग कर बाधाओं पर नियंत्रण पाया जा सके.

■ **पूजा नबीरा,** काटोल नागपुर

अधिक अंतराल परेशानी का कारण

आज के माहौल में रिश्ता तय होने के बाद सगाई से विवाह तक का अंतराल बहुत ही नाजुक समय का रहता है क्योंकि जब तक विवाह न हो जाय माता-पिता को यही लगता है कि कहीं सम्बंध टूट न जाये। आजकल स्वैच्छिक विवाह में जाति तथा धर्म का विचार गौण होकर प्रेम विवाह को प्रोत्साहन मिल रहा है। यदि माता पिता को रिश्ता पसंद नहीं हो तो भी विवाह हो रहे हैं। ऐसे दाम्पत्य संबंध बजाय मजबूत होने के कमजोर हो रहे हैं। अवयस्कता की उम्र मर्यादा पूरी हो जाने पर कानून के अनुसार बच्चों को निर्णय का अधिकार मिल जाता है। एक समय वह था कि परिवार में बुजुर्गों व रिश्तेदारों द्वारा ही विवाह योग्य युवा-युवतियों के लिये जीवन साथी देखे जाते व तय किये जाते थे। अब बच्चों की इच्छा व भावनाओं को ध्यान में रखकर उनकी सहमति के उपरांत ही वैवाहिक रिश्ते वैश्य समाज में भी स्वयं पालकों द्वारा कराये जा रहे हैं। विभिन्न जातियां, आचार-विचार, खान पान व एक समान धर्म को मानने वाले परिवार विवाह द्वारा नजदीक आ रहे हैं और आगे भी आते रहेंगे। बस सगाई और विवाह में जितना कम समय रखा जाये उतना ही अच्छा रहता है। अधिक समय का अंतर ढेरों संभावनाओं को जन्म देता है।

■ **हेमलता गांधी,** उज्जैन

अंतराल दाम्पत्य संबंध को कमजोर बनाता है

शादी तय होने के बाद सगाई और शादी की तारीख में ज्यादा फासला शादियां टूटने की वजह बन रहा है। यही नहीं सगाई और शादी के बीच अधिक अंतराल में युवक और युवतियां चैटिंग करते हैं। फोन पर बात और इंस्ट्राग्राम आदि भी शादी टूटने की वजह बन रहे हैं। आज युवक-युवतियां सोशल साईट्स पर ज्यादा एक्टिव हैं। इससे लड़के-लड़कियां एक दूसरे को पहले ही जान जाते हैं। अगर उन्हें पसंद नहीं आया तो वे रिश्ता तोड़ देते हैं। समाज के बड़े-बुजुर्गों और विशेषज्ञों का मानना है सगाई के बाद शादी में ज्यादा गेप होना शादी टूटने की बड़ी वजह है। इस गेप में मिलने-मिलाने से एक-दूसरे की कमियां ज्यादा सामने आती है। अंत में मैं यही सोचता हूँ कि चट मंगनी पट ब्याह।

■ **योगेश राठी,** अमरावती

अधिक अंतराल उचित नहीं

आज के परिवेश में सगाई से विवाह के अंतराल के दौरान माता-पिता एक अजीब मानसिक दबाव के दौर से गुजरते हैं और हर पल यह प्रार्थना करते हैं कि शादी बिना किसी बाधा के सम्पन्न हो जाये। अधिकतर रिश्ते चूंकि स्थानीय स्तर पर होते हैं तो रोजाना मुलाकातें, साथ हर शाम घूमने जाना, मोबाईल पर बात के अतिरिक्त हर वक्त चैटिंग करते रहना, लड़के का पुरूष होने का पारम्परिक दम्भ, लड़की द्वारा साधारणतया किसी भी प्रकार का दबाव मानने से इंकार आदि कारण कई बार सगाई स्टेज पर ही रिश्ता टूटने का कारण बन जाते हैं। इस अंतराल में भावी पति पत्नी इतने अधिक समय तक साथ बिता चुके होते हैं कि शादी के बाद वाला नये पन का आकर्षण काफी हद तक कम हो जाता है। यह अंतराल जितने लम्बे समय का होगा, उतना ही तनाव वाला होगा। लड़की की भावी सास की अपेक्षाऐं, हर हफ्ते या हर अवसर वार-त्यौंहार पर लड़की वालों के यहां से नये-नये पकवान या अन्य वस्तुएं आने की अपेक्षा करना व अपेक्षित कार्य मनमाफिक न होने पर लड़कियां उसके माता पिता पर प्रत्यक्ष या परोक्ष टिप्पणी कर आग में घी डालने का कार्य करती हैं। इससे उपजा तनाव शादी के बाद के समय में भी समस्या पैदा करता है। प्रीवेडिंग सूटिंग के दौरान दोनों की अंतरंगता या कई बार इस हेतु उस शहर से बाहर जाने पर सामाजिक वर्जनाओं के उल्लंघन से होने वाली शंकाओं व वहम के तनाव का असर शादी के बाद भी बना रहता है।

■ **सुरेंद्र बजाज,** जयपुर

विवाह की मजबूत नींव के लिये जरूरी अंतराल

जब दो लोगों में वैवाहिक संबंध जुड़ते हैं तो वो दो परिवारों के रहन-सहन, विशेषताएं, प्राथमिकता इत्यादि भावनाओ को साथ लिए एक-दूसरे के साथ रहने पर अपनी झलकियां छोड़ते हैं। जो आदतें और दिनचर्या है, उसमें व्यक्ति विशेष रूप से बचपन से ढलता हुआ आया रहता है इसलिए उसे बदलना या उसमे बदलाव कर सामने वाले के हिसाब से रहना ये कार्य शादी के बाद हर जोड़े को करना पड़ता है। आपसी समझ, रिश्तों में लचीलापन, वैचारिक आदान-प्रदान, आपसी तालमेल ये घटक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सगाई से शादी के बीच की अवधि अधिक होने से लाभ ये होता है कि दो लोगों को इन घटकों पर विचार करने और दाम्पत्य जीवन की नींव को मजबूत करने का उपयुक्त समय मिल जाता है। जब नींव ही मजबूत होगी तो वैवाहिक इमारत तो सौ गुना मजबूत बनेगी क्योंकि किसी भी व्यक्ति विशेष के रहन-सहन और दिनचर्या को समझने में अच्छे खासे समय की आवश्यकता होती है। जो सगाई के बाद मिल जाता है इससे दो लोगों के बीच ये तय हो जाता है कि वे आपस में एक- दूसरे के साथ विवाह कर एक-दूसरे को पूर्ण कर पूरक बन पाएं या नहीं। अतः पुराने समय जितना वर्षों का अन्तराल तो नहीं क्योंकि आज तो संपर्क के बहुत साधन उपलब्ध हैं लेकिन सगाई व शादी के बीच कम से कम 4 -6 महीने का अंतराल होना चाहिए और इस बीच जो नव दंपत्ति बनने वाले हैं उन्हें पर्याप्त अवसर मिल जाता है कि वे आत्मनिर्भर होकर विवाह जैसे पवित्र बंधन की वास्तविकता समझें और सही निर्णय लेकर दाम्पत्य जीवन सुखद बनाएं।

■ **इंजी शालिनी चितलांगिया,**
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

आज मैं ऊपर आसमां नीचे...

खम्मा घणी सा हुकुम नारी कदैई भारी कदैई हारी आज ईण विषय पर चर्चा करा... नारी भले ही कोई पद पर आसीन हुवे पर हमेशा परिवार ने प्राथमिकता देवे । आज आधुनिकता री दौड़ में महिला किती भी सशक्त या आधुनिक समझे पर कदैई कदैई उण रै जीवन रा निर्णय पुरुष ले लेवे जिने नारी समाज और नियति मान ने स्वीकार कर भी कर लेवे। आज समाज रो नजरियों लुगाइयाँ रे सम्मान, अधिकार व योग्यता रे संदर्भ में विस्तृत हुयो है। आज पुरुष समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण बात उठण लागी जिन्हें कारण आज महिला देश रे प्रत्येक क्षेत्र में आपरी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। व्यापार, पुलिस, दूरसंचार, कला, लेखन, राजनीति या अन्य कोई वर्ग क्यों नहीं हो। आज वा आकाश रो सीनो चीयर रही है, धरती माथे प्रभुत्व बणा रही है।

स्त्री समाज री वा इकाई है जिने बिना हर अंग अधुरो है । प्रकृति ग्रंथ, वेद, पुराण, साहित्य, ईश्वरीय भक्ति, देवत्व, लीलाएं सब श्रृंगार आधा अधूरा है। उन्हें उन हिस्से रो आसमान देवणों पड़ेला जठे वां असंख्य तारों रे बीच खुद रे व्यक्तित्व री कई रूपों री छटा बिखेरने और खुद री कला संस्कृति व शिक्षा में आगे बढ़ती हुई समाज रे विस्तृत धरातल पर स्वयं ने सिद्ध कर सके। छोरियां आज छोरों सूं कम कोनी हुकम।

आज नारी ने उच्च शिक्षा देवणी जरूरी है क्योंकि आधुनिक समाज मे शिक्षा ही एकमात्र साधन है जिने द्वारा कोई भी व्यक्ति विकास रे सुअवसरों रो लाभ उठाने सफलता प्राप्त कर खुद ने आत्मनिर्भर बणा सकें। विवाह रे पेली पिता पर आश्रित रेवण वाली लड़की शादी रे बाद पति पर आश्रित हूँ जावे। उने वो सब सुविधा नहीं मिले जो पिता रे अठे मिले जण जीवन अंधकारमय बण जावें... जीवन रो वो मोड़ जठे यदि महिला खुद शिक्षित हुवे तो वह आपरी योग्यतानुसार किन्ही भी क्षेत्र में नोकरी करने आत्मनिर्भर बण सकें। बेटी ने दहेज नहीं हुक्म योग्यता दो, आत्मनिर्भर हुवण नी।

हुक्म, नारी रे जीवन सूं जुड़ियोडा दो तटबंध... जिनमें नारी कदैई संतुष्ट कदैई अधीर हूँ जावे क्योकि भगवान भी सामाजिक परम्पराओं री जिम्मेदारी नारी रे कंधों पर डाली है... ऐड़े में जब तक किन्ही भी कार्य मे पुरूष रो साथ पूर्ण सम्मान नहीं मिले तब तक जीतण - हारण रे प्रपंच सूं घिरयोड़ी नारी चर्चा रो विषय हुवती रही है और हुवती रेवेला

एक फिल्मी गाणो है हुक्म 'आज मैं ऊपर आसमां नीचे, आज मैं आगे ज़माना है पीछे' ऊपर लिखियोड़ी बात पर खरी उतरें... अबे उन दबावनी भूल मत करणी भी भुल है ।आप दांया हाथ हो तो वा बांयो हाथ है, आप रथ रो एक चक्को हो तो वे दूजी है। रथ दो पहियों माथे चाल सके। ओ जदे इज सम्भव है जदे ऊण ने प्यार, दुला, सम्मान मिले ला। सहभगिता मिले ला । पुरुष दोई हाथों में लड्डू नहीं रख सके। अबे रिश्तों इण हाथ दे उण हाथ ले ...वालो है । वे घर स्वर्ग है जठे उने स्नेह, सम्मान, सहयोग मिले नहीं तो नरक तय समझो हुक्म।

स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- दोस्त हमउम्र ना भी हो तो कोई बात नहीं,
  हमखयाल ज़रूर होना चाहिए।
- ज़िंदा रहना है तो हालात से डरना कैसा,
  जंग लाज़िम हो तो लश्कर नहीं देखे जाते!
- ये ना समझना कि खुशियों के ही तलबगार हैं हम
  तुम अगर अश्क भी बेचो तो, उसके भी खरीददार हैं हम
- वक्त गुजारने के लिये दोस्त नही रखे जाते साहब।
  दोस्ती निभाने के लिये वक्त रखा जाता है।
- तुम्हारी याद मैं आंखो का रतजगा है
  कोई ख्वाब नया आये तो कैसे आए।
- ना ढूंढ मेरा किरदार दुनियाँ की भीड़ में
  वफादार तो हमेशा तन्हां ही मिलते है
- वो जो उतरा है नज़रों से इस बार...
  हमने उसकी नज़रें भी उतारी थी कभी !

काटून कौतुक

खुश रहें - खुश रखें

भौंरे से सीखें कैसे जिया जाए जीवन

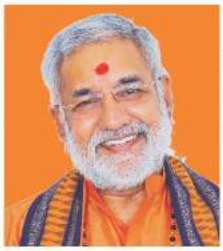

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

देश हो, समाज हो या फिर परिवार की ही बात क्यों न हो, असली त्याग तब होता है, जब आप ये जान लेते हैं कि हमारा कुछ भी नहीं है। मनुष्य जब इस भाव से जुड़ता है, तब त्याग घटता है। लोग संसार छोड़ने की बात करते हैं, लेकिन गहराई में देखा जाए तो संसार हमारा है ही कहां, जिसे हम छोड़ेंगे? यदि इसे समझ लेंगे तो संसार में रहने का मजा ही बदल जाएगा।

गौतम बुद्ध ने एक बड़ी सुंदर बात कही है- जिस प्रकार भंवरा फूल और उसकी गंध को नुकसान पहुंचाए बिना उसका रस ले लेता है वैसे ही हमारे मुनिगण गांव में भिक्षाटन करें। बात बहुत बढ़िया है। वास्तव में जैसे भंवरा बिना कोई नुकसान किए रस लेकर चल देता है, वैसे ही हम जिंदगी को बिना कोई हानि पहुंचाए जीवन को जी लें। यह अहिंसा का उदाहरण है।

हम रस तो ले सकते हैं पर किसी को नुकसान पहुंचाने के अधिकार नहीं हैं। अहिंसा का ऐसा भाव जीवन में आते ही अशांति चली जाएगी। बुद्ध समझा रहे हैं, जीवन हमें जो भी रस दे, उसको ले लिया जाए और धन्यवाद दे दिया जाए। कहीं ऐसे भँवरे न बन जाएँ जो रस चूसने में इतने मशगूल हो जाते हैं कि उड़ना ही भूल जाते हैं और शाम को जब कमल के फूल की पंखुडियाँ बंद हो जाती हैं, तो उसी में कैद हो जाते हैं। बस दुनिया में यही हमारी जिंदगी का ऊसूल हो जाए। यह दुनिया हमारे लिए कारागृह नहीं बन जाए। रस लें और आभार दें, बिना किसी को कोई नुकसान पहुंचाए मुक्त हो जाएँ। मामला राष्ट्र का हो, समाज का या परिवार का, हम भँवरे की तरह फूल को बिना नुकसान पहुंचाए इनसे मिलने वाले आनंद की रसानुभूमि कर सकते हैं।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

होली स्पेशल कांजी बड़ा

साम्रगी : 300 ग्राम मूंग दाल, आधा कप गेंहू का आटा, 1 टेबलस्पून बारीक कटा अदरक, चार बारीक कटी हरी मिर्ची, 1/4 टी स्पुन हिंग, नमक स्वाद अनुसार, एक टी स्पून साबुत धनिया, 1 टी स्पून सौफ, तलने के लिए तेल।

विधी : दाल को 2 घंटे के लिए भिगो दें, फिर पानी निथार ले. इसमें अदरक, हरी मिर्ची डालकर मिक्सी में पिस ले. फिर नमक, मिर्ची, सौंफ, साबुत धनिया और आटा डाल कर अच्छे से फैंट ले। 1 टेबल स्पून गुनगुना तेल डालकर मिला लें।

कढ़ाई में तेल गर्म करें एक चकले पर छोटा गिला कपड़ा फैला लें. और एक कटोरी में पानी लें. एक बड़े नींबू जितनी पीसी दाल कपड़े पर डालें और उंगली पर पानी लगा कर धीरे से फैलाए. फिर धीरे से उठाकर तेल में छोड़ दे और सुनहरा भूरा होने तक तल लें। इसी तरह सभी बड़े बना ले।

कांजी की सामग्री : 500 मिलीलीटर पानी , एक टे स्पून काला नमक पाउडर, 1 टेबल स्पून राई की दाल, 1 टी स्पून तेल, मिक्सर जार में तेल और राई की दाल और 2 टे स्पून पानी डालकर अच्छे से मिक्स कर ले हल्का सा सफेद झाग आवे जब तक फिर बड़े बर्तन में बचा हुआ पानी और यह राई का मिश्रण डालकर सारी सामग्री मिला लें। फिर इसके अंदर तले हुए मूंग के बड़े थोड़े से गुनगुने पानी में से निकाल कर, ये राई के पानी में डाल दे । अगले दिन सर्व करें।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। पैतृक संपत्ति के बंटवारे में हिस्सा प्राप्त प्राप्त होगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। धार्मिक यात्रा शुभ कार्य में खर्च होगा। मन में भय बना रहेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। आय के स्त्रोत में वृद्धि होगी। नौकरी में पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नवीन आय के स्त्रोत प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभकारी रहेगा। कृषि क्षेत्र में कार्य करने वालों के लिए श्रेष्ठ आय के योग बनते हैं।

वृषभ

यह माह आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। इस माह में विरोधी परास्त होंगे। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित होगा, किंतु मन में भय जरूर बना रहेगा। याददाश्त कमजोर रहेगी। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। पुराने मित्रों से भेंट होगी। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग रहेंगे। पाचन तंत्र पेट गैस से तकलीफ रहेगी। झूठे आरोप का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक यात्रा शुभ कार्य मांगलिक कार्य में भाग लेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। माता पिता एवं बड़ों का स्नेह प्राप्त होगा। कृषि एवं विद्यार्थियों के लिए यह माह विशेष लाभकारी रहेगा।

मिथुन

यह माह आपको आर्थिक दृष्टि से विशेष लाभकारी रहेगा। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। चुनौती भरे कार्यों को हाथ में लेंगे और पूर्ण करेंगे। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। मामा परिवार से वैचारिक मतअंतर रहेंगे। गणेश जी की आराधना से विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। पाचन तंत्र पेट गैस की तकलीफ का सामना करना पड़ेगा। आय के नए स्त्रोत के लिए घर से बाहर जाना पड़ेगा। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। अपने प्रयासों से सफलता मिलेगी। खर्च की अधिकता रहेगी। न्यायालय के प्रकरणों में सफलता मिलेगी। शुभ समाचार मिलेगा। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य के अवसर प्राप्त होंगे।

कर्क

यह माह आपको स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल परिणाम देने वाला होगा। पुराने रोगों से मुक्ति मिलेगी। परिवार की स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। भाई एवं परिवारजनों का स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। वाहन सुख में वृद्धि। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। पाचन तंत्र पेट गैस से कष्ट का सामना करना पड़ेगा। विवाह संबंध तय होगा। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। नौकरी के नवीन अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही पद एवं पदोन्नति के भी योग प्रबल रहेंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। संतान सुख प्राप्त होगा। सुखद समाचार मिलेंगे।

सिंह

इस माह में आपको पुराने रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। वाहन सुख की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पाचन तंत्र व पेट गैस की तकलीफ का सामना करना पड़ेगा। मानसिक तनाव रहेगा। सुस्वाद नमकीन व्यंजन का आनंद उठाएंगे। प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। विवाह संबंध होने के योग प्रबल रहेंगे। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। दूर देश की यात्रा के योग प्रबल रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफलता के योग रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे। शुभ समाचार मिलेंगे।

कन्या

यह माह आपको मिलाजुला परिणाम देने वाला होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। विरोधी परास्त होंगे। साहस में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मीठा भोजन का आनंद लेंगे। मानसिक तनाव बना रहेगा। विवाह संबंध में अनुकूलता मिलेगी। प्रेम प्रसंग बढ़ेंगे। पाचन तंत्र से संबंधित कष्ट रहेगा। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। विरोधी नवीन व्यूह रचना करेंगे किंतु सफल नहीं हो पाएंगे।

तुला

यह माह आपके लिए कार्यों में सफलता तथा धन लाभ प्रदान करने वाला होगा। परिजनों से भेंट होगी। व्यवसाय में वृद्धि होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह समय अनुकूल है। मान-सम्मान यश बढ़ेगा। प्रतिभा का लाभ मिलेगा। स्थान परिवर्तन के योग प्रबल रहेंगे। अचानक खर्च की स्थिति भी निर्मित होगी। परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। संतान के कार्यों पर खर्च करना पड़ेगा। धन संपत्ति के मामलों में तनाव बढ़ेगा। यात्रा करने में असुविधा होगी तथा लेनदेन में सतर्कता एवं सावधानी बरतना जरूरी है। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक

यह माह कार्य में सफलता एवं मान सम्मान बढ़ाएगा। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति होगी। मित्र सहायक होंगे। परिवार में मांगलिक-शुभ कार्य होंगे। विरोधी परास्त होंगे। पारिवारिक संबंध बने रहेंगे। तनाव कम होगा, रुके कार्य पूर्ण होंगे। यात्रा में सावधानी रखना आवश्यक रहेगा। सकारात्मक विचारधारा बनाए रखें। अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। आय की तुलना में व्यय अधिक रहेगा। मांगलिक धार्मिक कार्य, विवाह कार्य एवं संबंध होने के योग प्रबल रहेंगे। शुभ कार्य में भाग लेंगे।

धनु

यह माह आपके लिए सुखद परिणाम प्रदान करने वाला होगा। पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। आत्मविश्वास बढ़ेगा, आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। स्थाई संपत्ति में वृद्धि होगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में निपटारा होगा। तेजी मंदी के व्यवसाय में लाभ होने के योग प्रबल रहेंगे। रोजगार के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रखना आवश्यक रहेगा। आमोद-प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे। शुभ कार्य होंगे धार्मिक यात्रा मांगलिक कार्य विवाह संबंधी प्रसंगों में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

मकर

यह माह आपको परिश्रम के उपरांत फल प्रदान करने वाला होगा। तनाव बढ़ेगा। विरोधी नित नई योजना बनाएंगे परंतु वे सफल नहीं हो पाएंगे। आर्थिक उन्नति होगी। लंबी यात्रा के योग प्रबल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। कार्य व्यवसाय में आ रही समस्या का निराकरण होगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि के योग रहेंगे। ऋण के माध्यम से संपत्ति का निर्माण होगा। परिवारजनों एवं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य में सफलता मिलेगी मन प्रसन्न रहेगा।

कुम्भ

यह आपके लिए मिश्रित फलदायी रहेगा। पारिवारिक खर्च बढ़ेगा। विद्यार्थी वर्ग को कठिन परिश्रम के उपरांत सफलता मिल पाएगी। माता पिता का आशीर्वाद प्राप्त होगा। सोचे कार्य में सफलता मिलेगी। जीवन साथी का सुख प्राप्त होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करना होगा। किसी पर विश्वास करना हानिकारक रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखना नितांत आवश्यक रहेगा। यात्रा आपके लिए सुखद रहेगी मनोकामना पूर्ण होगी। यश मान-सम्मान प्राप्त होगा। परिश्रम के सिद्धांत पर सफलता मिल पाएगी।

मीन

यह माह आपके लिए व्यावसायिक यात्रा प्रदान करने वाला रहेगा। अपनी मेहनत एवं सुख से सफलता अर्जित होगी। क्रोध पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक रहेगा। पारिवारिक स्नेह सहयोग की प्राप्ति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। धार्मिक एवं मांगलिक कार्य में भाग लेंगे। समय विद्यार्थियों के लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा। परिवार में संतान प्राप्ति के योग रहेंगे। शौक मौज मस्ती के प्रोग्राम बनेंगे। शुभ समाचार मिलेंगे। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विवाह संबंध होगा। पुराने मित्रों से भेंट होगी। राजकीय या सामाजिक पुरस्कार प्राप्त होगा।

नए साहित्यकारों का संबल बनेगा

ऋषिमुनि प्रकाशन

आप अच्छे लेखक हैं तो आपको एक अच्छे प्रकाशक की भी आवश्यकता है, जो आपके बजट में आपकी अनमोल कृति का प्रकाशन कर पाठकों तक पहुँचा सके। ऐसे सभी लेखकों के लिए देश का प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह **''ऋषिमुनि प्रकाशन''** समाधान बनकर आया है।

''ऋषिमुनि प्रकाशन'' विगत 30 वर्षों से अपने सुरूचि पूर्ण, सुंदर एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध व प्रसिद्ध है। निरंतर आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए प्रकाशन समूह ने विभिन्न विषयों पर अब तक 100 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर पाठकों के बीच अपनी पेठ बनायी है।

अब समूह ने अपनी नई योजना के तहत अत्यल्प लागत शुल्क लेकर कई सेवाओं के साथ जैसे टाईपिंग, प्रुफ–रीडिंग, डिज़ाइनिंग, ISBN No. आदि के साथ नये लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है।

आप अपनी कविताओं, कथाओं, व्यंग्य, आलेख व धर्म से संबंधित रचनाओं के पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन के प्रति उत्सुक हैं, तो कृपया संपर्क कर अपना मनोरथ सिद्ध करें।

सम्पर्क

90, विद्या नगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)

दूरभाष – 0734-2526561, 2526761 मोबाइल : 094250-91161

E-mail : rishimuniprakashan@gmail.com

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 20 Hospitals: 1 million patients treated

Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccines in Maharashtra. Over 1800 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 March, 2021

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com